College Accredited with
CGPA of 3.46 on Four Point Scale
at 'A' Grade

प्रमा

2015-16

सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद
(संयटक - इलाहाबाद विश्वविद्यालय)

SADANLAL SANWALDAS KHANNA GIRLS' DEGREE COLLEGE, ALLAHABAD
(Constituent College of University of Allahabad)

महाविद्यालय-आधार

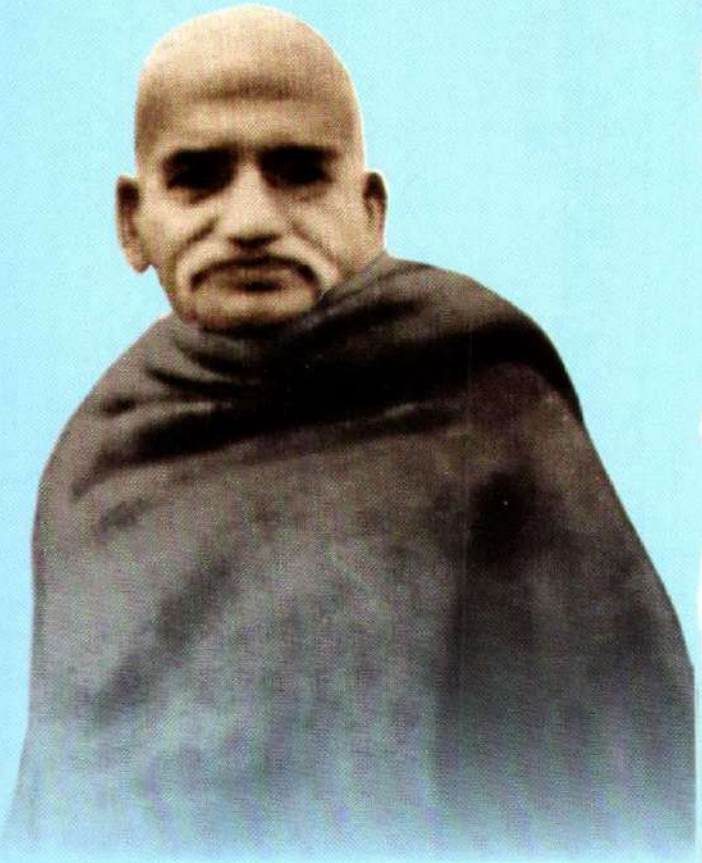

यशः काय सदनलाल खन्ना जी
संस्थापक - सारस्वत खत्री पाठशाला, इलाहाबाद

स्मृति शेष प्रो. दामोदर दास खन्ना
(**पूर्व अध्यक्ष** एस के पी सोसायटी एवं
एस एस खन्ना महिला महाविद्यालय)

श्री राजीव खन्ना
सचिव
सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी
एवं
अध्यक्ष एस एस खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज

श्रीमती सरल टण्डन
मैनेजिंग ट्रस्टी
सार-ला एजूकेशन ट्रस्ट, मुम्बई

श्री विनय मेहरोत्रा
ट्रस्टी
सार-ला एजूकेशन ट्रस्ट, मुम्बई

डॉ. शिप्रा सान्याल
प्राचार्या

संरक्षिका
डॉ. शिप्रा सन्याल
प्राचार्या

सम्पादक
डॉ. आशा उपाध्याय

सम्पादक मण्डल
डॉ. ज्योति कपूर
डॉ. मंजरी शुक्ला
डॉ. अर्चना ज्योति
डॉ. रुचि गुप्ता
डॉ. शालिनी रस्तोगी
डॉ. रुचि मालवीय
डॉ. तनुश्री रॉय
डॉ. आरिफा बेगम

छात्रा प्रतिनिधि
शिवानी त्रिपाठी
कृति द्विवेदी
नूर सबा
सृष्टि खरे
सैयदा फौजिया इकबाल
नीलू मिश्रा

सम्पादक मण्डल

सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद
(संघटक महाविद्यालय - इलाहाबाद विश्वविद्यालय)
179 डी, अतरसुइया, इलाहाबाद 211 003, उत्तर प्रदेश
फोन नं. : 0532-2659124, 2451692, 2451791
E-mail : khanna_girls_dc@yahoo.co.in

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संस्थान
NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL
An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Quality Profile

Name of the Institution : Sadanlal Sanwaldas Khanna Girls' Degree College
Place : Attarsuiya, Allahabad, Uttar Pradesh

Criteria	*Weightage* (W_i)	*Criterion-wise Weighted Grade Point* ($Cr\,WGP_i$)	*Criterion-wise Grade Point Averages* ($Cr\,WGP_i / W_i$)
I. *Curricular Aspects*	100	350	3.50
II. *Teaching-Learning and Evaluation*	350	1300	3.71
III. *Research, Consultancy and Extension*	150	390	2.60
IV. *Infrastructure and Learning Resources*	100	400	4.00
V. *Student Support and Progression*	100	400	4.00
VI. *Governance, Leadership & Management*	100	290	2.90
VII. *Innovations and Best Practices*	100	330	3.30
Total	$\sum_{i=1}^{7} w_i = 1000$	$\sum_{i=1}^{7} (Cr\,WGP_i) = 3460$	

$$\textit{Institutional CGPA} = \frac{\sum_{i=1}^{7} (Cr\,WGP_i)}{\sum_{i=1}^{7} W_i} = \frac{3460}{1000} = \boxed{3.46}$$

Grade = **A** *Descriptor* = **VERY GOOD**

Date : March 03, 2015

Director

- This certification is valid for a period of *Five* years with effect from March 03, 2015
- An institutional CGPA on four point scale in the range of 3.01 - 4.00 denotes A grade (Very Good), 2.01 - 3.00 denotes B grade (Good), 1.51 - 2.00 denotes C grade (Satisfactory)
- Scores rounded off to the nearest integer

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का स्वायत्त संस्थान

NATIONAL ASSESSMENT AND ACCREDITATION COUNCIL

An Autonomous Institution of the University Grants Commission

Certificate of Accreditation

The Executive Committee of the
National Assessment and Accreditation Council
on the recommendation of the duly appointed
Peer Team is pleased to declare the
Sadanlal Sanwaldas Khanna Girls' Degree College
Attarsuiya, Allahabad, affiliated to University of Allahabad, Uttar Pradesh as
Accredited
with CGPA of 3.46 on four point scale
at A grade
valid up to March 02, 2020

Date : March 03, 2015

Director

इलाहाबाद विश्वविद्यालय
सीनेट हाउस, इलाहाबाद (उ.प्र.)- 211 002, भारत
University of Allahabad
Senate House, Allahabad (U.P.)- 211 002, India

प्रोफ़ेसर रतन लाल हंगलू
कुलपति

Professor Rattan Lal Hangloo
Vice-Chancellor

February 16, 2016

Message

I am delighted to learn that the S.S. Khanna Girls' Degree College, Allahabad is planning to bring out the next edition of its magazine 'PRAMA'. The college magazine essentially provides an appropriate forum to the faculty and students to give expression to their talent and expertise in their area of specialization and also to educate and initiate debates on several significant issues that we are facing in contemporary times. It also provides an opportunity to the college to showcase its achievements in the past year. The magazine also inspires all concerned to educate themselves and initiate debates on significant issues that we are facing in contemporary times. Over the years the college has done very systematic progress in promoting quality in higher education. I am sure that under your leadership the College magazine will fullfil these objectives in full measure. Let me congratulate the faculty and students of the S.S. Khanna Girls' Degree College for bringing out the aforementioned annual magazine. I wish the College all success in its future academic endeavours.

(Rattan Lal Hangloo)

शिविर कार्यालय/ Camp Office:
दूरभाष / Tele. : (0532) 2545020
फैक्स / Fax : (0532) 2545733

मुख्य कार्यालय / Main Office:
दूरभाष / Tele. : (0532) 2461089, 2461157
टेली. / फैक्स Tele. / Fax : (0532) 2461157
ई-मेल / e-mail : vcoffice@allduniv.ac.in

न्यायमूर्ति अरुण टण्डन

दिनांकः 15–02–2016

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि एस0एस0 खन्ना महिला महाविद्यालय प्रगति के पथ पर एक कदम और आगे बढते हुए अपनी वार्षिक पत्रिका "***प्रमा***" का प्रकाशन इस वर्ष भी करने जा रहा है। यह इस बात का प्रमाण है कि महाविद्यालय शिक्षा में सुधार एवं छात्राओं के चहुंमुखी विकास के साथ–साथ अपने कर्तव्यों एवं दायित्वों के प्रति निरंतर सजग एवं कियाशील है। यह पत्रिका विद्यालय की सम्पूर्ण किया कलापों का आईना है। महाविद्यालय की शैक्षणिक एवं सामाजिक प्रगति तथा अध्यापिकाओं एवं छात्राओं को नयी दिशा एवं गति प्रदान करने में इस पत्रिका का महत्त्वपूर्ण योगदान रहेगा ये मै विश्वास के साथ कह सकता हूँ।

महाविद्यालय अपने उद्देश्यों को निरंतर प्राप्त करता रहे ऐसी ईश्वर से कामना करता हूँ।

(अरुण टण्डन)

Sar-La Education Trust

Admin. Office : 316, Neelam, 108, R. G. Thadani Marg, Worli, Mumbai 400 018, India.
Tel : +91 22 6660 7631 Email : info@sar-la.in

MESSAGE

It is a privilege to write for the annual magazine 'Prama' which I have been doing since the last few years. The magazine offers a better view of an extra ordinary year past, the transformations ahead and the support of past students and friends that makes the organization excel in all what they do.

The College has in the past several years produced young leaders who have created a great impact in Society, as they say you educate a girl, you educate a family. During this time of rapid global change, we must consider how we educate our students, while seeking partnerships with individuals and other like-minded educational Institutions external to the college campus.

I would like to thank the management, staff and all those who have offered their time, energy and any support to make a better environment for the students to pursue their dreams through learning.

I also take this opportunity to congratulate the College for being re-accredited by NAAC-'A' Grade (CGPA 3.46) which reflects the hard work put in by the management, teaching and non-teaching staff to achieve this grade.

Lastly, my good wishes to all the students of the College for a bright future.

(Chetan Mehrotra)
Executive Trustee

March 15, 2016

Regd. Office : N-5, Panchsheel Park, New Delhi 110 017.

राजीव खन्ना
अध्यक्ष, अधिशासी निकाय
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय
इलाहाबाद।

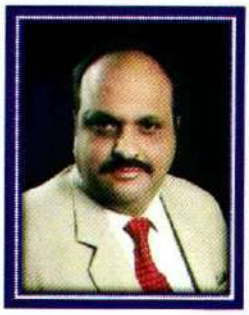

संदेश

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि महाविद्यालय पत्रिका 'प्रमा' का आगामी अंक प्रकाशित होने जा रहा है। कामना करता हूँ कि महाविद्यालय में अध्ययन–अध्यापन के वातावरण से छात्राओं का बौद्धिक विकास हो। छात्राएँ निराग्रही अध्येता, संवेदनशील नागरिक और स्वावलम्बन के पथ पर निरन्तर अग्रसर हों। महाविद्यालय पत्रिका छात्राओं के वैचारिक विमर्श को तेज प्रदान करने वाला फ़लक बने इसी मंगल कामना के साथ पत्रिका प्रकाशन हेतु बधाई एवं शुभकामना।

Rajeev Khanna

(राजीव खन्ना)

दिलीप मेहरोत्रा
प्रबन्धक / कोषाध्यक्ष
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय
इलाहाबाद।

संदेश

मेरे लिये यह हार्दिक प्रसन्नता का विषय है कि महाविद्यालय पत्रिका 'प्रमा' का प्रकाशन होने जा रहा है।

ईश्वर से मेरी यह प्रार्थना है कि वह हम सभी को दायित्व निर्वहन की शक्ति प्रदान करे, जिससे हम छात्राओं को सृजनात्मक दिशा प्रदान कर सकें और वे समाज एवं राष्ट्र निर्माण में अपनी अहम् भूमिका निभाने में सक्षम बनें।

महाविद्यालय चतुर्मुखी उपलब्धियों के उच्चतम शिखर पर आसीन हो इसी आशा के साथ महाविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को मेरी शुभकामनाएं।

दिलीप मेहरोत्रा

(दिलीप मेहरोत्रा)

सम्पादकीय

अवधारणाओं को तोड़ती स्त्री शक्ति

अरस्तू ने कहा था कि स्त्री कुछ अपूर्णताओं के चलते स्त्री होती है। वस्तुतः यह अवधारणा स्त्री को लेकर बने तमाम नकारात्मक मिथकों का मूल है। स्त्री के बारे में विभिन्न समाजों में ऐसी अस्वस्थ अवधारणाओं का एक लम्बा सिलसिला चला है, वह समाज या देश कोई भी हो। अतीत के क्लासिकल लिटरेचर या क्लासिक थिंकिंग में स्त्री को प्रायः हर जगह अपूर्ण मानव माना गया है। नारी के वास्तविक सत्य और शक्ति को उपेक्षित करने या दबाने का एक लम्बा कालखंड रहा है। यह कालावशेष अब भी जारी है। किसी को कमजोर करने का सबसे आसान तरीका होता है उसकी शक्ति और क्षमता को लगातार अस्वीकार और अमान्य करते जाना, लेकिन जैसे किसी भी अन्याय में उसका प्रतिकार भी छिपा होता है उसी तरह स्त्री की नकारात्मक बनायी गयी छवि में ही उसके सक्रिय, शक्तिशाली और सकारात्मक होने के बीज भी छिपे थे। आज़ादी की लड़ाई में भारतीय महिलाओं ने जिस तरह बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया उसने उनकी क्षमता, राष्ट्रीय समर्पण और शक्ति का बोध भी कराया। यह बहुत विस्तार का विषय है।

इक्कीसवीं सदी नारी सशक्तीकरण की सदी है जिसकी शुरुआत पिछली सदी के मध्य में ही हो चुकी थी। शिक्षा ने न केवल स्त्री चेतना को नये आयाम दिये वरन् सामाजिक अवधारणाओं को भी प्रभावित किया। ज्ञान–विज्ञान, तकनीक और भारतीय सेना की तीनों शाखाओं में स्त्री के बढ़ते प्रभावी हस्तक्षेप ने इस दुनिया की परिभाषा ही बदल दी है। भारत की नारी इस पूरे परिदृश्य में अपनी एक अलग स्पष्ट पहचान बना रही है। भारतीय स्त्रियों ने शिक्षा को अपना आधार बना कर आधुनिक भारत की राजनीति को प्रभावित किया। सत्ता, विरोध और व्यवस्था में तीव्र सक्रियता दिखायी। ज्ञान–विज्ञान और तकनीक के क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। पुलिस प्रशासन और तीनों सेनाओं में आज की भारतीय महिला अपनी पूरी ऊर्जा के साथ उपस्थित है। ज्ञान के क्षेत्र में इतने रिकार्ड तोड़ रही है कि कहीं–कहीं और कभी–कभी वह पुरुष की ईर्ष्या का भी शिकार हो जाती है। लेकिन सत्य यह है कि स्त्री यह समझती है कि किसी देश या समाज के विकास में स्त्री–पुरूष का आपसी सहयोग ही सबसे बड़ा कारक होता है। भारती की नारी उस 'फेमिनिज्म' की शिकार नहीं है जिसमें पुरुष का अपमान या उसका अस्वीकार है। कहते हैं कि आधुनिकता को यदि संस्कार के रेशमी वस्त्र मिल जायें तो वह और सुन्दर एवं उपयोगी हो जाती है। यह भारतीय स्त्री की विशेषता है कि आधुनिक रहन–सहन, सोच और शिक्षा के बावजूद अपने सकारात्मक संस्कारों से भी बंधी हुई है। इसीलिए भारतीय परिवार और समाज आज भी दुनिया के लिये आश्चर्य बने हैं।

स्त्री आधुनिकता और परम्परा का एक अद्भुत मिश्रण होती है, खासकर भारतीय स्त्री ''नीर भरी दुख की बदली'' आज विज्ञान के क्षेत्र में सक्रिय होकर सूखाग्रस्त इलाकों में कृत्रिम बारिश कराने में सक्षम है। वह अंतरिक्ष की अनन्त गहराइयों और अंधेरों को पार कर चुकी है। वह सुरक्षा और सेना बलों में शामिल होकर समाज और देश की रक्षा के लिये भी सन्नद्ध है। यह सब इसीलिए संभव हुआ क्योंकि शिक्षा ने स्त्री के अन्तरजगत और बाह्य जगत को बदल दिया। स्त्री शिक्षा केवल सामाजिक श्रृंगार नहीं यह समय की जरूरत और स्त्री का अधिकार हैं। यहां यह बताना दिलचस्प होगा कि भारत की इलेक्ट्रॉनिक मैन्यूफैक्चरिंग दुनिया में स्त्रियों का योगदान लगभग 65 प्रतिशत है। इसी तरह चिकित्सा सेवा में योगदान 70 प्रतिशत से भी अधिक है।

तो, अब यह तय मान लिया जाना चाहिए कि स्त्री विकास के इस रथ को रोकने की कुचेष्टा घातक हो सकती है। आज की शिक्षित और श्रमशील स्त्री अपनी करुणा, संवेदना को समेटे हुए इस देश, समाज और संस्कृति की धुरी बन चुकी है। 'प्रमा' का यह अंक इस नयी स्त्री शक्ति को नमन करते हुए आपके समक्ष प्रस्तुत है–

डॉ. आशा उपाध्याय

प्रतिभाएँ

स्वाति द्विवेदी
वाणिज्य संकाय–सर्वोच्च स्थान
प्रेसीडेन्ट स्वर्ण पदक
[चारों संकाय क मध्य]

नम्रता मिश्रा
सर्वोच्च स्थान
कला संकाय

तनु रिया
सर्वोच्च स्थान
विज्ञान संकाय

शिखा पाण्डेय
सर्वोच्च स्थान
बी०एड० संकाय

ऐश्वर्या पाण्डेय
विज्ञान संकाय
प्रेसीडेन्ट स्वर्ण पदक
[अकादमिक श्रेष्ठता हेतु]

काशिफा इशरत
प्रेसीडेन्ट
प्रॉक्टोरियल बोर्ड

मेघना सिंह
वाइस प्रेसीडेन्ट
प्रॉक्टोरियल बोर्ड

यशी जायसवाल
वाइस प्रेसीडेन्ट
प्रॉक्टोरियल बोर्ड

नितिशा कपूर
सेक्रेटरी
प्रॉक्टोरियल बोर्ड

सविता मिश्रा
ज्वाइंट सेक्रेटरी
प्रॉक्टोरियल बोर्ड

प्राचार्या की कलम से . . .

एक आशा में देखें कोई स्वप्न
जिसमें हो जाए पूरे चित्रों के रंग
अलग-अलग कलम उठाता हर
प्रयत्न करें निरन्तर ।।

हर वर्ष की भाँति महाविद्यालय की पत्रिका 'प्रमा' के प्रकाशन का अवसर है। विद्या की देवी को हम छात्राओं की सृजनशीलता के माध्यम से 'प्रमा' के रूप में साक्षात् देखते हैं।

'प्रमा' सृजनशील बुद्धि का परिचायक है। यह महाविद्यालय की छात्राओं, शिक्षिकाओं तथा शिक्षकों के सतत् सोच एवं उनकी क्रियाशीलता परिणाम है। यह मंच अभिव्यक्ति का है जहाँ महाविद्यालय से जुड़े प्रत्येक जन को अपने विचार रखने का अवसर प्राप्त होता है। इस प्रयास में हमारे प्रबंधतंत्र की भी सक्रिय एवं असीम भूमिका रहती है।

मैं 'प्रमा' के इस अंक के लिए महाविद्यालय के समस्त सहयोगियों को हृदय से धन्यवाद देती हूँ तथा छात्राओं को शुभाशीष . . . .

(डॉ. शिप्रा सान्याल)

प्रतिभाएँ - NCC

कैडेट ज्योति पाण्डेय
बी.ए. तृतीय वर्ष

राष्ट्रीय स्तर
[कबड्डी] 2014-15

कैडेट दीपशिखा सिंह
बी.ए. तृतीय वर्ष

राष्ट्रीय स्तर
[वॉलीबाल] 2015-16

कैडेट दुर्गेश नंदनी
बी.ए. तृतीय वर्ष

राष्ट्रीय स्तर
1. थल सैनिक कैंप] 2014-15
2.National Integration Camp II
राष्ट्रीय स्तर 2015-16

कैडेट नेहा
बी.कॉम. द्वितीय वर्ष

National Integration
Camp II
राष्ट्रीय स्तर 2015-16

कैडेट रचना कौशल
बी.ए. द्वितीय वर्ष

आइ जी सी
प्रदेश स्तर 2015-16

कैडेट सृष्टि कुशवाहा
बी.ए. प्रथम वर्ष

National Integration
Camp II
राष्ट्रीय स्तर 2015-16

कैडेट ज्योति कुमारी
बी.ए. द्वितीय वर्ष

एडवंचर माउण्टेनरिंग
दार्जलिंग 2015-16

SPORTS - 2015-16

कु. ज्योति पाण्डेय
बी.ए. तृतीय वर्ष
सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन [वॉलीबाल]
प्रदेश स्तर पर बेस्ट इन स्पोर्ट्स

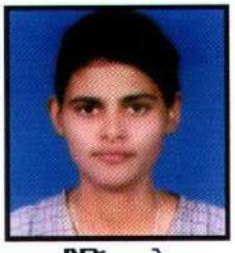

कीर्ति पाण्डेय
बी.एस-सी. तृतीय वर्ष
बेस्ट इन गेम्स

कु. दीपशिखा सिंह
बी.ए. तृतीय वर्ष
राष्ट्रीय स्तर [वॉलीबाल]
बेस्ट इन स्पोर्ट्स

आलेख

साहित्य और साहित्यकार

शिवानी त्रिपाठी, बी.ए. प्रथम वर्ष

मैं यह तो नहीं कह सकती कि मैंने बहुत अधिक अध्ययन किया है; किन्तु हिन्दी साहित्यकारों और कवियों की रचनाओं का कुछ-कुछ आस्वादन अवश्य किया है। जब मैं पक्षियों की चहचहाने की मधुर ध्वनि सुनती हूँ, तो मन में कुछ विचार आने लगते हैं। भले ही पक्षी अपने भावों को अभिव्यक्त करके हमें समझाना चाहें, किन्तु उसे समझना अत्यन्त दुष्कर होता है। मानव इतना भाग्यशाली है कि ईश्वर ने उसे अपनी बात कहने के लिए भाषा का वरदान दिया है। साहित्य, कला, दर्शन आदि सभी का आधार भाषा ही है। साहित्य वह है जिसमें प्राणी के हित की भावना निहित है। साहित्य मानस के सामाजिक सम्बन्धों को दृढ़ बनाता है। साहित्य द्वारा ही साहित्यकार अपने विचारों और भावों को समाज में प्रसारित करता है। इस कारण उसमें सामाजिक जीवन स्वयं मुखरित हो उठता है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा है- "जो साहित्य मनुष्य को उसकी समस्त आशा-आकांक्षाओं के साथ, उसकी सभी सफलताओं और दुर्बलताओं के साथ हमारे सामने प्रत्यक्ष लाकर खड़ा देता है, वही महान साहित्य है।"

सरिता सिन्धु की व्याकुल बाँहों में लीन हो जाने के लिए दौड़ती जाती है। रुपहली चाँदनी और सुनहरी रश्मियाँ नदी की अल्हड़ लहरों पर थिरक-थिरककर उसे मोहित करना चाहती है। प्रकृति के इस अनोखे रूपजाल को देखकर हम स्वयं को उसमें बंद कर देना चाहते हैं, और फिर हमारे हृदय से सुकोमल, मधुर एवं आनन्द दायक गीतों का उद्‌गम होता है, हिमानी से श्वेत हमारे अन्तर्मन में गूँजते शब्द, विचार और भाव हमारी लेखनी को स्वर प्रदान करने लगते हैं। परिणामस्वरूप विभिन्न विधाओं पर आधारित साहित्य का सृजन होता चला जाता है।

कवि और साहित्यकार अपने युग-वृक्ष को अपने आँसुओं से सींचते हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियाँ उसके मधुर फल का आस्वादन कर सकें। मुंशी प्रेमचन्द ने साहित्य को "जीवन की आलोचना" कहा है। उनके विचार से साहित्य चाहे निबन्ध के रूप में हो, कहानी के रूप में हो या काव्य के रूप में हो, साहित्य को हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए।

जिस प्रकार बेतार के तार का संग्राहक यन्त्र आकाशमण्डल में विचरती हुई विद्युत तरंगों को पकड़कर उनको शब्दों में परिवर्तित कर देता है, ठीक उसी प्रकार कवि या साहित्यकार अपने समय के परिवेश में व्याप्त विचारों को पकड़कर मुखरित कर देता है। साहित्यकार समाज के भावों को व्यक्त कर सजीव और प्रभावशाली बना देता है। वह समाज का उन्नायक और शुभचिन्तक होता है। उसके द्वारा हम समाज के हृदय तक पहुँच जाते हैं। साहित्य का सृजन जन-जीवन के धरातल पर ही होता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में "प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिम्ब है।"

साहित्य हमारे अमूर्त अस्पष्ट भावों को मूर्त रूप देता है और उनका परिष्कार करता है। वह हमारे विचारों की गुप्त शक्ति को सक्रिय करता है। साथ ही साहित्य हमारे सामाजिक संगठन और जातीय जीवन के विकास में योगदान देता है। हमारे साहित्यकार महान् विचारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सूर, तुलसी, एवं कालिदास पर हमें गर्व है; क्योंकि उनका साहित्य हमें एक संस्कृति और एक जातीयता के सूत्र में बाँधता है। जैसा हमारा साहित्य होता है, वैसी ही हमारी मनोवृत्तियां बन जाती हैं। हम उन्हीं के अनुकूल आचरण करने लगते हैं। साहित्य हमारे समाज का प्रतिबिम्ब है। प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में भारतीय ग्रामों की आंसुओं भरी व्यथा-कथा को मार्मिक रूप में व्यक्त किया। उन्होंने किसानों पर जमींदारों द्वारा किए जाने वाले अत्याचारों का चित्रण कर जमींदारी-प्रथा के उन्मूलन का जोरदार समर्थन किया। स्वतंत्रता के पश्चात् जमींदार उन्मूलन और भूमि-सुधार की दृष्टि से जो प्रयत्न किए गए हैं; वे प्रेमचन्द आदि साहित्यकारों की रचनाओं में निहित प्रेरणाओं के ही परिणाम हैं। बिहारी ने तो मात्र एक दोहे के माध्यम से ही नवोढ़ा रानी के प्रेमपाश में बँधे हुए तथा अपनी प्रजा के प्रति उदासीन राजा जयसिंह को राजकार्य की ओर प्रेरित कर दिया था-

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सौं बँध्यो, आगे कौन हवाला।।

निश्चय ही साहित्य असम्भव को भी सम्भव बना देता है। उसमें अनेक अस्त्र-शस्त्रों से अधिक शक्ति है। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कहा है कि "साहित्य में जो शक्ति छिपी रहती है वह तोप, तलवार और बम के गोलों में भी नहीं पायी जाती।" यूरोप में हानिकारक धार्मिक रूढ़ियों का उद्घाटन साहित्य ने ही किया। जातीय स्वतन्त्रता के बीज उसी ने बोए हैं, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के भावों को भी उसी ने पाला-पोसा और बढ़ाया है। पतित देशों का उत्थान पुनः उसी ने किया है।

साहित्य हमारे आन्तरिक भावों को जीवित रखकर हमारे व्यक्तित्व को स्थिर रखता है। साहित्य की विजय शाश्वत होती है और शस्त्रों की विजय क्षणिक। अंग्रेज तलवारों द्वारा भारत को दासता की शृंखला में इतनी दृढ़तापूर्वक नहीं बाँध सके, जितना अपने साहित्य के प्रचार और हमारे साहित्य को ध्वंस करके सफल हो सके। यह उसी अंग्रेजी का प्रभाव है कि हमारे सौन्दर्य सम्बन्धी विचार, हमारी कला का आदर्श, हमारा शिष्टाचार आदि सभी यूरोप के अनुरूप हो गए हैं।

भारतीय दर्शन सुखान्तवादी है। इस दर्शनानुसार मृत्यु और जीवन अनन्त हैं तथा इस जन्म में बिछुड़े प्राणी दूसरे जन्म में अवश्य मिलते हैं। भारतीय दर्शन में ईश्वर का स्वरूप आनन्दमय ही दर्शाया गया है। यहाँ के नाटक भी सुखान्त ही रहे हैं। इन्हीं कारणों से भारतीय साहित्य आदर्शवादी भावों से परिपूर्ण और सुखान्तवादी दृष्टिकोण पर आधारित रहा है। इसी प्रकार भौगोलिक दृष्टि से भारत की शस्यश्यामला भूमि, कल-कल का स्वर उत्पन्न करती हुई नदियां, हिमशिखरों की धवल शैलमालाएँ, वसन्त और वर्षा के मनोहारी दृश्य आदि ने हिन्दी साहित्य की नवीन दिशा दिखाई है। कहा भी गया है कि, "संसार में सुन्दरता सरलता से मिल जाती है, किन्तु गुण ग्रहण करना कठिन है।"

लघु कथा

कलाकार

तबस्सुम फात्मा, बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

एक बार की बात है। एक प्रसिद्ध कलाकार था जिसकी कलाकृतियाँ देश भर में प्रसिद्ध थीं। एक दिन उसके मन में एक विचित्र ख्याल आया उसने सोचा कि सभी मेरी कला की प्रशंसा करते हैं तथा मेरी बनायी हुई कलाकृतियों को पसंद करते हैं। मुझे आज तक ऐसा व्यक्ति नहीं मिला जो मेरी कलाकृतियों में से कुछ कमियों को निकाल सके यह सोचकर कलाकार बहुत चिन्तित था और उसने यह बात अपने मित्र को बतायी उसके मित्र ने उसे इतना चिन्तित देख सुझाव दिया कि तुम एक पेन्टिंग बना कर चौराहे पर टाँग दो और उसके नीचे लिख दो "कृपया इस पेन्टिंग में कमियाँ बतायें" और जिस व्यक्ति को तुम्हारी कमियाँ मिलेंगी तो वह जरूर बताएगा। कलाकार ने ऐसा ही किया। पेन्टिंग बनाकर चौराहे पर टाँग दिया और दूसरे दिन जा कर देखा तो वह बड़ी निराशा से मित्र के पास पहुँचा। मित्र ने पूछा तो कलाकार ने बताया कि उसकी पेन्टिंग में बहुत सी कमियाँ निकलीं और उसने निराश होकर कहा कि मेरी इतनी कमी को आज तक मुझसे किसी ने नहीं कहा। कलाकार को उदास और निराश देख मित्र ने उसे एक और सुझाव दिया कि तुम आज फिर वही पेन्टिंग बनाओ और अब उसके नीचे लिखो कि "कृपया पेन्टिंग में जो कमी हो उसे पूरी करें" और उसे चौराहे पर ले ज़ा कर टाँग दो कलाकार ने फिर वैसा ही किया और दूसरे दिन जाकर देखा तो यकीन मानिए उसमें किसी ने एक भी कमी नहीं निकाली यह देखकर कलाकार खुशी-खुशी मित्र के पास गया और सारी घटना सुनाई।

मित्र ने कहा कि- यदि कोई व्यक्ति अपने संसार में अपनी कड़ी मेहनत से सफलता की ऊँचाई छूता है, तो उसकी गलतियाँ निकालने लाखों लोग खड़े हो जाते हैं। वह उसे डराते हैं और नीचे गिराने का प्रयास करते हैं परन्तु इन्हीं लोगों से इतने प्रयास करने को कह दो जितना तुमने किया और अपने आप को एक सफल व सहज कलाकार बनाया तो व्यक्ति ऐसा करने से कतराते हैं कि कहीं उनकी गलतियाँ ना पकड़ ली जाएँ। मित्र ने कहा कि मैं आशा करता हूँ कि तुम्हें तुम्हारे विचित्र ख्याल का उत्तर मिल गया होगा। मित्र वाक्य केवल कहना सरल होता है परन्तु उसे सहज और सुचारु रूप से पूर्ण करना कठिन!

कहानी

मनमानी की सजा

नगमा बेगम, बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

एक लड़की हमेशा दुःखी रहती थी क्योंकि उसकी माँ उसे बिना पूछे कहीं आने-जाने तक नहीं देती थी। उसकी छोटी-सी गलती पर उसको समझातीं और दुबारा ऐसा कुछ भी न करने की सलाह देती थीं। पर उसकी माँ साए की तरह हमेशा उसके आगे-पीछे लगी रहती। उसे एक पल के लिए भी अपने नजर से ओझल नहीं होने देती। वह कहीं भी जाती तो उसकी माँ उसके साथ जाती थी। यह सब बातें उसे अन्दर ही अन्दर मानसिक रूप से परेशान करने लगीं। वह सोचती क्या कभी मैं अपनी जिंदगी अपनी मर्जी से नहीं जी सकती ? और एक दिन ऐसा कठोर कदम उठाया कि बिना बताए घर छोड़कर चल दी।

फिर क्या ? अपनी मर्जी से आजादी के साथ घूमना-फिरना, आना-जाना सब उसको बहुत अच्छा लगने लगा पर कहीं न कहीं वह अपने बीते हुए कल को याद करती। वह जब आधी रात को लौटकर घर वापस आती उसे माँ के हाथों का खाना और माँ की याद जरूर आती। लेकिन पलटकर अपने माँ-बाप के हालात पर भी गौर नहीं किया कि हमारे घर छोड़ने के बाद वह कैसे किस हालात में जी रहे होंगें ? समाज में उन्हें लोग किस नजर से देख रहे होंगे ? और न ही वापस लौटने की कोशिश की। उसने अपने अकेलेपन को ही अपनी ज़िन्दग़ी बना ली। उसने दुनिया की सारी खुशियां हासिल कर ली पर दिल को सुकून देने वाली माँ की ममता, बाप का लाड़-प्यार और भाई-बहन के साथ मौज-मस्ती सब खो दिया। एक दिन वह यह सब पाकर बहुत खुश थी और दूसरी तरफ उसके परिवार वाले रो-रो कर परेशान हो रहे थे और जगह-जगह पर अपनी बेटी की तलाश में गुहार लगा रहे थे। कई महीने बीत गये पर उसका कुछ भी पता नही चल पाया। उसकी माँ हर दिन डायरी के पन्नों को उसकी याद में भरती रही। कुछ लिखती ताकि जब वह लौटकर घर आये तो इसे पढ़कर जान सके की उसकी माँ उसकी प्रेरणा स्रोत थीं।

कई महीने बीतने के बाद उसकी जिदंगी में एक ऐसा तूफान आया जिसने उसकी जिदंगी बर्बाद कर दी। वह अन्दर से टूट चुकी थी। स्वयं को संभालना बहुत मुश्किल था। उसके पास एक ही रास्ता था कि वह अपने परिवार के पास लौट जाये या फिर आत्महत्या कर ले। उसे अपनी गलती का एहसास होने लगा और लौट आने को सोचती। वह सोचती कि माँ से माफी मांगेगी और अपनी गलती का प्रायश्चित करेगी। फिर एक दिन उसने घर लौटने का फैसला कर ही लिया जब वह घर लौटकर वापस आई तो उसके घर पर कोई नही था उसे लगा कि घर वाले कहीं घूमने गए होंगे। काफी देर तक सोचती रही, अपने माँ-बाप से गले लगकर रोना चाहती थी, अपनी सारी व्यथा, दुःख बताना चाहती थी। जब बहुत समय बीत गया तब उसने पड़ोस की आंटी से पूछा कि मेरे घर वाले कहाँ गये है ? और कब तक लौटकर आयेंगे। आंटी ने जो जवाब दिया उसके बाद उसका संभलना और भी मुश्किल हो गया। "बेटा तुम्हारे माँ-बाप तुम्हे तलाश करते-करते सड़क हादसे में मर चुके वो अब कभी वापस नहीं आएँगे।" सब कुछ खत्म हो गया, वह अपने परिवार से जुड़ी यादों को समेटने घर के अन्दर गयी उसने अपनी माँ की लिखी डायरी पढ़ी जिसके अन्दर हर एक पन्ने पर लिखा था "बेटा मैं तुम्हारे साथ साया बनकर इसलिए रहती थी कि ताकि तुझे दुनिया की बुरी नजरों से मैं बचा सकूँ।"

वह हताश होकर बैठ गयी क्योंकि अब उसके पास कुछ भी नहीं बचा न दुनिया की धूप और न साया देने वाली माँ।

सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

शिक्षा कैसी लड़कियाँ तैयार करे

रीता चौहान, एसोशिएट प्रोफेसर-शिक्षाशास्त्र

महिलाओं के प्रति जारी उपेक्षाओं, व्यवहार और रवैये के खिलाफ बड़े जोर-शोर से चीख-चिल्लाहट हो रही है। राजनीतिक मंचों से राजनेता बड़ी-बड़ी, ऊँची-ऊँची बातें करते हैं, कठोर कानून बनाने की दुहाई देते हैं, नई-नई योजनाएँ लागू करते हैं। बहुत से संगठन आन्दोलनों पर आन्दोलन किए जा रहे हैं। मीडिया वैचारिक प्रचार-प्रसार के प्रयास हो रहे हैं। धर्मगुरुओं से लेकर आम आदमी तक, सरकारी से लेकर गैर सरकारी संस्थाएं, पुरुष और महिलाएं सभी, महिलाओं के मानवाधिकारों और संविधान से मिले समान अधिकारों की सुरक्षा में चिन्तित दिखाई पड़ते हैं। असली चिन्ता तो यह है कि शिक्षा, संविधान, न्याय, अधिकार, समानता आदि शब्द महिला सशक्तीकरण की दिशा में कुछ सफल प्रयास तो अवश्य हैं, परन्तु इन प्रयासों को गति पकड़ने में बाधक समाज की ओछी, दकियानूसी सांचों में कब तक महिलाओं को अटाए रखेगा यह समाज ? संस्कृति, परम्परा और मर्यादा के नाम पर महिलाओं को भावनात्मक शोषण से कैसे बचाया जाएगा ? समाज निर्माण के नए-नए साधन समाज की संकीर्ण मानसिकता के बीच महिलाओं की कितनी सहायता कर रहे हैं ?

शिक्षा आधुनिकीकरण, नवाचार से सम्पृक्त आधुनिक अवसरों ने निश्चय ही महिलाओं को उन क्षेत्रों में प्रवेश करा दिया, जो पहले केवल कल्पना मात्र थे।

28 नवम्बर, 2015 को अहमदनगर (महाराष्ट्र) के शनि शिगणापुर मन्दिर के चबूतरे पर चढ़ कर शनि देव को तेल चढ़ाया, फिर क्या था, आग धधक उठी मन्दिर ट्रस्ट की अध्यक्ष एक गृहस्थ महिला, अनिता शेटी हैं। इस मन्दिर में महिलाओं को पूजा करने की अनुमति नहीं है। टीवी के विभिन्न चैनलों पर बहस आरम्भ हो गयी कि शनि देव की पूजा में भेदभाव क्यों ? बहस में राजनीतिक दलों के नेताओं, महिला संगठन की प्रतिनिधि, धर्मगुरु, अन्य अनेक क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लेना शुरू किया, महिलाओं के साथ भेदभाव के विरोध में उठे स्वर को दबाने के लिए बहुत लोग चीख-चीख कर इस व्यवस्था को सही ठहराते दिखे। समाज के प्रबुद्ध वर्ग के लोग मान रहे हैं कि महिलाओं को शनि देव की पूजा नहीं करनी चाहिए। कुछ लोगों ने तो मासिक धर्म के कारण महिलाओं को अशुद्ध ठहरा दिया, तो कुछ लोगों ने इक्कीसवीं सदी में भी ऐसी सोच प्रस्तुत की कि महिलाएं कमजोर होती हैं, शनि की दृष्टि से उन्हें मानसिक व शारीरिक हानि हो सकती है। बड़ा हास्यास्पद लगता है कि हमारे ऋषि-मुनियों ने कहा है कि जहाँ नारियों का सम्मान होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है, फिर महिलाओं को अशुद्ध और कमतर कैसे माना जा सकता है। यहाँ तक कि भगवान शिव को पार्वती के बिना 'शव' माना जाता है, पार्वती ही उनकी शक्ति हैं। हमारे वेदों, पुराणों, रामायण और गीता आदि में कहीं भी महिलाओं को पूजा-पाठ से रोका नहीं गया।

हद तो देखिए जब शनि शिगणापुर मन्दिर में एक महिला ने तेल चढ़ाया तो मन्दिर को अपवित्र मान लिया गया, मन्दिर को पवित्र करने के लिए शनि देव का दुग्धाभिषेक किया गया। क्या यह महिलाओं के लिए अपमानजनक नहीं है ? भूमाता रणरागिनी ब्रिगेड ने मन्दिर प्रशासन के खिलाफ आवाज़ उठाई, इस ब्रिगेड की 850 महिलाओं ने 26 जनवरी को शनि शिगणापुर मन्दिर में प्रवेश करने और पूजा-अर्चना करने के लिए मार्च किया तो पुलिस ने पूरे मन्दिर को घेर लिया। पुलिस और मन्दिर प्रशासन ने महिलाओं को मन्दिर में घुसने से रोक दिया। भूमाता बिग्रेड ने ऐलान किया कि वे हेलीकॉप्टर के द्वारा मन्दिर में प्रवेश करके 400 साल पुरानी परम्परा को ध्वस्त करेंगी।

देखिए, इक्कीसवीं शताब्दी में भी औरत को अपने अस्तित्व के लिए कितना जूझना पड़ रहा है। अपने 'होने' को रेखांकित करने के लिए औरत को संघर्ष करना पड़ रहा है। संविधान द्वारा प्रदत्त

समान अधिकार औरतें कैसे पाएं, समान अधिकार की बात करते ही समाज के विभिन्न क्षेत्रों से ऐसा शाब्दिक दमन-चक्र चलता है कि हर वर्ग और उम्र की औरत आहत होती है। प्रस्तुत अध्ययन में यही जानने का प्रयास किया गया है कि शनि शिगणापुर मन्दिर की घटना पर मचे बवाल का उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही लड़कियों पर क्या प्रभाव पड़ता है। उनके मन में क्या पकता है, वे क्या सोचती हैं ? क्या उन्हें यह तो नहीं लगता है कि पुरुष प्रधान समाज को चुनौती देने का कोई फायदा नहीं है ? क्या उनकी शिक्षा उन्हें प्रश्न और आपत्तियां उठाने का साहस दे पाती है ? कहीं वे आत्महीन, स्वत्वहीन और वाणीहीन तो नहीं महसूस करतीं ? क्या हाशिए की दुनिया को तोड़ने से उन्हें डर लगता है ? क्या वे महसूस करती हैं कि सामाजिक वर्चस्व का सबसे प्रचण्ड दबाव महिलाओं पर ही है ? कहीं ऐसा तो नहीं सोचतीं कि मानव मूल्य, मानव मूल्य न होकर पुरुष प्रधान समाज के ही मूल्य हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य यह पता करना है कि शनि शिगणापुर मन्दिर विवाद से लड़कियों को महिला सशक्तीकरण के प्रयास बेमानी तो नहीं लगते।

प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए स्नातक स्तर की शिक्षा ले रही 120 छात्राओं को चयनित किया गया। छात्राओं के चयन के समय उनके व्यक्तित्व के निम्न गुणों को प्रमुखता दी गयी-

1. अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता रखती हों।
2. समाचार पढ़ने, सुनने और उन पर बात करने में रुचि रखती हों।
3. सामाजिक समस्याओं के प्रति संवेदनशील हों।

छात्राओं के विचारों को जानने के लिए एक प्रश्नावली निर्मित की गयी। प्रश्नों की रचना शनि शिगणापुर मन्दिर प्रकरण के संदर्भ में की गई और संदर्भ को स्पष्ट करते हुए छात्राओं को निःसंकोच उत्तर देने के लिए प्रेरित किया गया। प्रश्नावली के द्वारा प्राप्त आंकड़ों की व्याख्या से पूर्व आंकड़ों को प्रस्तुत करना वांछित है। प्रत्येक पद पर छात्राओं को विचार व्यक्त करने के लिए तीन विकल्प दिए गए- हाँ/नहीं/पता नहीं।

	पद	हाँ %	नहीं %	पता नहीं %
1.	समाज कर्तव्यनिष्ठ, समर्पणशील, अस्तित्वहीन, वाणीहीन महिलाओं को ही पसन्द करता है।	66	12	22
2.	ऐसे विवाद शिक्षित महिलाओं का मनोबल तोड़ते हैं।	42	8	50
3.	पूजा-पाठ में लिंग-भेद करने वाले महिला-विरोधी होते हैं।	52	36	12
4.	प्रकृति से मिले गुणों को लड़कियों में विकसित होने के रास्ते में ऐसे विवाद बाधा डालते हैं।	57	20	23
5.	देवी की पूजा करने वाला हमारा समाज केवल दिखावा करता है।	50	40	10
6.	इस तरह के विवाद पुरुष के दबाव, उसके दंभ, उसके अधिकार जताने और शोषण की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं।	67	30	3
7.	इस तरह का विवाद पैदा करने वाले लोग औरत को अपवित्र मानते हैं।	40	30	30
8.	इस तरह के विवादों के कारण शिक्षित होने के बाद भी महिलाओं की राह आसान नहीं होगी।	48	38	12
9.	महिलाएं हमेशा ऐसे समाज की इकाई बनी ही रहेंगी जो सही को सही और गलत को गलत कभी नहीं करेगा।	70	10	20

10.	इस तरह के विवाद लड़कियों के अन्दर सारे जीवन के लिए ग्रान्थियां निर्मित कर देते हैं।	69	19	12
11.	बेस्ट डिबेटर का पुरस्कार पाने वाली लड़कियों की हिम्मत भी इस तरह के विवादों से टूट जाती है कि अपने घर से परम्परा और संस्कृति की सड़ी-गली चादर बाहर फेंक सकें।	89	11	-
12.	इस तरह की घटनाएं लड़कियो में भावुकता पैदा करती हैं, दृढ़ता नहीं।	36	28	36
13.	इस तरह के विवाद से लड़कियों को देवी या लक्ष्मी मानना झूठ लगने लगता है।	78	10	12
14.	ऐसे विवाद महिला-सशक्तीकरण के प्रयासों को दिग्भ्रमित करते हैं।	52	40	8
15.	ये विवाद समानता की बात करने वालों के प्रति विरक्ति के भाव पैदा करते हैं।	59	38	2
16.	इस तरह के विवादों के बाद लगता है कि बराबरी का दर्जा तो बस एक जुमला है।	81	6	13
17.	इस तरह के विवाद के कारण लड़कियों की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को अनदेखा कर दिया जाता है।	63	19	18
18.	इस तरह के विवादों के कारण महिलाओं की स्थिति कभी नहीं सुधरेगी, महिला साक्षरता दर चाहे जितनी बढ़ जाए।	52	40	8
19.	इस तरह के विवाद राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर स्त्री समर्थक नीतियों को समाज के पायदान पर शून्य कर देते हैं।	72	18	10
20.	इन विवादों के कारण महिला संगठन, स्वयंसेवी संस्थाएं भी महिलाओ के पक्ष में माहौल बनाने में असमर्थ हैं।	31	2	17
21.	इस तरह के विवाद मीडिया द्वारा स्त्रियों को नई आवाज देने की कोशिश को क्षीण कर देते हैं।	40	52	8
22.	केवल आभिजात्य वर्ग की लड़कियाँ ही रूढ़ियों से बाहर आ सकती हैं।	36	17	47
23.	इन विवादों के कारण यह बात बेमानी लगती है कि 'आजकल लड़के-लड़की में कोई फर्क नहीं है।'	78	02	10
24.	इस प्रकार के विवाद महिलाओं की अस्मिता की धज्जियाँ उड़ाते हैं।	58	38	4

प्राप्त आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्राएं शनि शिगणापुर मन्दिर विवाद जैसी घटनाओं से विचलित हो जाती हैं। इससे एक बहुत बड़ी समस्या उठ खड़ी होती है- इस तरह से विचलित होकर लड़कियाँ कैसे पढ़ने-लिखने, कला-कौशल, सांस्कृति और बौद्धिक कर्मों में अपने को साबितकर पाएंगी। ध्यान देना होगा लड़कियों की परवरिश और शिक्षा पर। लड़कियों में जबरदस्त पोटैंशियल होता है, परन्तु इस पोटैंशियल को सक्रिय बनाने में शिक्षा को अपनी भूमिका नवाचार के साथ निभाना पड़ेगा। स्त्री ने यदि किसी महान सृजन को अपने नाम नहीं लिया है अभी तक, तो इसका कारण है स्त्री को सुविधाओं का अभाव, अवसरों की कमी। अपनी परिस्थितियों को अपने पक्ष में करने के महिलाओं को टुकड़ा-टुकड़ा जीवन जीने से बचाना पड़ेगा। संवैधानिक धाराओं, कानून की किताबों और वास्तविक जीवन के सामाजिक व्यवहार

में बहुत बड़ा अन्तर है। अब समय आ गया है कि शिक्षा बाल्यावस्था से ही लड़कियों में ऐसी क्षमता जगाए कि वे प्रतिकूल परिस्थितियों से घबराएं या विचलित न हों, बल्कि उठें, जागें और अन्याय के सामने घुटने न टेकें। इसके लिए शिक्षा के औपचारिक, अनौपचारिक और गैर-औपचारिक अभिकरणों को चाहिए कि लड़कियों के व्यक्तित्व का ऐसा विकास करें, कि-

1. वे भी समान मानवीय अधिकारों, आर्थिक, राजनीतिक वर्चस्व में प्रवेश पा सकें।
2. शिक्षित होने के साथ-साथ चेतन और सजग हो सकें।
3. उनमें यह आत्मविश्वास पैदा हो कि वे पशु या जड़ पदार्थ, वस्तु नहीं, अपितु मनुष्य हैं। उन्हें भी जीने का, अपने सपने पालने का पूरा हक है।
4. कर्तव्यों का बोझ अपने कोमल कंधों पर ढोने के साथ-साथ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनें।
5. वे आर्थिक-सामाजिक शक्ति बन सकें।
6. वे शिक्षित होने बाद, साधन सम्पन्न बनने के बाद निष्क्रिय न रहें, आधी दुनिया के समानता के अधिकार के बारे में सोचें और सक्रिय रहें।
7. वे स्त्री जाति के स्वत्व के बारे में सोचने-समझने में सक्षम बनें।
8. वे अपने को हर मुद्दे पर पारम्परिक ढाँचे में ही न रखें, आवश्यकता पड़ने पर हाशियाकृत संसार से बाहर निकलने का प्रयास करें।
9. वे अपने अनुभवों को वाणी दे सकें। न्याय की पृष्ठ भूमि पर अपने अनुभवों को शब्द दे सकें ताकि स्त्री विमर्श को ताकत मिल सके।
10. वे महसूस कर सकें कि उनकी उपस्थिति समाज में एक नई क्रांति को जन्म देती है, समाज के प्रत्येक क्षेत्र में वे अपनी भूमिका निभा रही हैं, मेरिट प्रतियोगिताओं में आने लगी हैं। उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण करने में सक्षम हैं, वे केवल शरीर नहीं हैं सृजनात्मक शक्ति हैं।

इतना कुछ कहने का अभिप्राय यह है कि स्त्री शिक्षा के नाम पर, केवल औपचारिक अभिकरण-विद्यालय अकेले लड़कियों को जागरूक नहीं बना सकता, उन्हें जगा नहीं सकता, अपने शरीर पर और आत्मा पर मानवीय पंजों के घावों को पहचानने में सक्षम नहीं बना सकता। इसके लिये शिक्षा के अन्य अभिकरणों जैसे- परिवार, समाज और राज्य को भी प्रयास करना पड़ेगा।

कविता

सत्ता का लोभ

आसिफा सिद्दीकी, छात्राध्यापिका-बी.एड.

अरे सत्ता के लोभियों, जरा अपनी आँखे खोलो।
देखो देश की दुर्दशा, कुर्सी पर मोह छोड़ो।।
क्या धर्म है तुम्हारा ? एक मात्र बेईमानी।
क्या तुम भूल गये उन शहीदों की कुर्बानी।।
जिसके लिए उन्होंने, सीने पर खायी गोली।
उनको निगलने में, तुमने कोई कसर न छोड़ी।।
क्या यही है तुम्हारा कर्म, क्या यही है तुम्हारा धर्म।
जरा पूछो अपने दिल से सत्ता के लोभियों।।
उठो छोड़ो कुर्सी, संभालो अपना देश।
मिटा दो आंतकवाद को सत्ता के लोभियों।।

कविता

अजन्मी बेटी की गुहार

प्रतिभा केसरवानी, छात्राध्यापिका- बी.एड.

रो कर कहे अजन्मी बेटी-मुझे न मारो माता।
मेर साथ तुम्हारा क्या अब शेष न कोई नाता।
भूल हुई क्या मुझसे जननी ? जो तुम इतना रूठी।
बांध रखी मन में तुमने क्या दुविधा झूठी ??
माँ! मैं अंश तुम्हारी हूँ, जीने दो मुझे न मारो।
मुझे गर्भ में बढ़ने दो माँ! प्यार करो पुचकारो।।
धड़क रहा दिल डर से मेरा, भय से कांप रही हूँ।
अपनी लुटती मिटती जीवन रेखा नाप रही हूँ।।
मुझे वाह दे दो जीवन की, दे दो तनिक सहारा।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा।।
प्यारी माँ! मुझको मत मारो मुझको भी जीने दो।
छाती से चिपटाकर मुझको ममतामृत पीने दो।।
तीन माह बीते हैं मुझको गर्भ तुम्हारे आये।
भूल हुई क्या मुझसे माँ ? कोई तो मुझे बताये।।
नही बनूंगी बोझ तुम्हारा, जग में नाम करूंगी।
देखेगी सारी दुनिया, मैं ऐसा काम करूंगी।।
बेटों को सब दे देना, मैं तुमसे कुछ ना लूंगी।
किरण, कल्पना, प्रतिभा सा भारत को गौरव दूंगी।।
बुझे न मेरा जीवन-दीपक, हंसने दो उजियारा।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा।।
तेरे सारे काम करूंगी, बनकर तेरी दासी।
सह लूंगी सारे दुख, पीड़ा, रहकर भूखी प्यासी।।
मंदिर, मेला मुझे घुमाने कभी न लेकर जाना।
बेटों के संग जाना, मेरे खातिर कुछ न लाना।।
जो देगी तू खा लूंगी मै।, जो देगी पी लूंगी।
खेल, खिलौने, गुड्डा-गुड़िया के बिन मैं जी लूंगी।।
किन्तु गर्भ में मुझे न मारो, सुन लो मेरी विनती।
चाहे मुझे न गिनना, जब होगी बेटों की गिनती।।
अपना जीवन दान मांगते, मैंने हाथ पसारा।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा।।
बेटों को बँटवारा देना, मुझे न देना हिस्सा।
किन्तु पिता मुझको मत मारो, खत्म करो मत किस्सा।।
बेटे तब तक साथ रहेंगे, जब तक हैं वे कुवांरे।
जीवन भर जब चाहो माँ! आना बेटी के द्वारे।
एक साल में एक दिवस को राखी में आऊंगी।
प्यारे पिता! अजन्मी इस बेटी पर दया दिखाओ।
मुझे जन्म से पूर्व न मारो, मुझे न दूर हटाओ।।
डूब रही है मेरी नैया, सूझे नहीं किनारा।
हुआ जमाना आज अजन्मी बेटी का हत्यारा।।

सत्य

स्वर्ग की सीढ़ी

राधा साहू, बी.ए. प्रथम वर्ष

- मारना चाहते हो तो बुरी इच्छाओं को मारो।
- जीतना चाहते हो तो क्रोध और तृष्णाओं को जीतो।
- खाना चाहते हो तो गुस्से को खाओ।
- पीना चाहते हो तो ईश्वर भक्ति का शर्बत पीओ।
- पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहनो।
- देना चाहते हो तो नीची निगाह करके दो, और भूल जाओ।
- लेना चाहते हो तो माता-पिता और गुरु का आशीर्वाद लो।
- आना चाहते हो तो गरीबों की सहायता को आओ।
- बोलना चाहते हो तो सत्य और मीठे वचन बोलो।
- खरीदना चाहते हो तो प्रेम का सामान खरीदो।
- देखना चाहते हो तो अपनी बुराई को देखो।।

'दामोदर श्री' राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान समारे

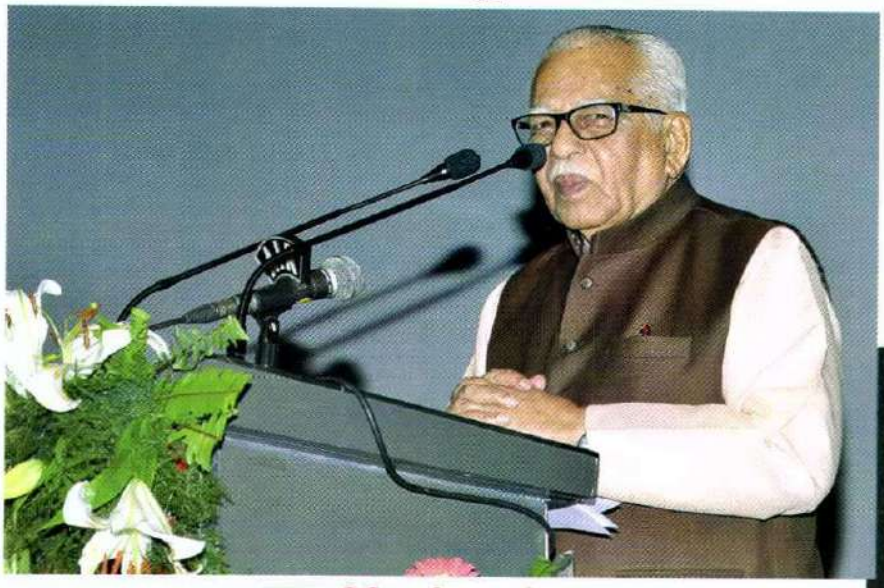

मुख्य अतिथि - श्री रामनाईक
माननीय राज्यपाल, उ.प्र.

विशिष्ट वक्ता -
माननीय
इलाहाबाद

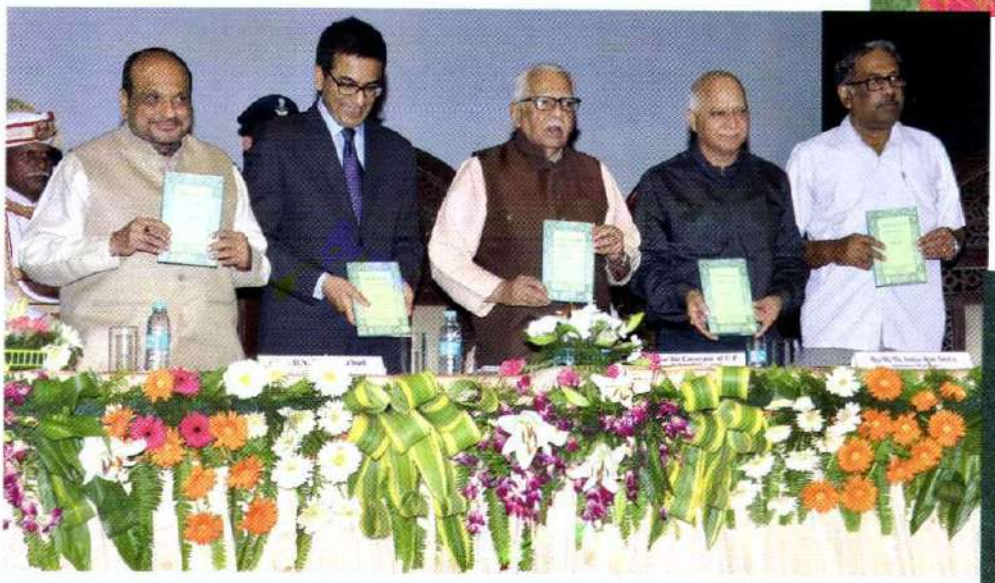

पुस्तक लोकार्पण
"Nurturing Excellence and Compassion"
(पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की स्मृति को समर्पित)

प्रो. मानस मुकुल
दामोद

सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी और सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में संकल्पित यह परम विशिष्ट सम्मान है। सारस्वत खत्री पाठशाला एवं उससे संचालित शिक्षण संस्थाओं (नवीन शिशु वाटिका, टैगोर पब्लिक स्कूल, शिवचरण दास कन्हैया लाल इंटरमीडिएट कॉलेज तथा सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय) के उन्नायक स्मृतिशेष प्रो. दामोदर दास खन्ना की स्मृति को समर्पित है यह सम्मान। इस राष्ट्रीय सम्मान के लिये उच्च शिक्षा स्तर पर 'अखिल भारतीय निबन्ध प्रतियोगिता' के आयोजन का निर्णय सोसायटी द्वारा दो अक्टूबर 2011 से लिया गया है। वर्ष 2015 के 'दामोदर श्री' राष्ट्रीय सम्मान के मुख्य अतिथि थे – उत्तर प्रदेश के माननीय राज्यपाल श्री राम नाईक। 'दामोदर श्री' व्याख्यान माला के अन्तर्गत पंचम व्याख्यान के लिये विशिष्ट अतिथि के रूप में सादर आमंत्रित थे – इलाहाबाद उच्च न्यायालय के माननीय मुख्य न्यायमूर्ति डॉ. डी. वाई. चन्द्रचूड।

'दामोदर श्री' राष्ट्रीय अकादमिक निबन्ध प्रस्तुति सत्र की मुख्य अतिथि थी–पद्म श्री राज बवेजा। इस विशिष्टता सम्मान–2015 के निबन्ध का विषय था – 'मानव होने का अर्थ'। इस प्रतियोगिता में उत्तर प्रदेश के अतिरिक्त कश्मीर, दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, पश्चिम बंगाल, केरल, कर्नाटक, गुजरात, बिहार, आन्ध्र प्रदेश, सिक्किम, तमिलनाडु, झारखंड, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, नगालैंड और छत्तीसगढ़ के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं अन्य शिक्षण–प्रशिक्षण संस्थानों से 273 निबन्ध प्राप्त हुए। इन निबन्धों का मूल्यांकन तीन चरणों में किया गया।

प्रथम एवं द्वितीय चरण के निर्णायक मंडल के सम्मानित सदस्य थे –

न्यायमूर्ति ए.पी. साही (इलाहाबाद उच्च न्यायालय), प्रो. आर.के. नायडू (मनोविज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय), प्रो. आर.सी. त्रिपाठी (पूर्व निदेशक, गोविन्द वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) प्रो. के.के. भूटानी (निदेशक, न्च्ज्म्ब), प्रो. मृदुला त्रिपाठी (संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय), प्रो. प्रतिमा गौड़ (जन्तु विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय), प्रो. स्मिता अग्रवाल (अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय), प्रो. एल.आर. शर्मा (अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय), प्रो. यू.सी. श्रीवास्तव (अवकाश प्राप्त जन्तु विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय) और प्रो. संजोय दत्ता रॉय (अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय)।

इन निर्णायकों द्वारा सभी निबन्धों का आकलन कर दस श्रेष्ठ निबन्धों का चयन किया गया। जो दस प्रतिभागी चुने गये उनके नाम हैं – आलोक कुमार द्विवेदी (इलाहाबाद विश्वविद्यालय), अमिता सिंह (इलाहाबाद विश्वविद्यालय), अनामिका मिश्रा (नैशनल लॉ यूनिवर्सिटी, दिल्ली), अनुभव राजशेखर (नैशनल लॉ इंस्टीट्यूट यूनिवर्सिटी, भोपाल), अपूर्वा लूनिया (महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज, जयपुर, राजस्थान), अरिंजय एस. व्यास (गुजरात नैशनल लॉ

यूनिवर्सिटी), भुवन्या विजय (नैशनल लॉ स्कूल ऑफ इंडिया यूनिवर्सिटी, बंगलुरु), धृति मल्होत्रा (माउंट कार्मल कॉलेज, बंगलुरु), जैसला वालिया (सुशान्त स्कूल ऑफ आर्ट एंड कल्चर, अंसल यूनिवर्सिटी, गुड़गाँव), संतोष पाल (गोविन्द वल्लभ पंत सामाजिक विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद) इन सभी प्रतिभागियों को दो अक्टूबर 2015 को महाविद्यालय परिसर में निबन्ध प्रस्तुति के लिए आमंत्रित किया गया। इन्हें निबन्ध प्रस्तुति के साथ–साथ निर्णायकों के प्रश्नों और जिज्ञासाओं का भी समाधान करना था। तीसरे और अन्तिम चरण के निर्णायक मंडल में दो चरणों के निर्णायकों के अतिरिक्त अन्य तीन सम्मानित निर्णायकों को भी रखा गया। उनके नाम हैं – प्रो. सुशीला सिंह (अवकाश प्राप्त प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), डॉ. एन.एस. धर्माधिकारी (शिक्षाशास्त्री, पुणे)।

अंतिम चरण में पुरस्कार के लिए जिन पाँच प्रतिभागियों का चयन किया गया उनेक नाम हैं –

1. भुवन्या विजय–'दामोदर श्री' सम्मान एवं ₹ एक लाख का नगद पुरस्कार।

2. अनामिका मिश्रा–प्रथम उपजेता – ₹ 51 हजार का नगद पुरस्कार।

3. अरिंजय एस. व्यास–द्वितीय उपजेता – ₹ 31 हजार का नगद पुरस्कार।

4. संतोष पाल–सर्वश्रेष्ठ पुरुष प्रतिभागी – ₹ 31 हजार का नगद पुरस्कार।

5. जैसला वालिया–स्नातक वर्गीय सर्वश्रेष्ठ प्रतिभागी – ₹ 21 हजार का विशेष नगद पुरस्कार।

इनके अतिरिक्त नेहा मेहरोत्रा को ₹ 11000/– का विशेष पुरस्कार भी दिया गया।

इन अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की 'Nurturing Excellence and Compassion' स्मृति को समर्पित पुस्तक का लोकार्पण भी किया गया।

पुनर्सन्धानम पुराछत्रा परिषद - पदाधिकारी

डॉ. शशी बाला चौधरी
अध्यक्ष

प्रतिभा पाण्डेय
उपाध्यक्ष

डॉ0 जाह्नवी जोशी
उपाध्यक्ष

डॉ0 ज्योति बैजल
सचिव

डॉ0 रुचि मालवीय
संयुक्त सचिव

शबीहा रिजवी
संयुक्त सचिव

आभा श्रीवास्तव
सांस्कृति सचिव

मंजुलेश विश्वकर्मा
सांस्कृतिक सचिव

सुमत्या सफराज
सांस्कृतिक सचिव

आलेख

शक्ति की उपासना का ऐतिहासिक अवलोकन

-डॉ. शिवशंकर श्रीवास्तव, अतिथि प्रवक्ता - मध्यकालीन इतिहास

शक्ति की उपासना का प्रारम्भ 'ऋग्वेद' में मिलता है। एक सूक्त में शक्ति को ऐसी शरीरधारिणी क्षमता के रूप में प्रस्तुत किया गया है : "जो पृथ्वी को धारण करने वाली है और स्वर्ग में निवास करती है, वही सर्वोपरि शक्ति है, जिसके द्वार समस्त सृष्टि का संचालन होता है और वह भक्तों की पूज्य माता है।" (छान्दोग्य उपनिषद् 3 : 12; वृहदारण्यक उपनिषद्, 5 : 14)

यही शक्ति आगे चलकर "केन उपनिषद्" में वर्णित "हेमवती उषा" के रूप में आ गयी है। "महाभारत" में यह कृष्ण की भगिनी के रूप में है और इस प्रकार वैष्णव धर्म के साथ इसका सम्बन्ध बन गया। शक्ति सम्प्रदाय का शैवमत के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है और इसे वैदिक नाम नाना से लेकर अंबा, दुर्गा, गौरी, पार्वती, महिषासुर, मर्दिनी, काली, चामुंडा, जैसे नाम दिये गये है। "मार्कंडेय पुराण" के अनुसार, जिस देवी ने असुरों का (जैसे-महिसासुर, चण्ड-मुण्ड, शुम्भ-निशुम्भ इत्यादि) का वध किया था, वह शिव, विष्णु, और ब्रह्मा के तेज से मिलकर बनी थी और अन्य सब देवताओं ने उसके अंग-प्रत्यंगों के निर्माण के लिए अपना-अपना अंश दिया था। देवी के विभिन्न नाम, उन-उन देवताओं की शक्तियां या भावनाओं की प्रतीक है, जिन पर उनके नाम रखे गये है। ये सब नाम एक ही देवी के हैं, जिसे आमतौर पर "शक्ति" कहा जाता है जिसकी दैनिक पूजा का विधान है और शरद् ऋतु में जिसका उत्सव मनाया जाता है। शीघ्र ही देवी के रूप में इसकी पूजा होने लगी। शनैः शनै जगन्माता के रूप में देवी की पूजा ने वैदिक कर्म काण्ड का स्थान ले लिया। हिन्दू धर्म के इस रूप से सम्बन्ध रखने वाले साहित्य को तन्त्र ग्रन्थ के नाम से जाना जाता है। यह स्त्री जाति के प्रति आदर-भाव के लिए प्रसिद्ध है और स्त्रियों को दैवीय माता की प्रतिकृति करके माना गया है। शास्त्रों में कहा गया है -

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।

छठीं शताब्दी से शक्ति उपासना स्पष्ट और निश्चित रूप में दिखायी देने लगती है और नवीं शताब्दी से तो इस उपासना का व्यापक प्रभाव दिखायी देता है। जनसाधारण के धार्मिक विश्वासों का पौराणिक कथाओं पर भी प्रभाव पड़ा और बदले में इन्होंने जनसाधारण के धार्मिक विश्वासों और विचारों को प्रभावित किया, परिणामस्वरूप वैष्णव, शैव एवं शाक्त तंत्र ग्रन्थों की बड़े पैमाने पर रचना हुई।

छठीं शताब्दी में मातृ-देवियों के मंदिरों को विस्तारवादी नये वैदिक धर्म में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ। मध्य प्रदेश और उड़ीसा में चौंसठ योगिनियों कें मंदिर हैं, जिनमें मातृ देवी चौंसठ रूपों में दिखायी गयी हैं। इन चौंसठ योगिनियों के मंदिरों में तीन भेड़ाघाट, खजुराहो और उड़ीसा के सम्भलपुर में है। चौथा मंदिर कलहंदी और पांचवा ललितपुर में है। देश के विभिन्न भागों में मातृदेवी को अनेक ऐसे नामों में भी जाना जाता है, जिनसे उनके आदिवासी उत्पत्ति का आभास होता है जैसे शबरी, पर्णेश्वरी, विन्ध्यवासिनी, शाकम्भरी भ्रामरी। कादम्बरी से पता चलता है कि "विन्ध्यवासिनी देवी" की पूजा शबर, भिल्ल आदि आदिवासी लोग करते थे। बंगाल में शबर जाति के आदिवासी लोग शबरोत्सव पर पत्तों पर आच्छादित पर्णेश्वरी की पूजा करते थे। इसी प्रकार रौद्री-भैरवी भी आदिवासियों की ही मातृदेवियाँ है। ये सभी आदिवासी देवियाँ दुर्गा के विभिन्न रूप मान ली गयीं। अनेक जनजातियों और आदिवासियों का भारतीय हिन्दू समाज में समाविष्ट होने के कारण भी शक्ति की उपासना का व्यापक प्रचलन हुआ।

पाँचवी तथा छठीं शताब्दी से आसाम, बंगाल, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, पूर्वी आन्ध्र प्रदेश में ब्राह्मणों को संस्कृति-प्रचार के लिए बसाया गया। उन्हें भूमिदान देकर बसने के लिए उत्साहित किया

गया। दक्षिण और तमिल प्रदेश में 9वीं शताब्दी तक ब्राह्मणों का प्रवेश हुआ। ब्राह्मण बस्तियों में और अधिक वृद्धि हुई। ये बस्तियाँ "अग्रहार" कहलाती थी और पाँचरात्र ग्रन्थों के अनुसार इन गाँवों में मंदिर भी होते थे। विप्रों का काम करवाने के लिए इन गाँवों में मजदूर भी बसाये जाते थे। जब आदिवासी क्षेत्रों में ब्राह्मण बसे तो वे उन लोगों के सम्पर्क में आये जो बहुत पिछड़े हुए थे। मध्य प्रदेश, उड़ीसा, बंगाल में ये पिछड़े हुए आदिवासी "शबर और पुलिन्द" कहे जाते थे। वर्णव्यवस्था के अनुसार सामाजिक संगठन में उन्हें शूद्र और अन्त्यज का ही दर्जा दिया जा सकता था। किन्तु आर्थिक दृष्टि से ब्राह्मण वर्ग इन पिछड़े वर्गों की सेवा पर आश्रित थे। जब ये पिछड़े वर्ग ब्राह्मण संस्कृति के सम्पर्क में आये तो उनकी धार्मिक और आत्मिक संतुष्टि हेतु ऐसी धार्मिक व्यवस्था आवश्यक थी जिसमें उनके परम्परागत धार्मिक विश्वासों और क्रियाओं को स्थान मिल सके। अतः कुछ देवी-देवताओं और धार्मिक कृत्यों को स्थान देना पड़ा। मातृदेवी की उपासना इन आदिवासी जातियों में प्रचलित थी और शक्ति की उपासना का दार्शनिक आधार ऋग्वेद, उपनिषद, पुराणों इत्यादि में पहले से ही उपस्थित था। अतः मातृदेवी की पूजा की व्यवस्था का भी प्रभाव पड़ा, फलतः ब्राह्मण तथा बौद्ध दोनों सम्प्रदायों को इसे अपनी धार्मिक उपासना में सम्मिलित करना पड़ा।

"शक्ति" सब पदार्थों की जननी है। उसके पाँच कार्य बताये गये हैं : आभास, रक्ति, विमर्शन, बीजा व स्थान, विलापनता। "शक्ति" के दो रूप है - सौम्य और उग्र। सौम्य रूप में शिव की शक्ति के रूप मे उमा, गौरी, पार्वती, दुर्गा इत्यादि है, जबकि उग्ररूप में काली, चामुण्डा, भैरवी, रक्तदंतिका इत्यादि। दुर्गा तथा उसके ये स्थानीय रूप मातृदेवी के स्वतंत्र अस्तित्त्व के परिचायक है जबकि अधिकांश देवी के उग्र रूप आदिवासियों द्वारा दिये गये मातृदेवी के स्थानीय नाम हैं। देवी की आराधना तीन प्रकार से की जाती है - समाधि (ध्यान) द्वारा, रहस्यपूर्ण चक्र की पूजा (चक्रपूजा) द्वारा जिसे ब्रह्मायोग अर्थात उपासना भी कहा जाता है और सत्य सिद्धान्त के अध्ययन द्वारा।

चक्रपूजा एक शक्ति अनुष्ठान होता है, जिसमें नारी अंग की एक चक्र के रूप में, जो आठ अन्य चक्रों के साथ जुड़ा रहता है, की पूजा की जाती है। इस उपासना को लेकर, वृहद साहित्य लिखा गया है, जिसे शाक्तागम अथवा तंत्र ग्रंथ कहा जाता है। इन तंत्रों के अनुसार, शक्ति के बिना शिव निर्जीव शव हैं, क्योंकि ज्ञान शक्ति के बिना हिल नहीं सकता। जो मनुष्य सत् (वास्तविकता) के ज्ञान पक्ष की, जिसे सामान्य भाषा में नर तत्व कहा जाता है, उपासना करता है, वह शैव है; और जो मनुष्य शक्ति पक्ष की अर्थात् नारी पक्ष की उपासना करता है, वह शक्ति कहलाता है। जब शिव की पूजा की जाती है तब उसकी पत्नी की भी पूजा हो जाती है, क्योंकि वे दोनों अभिन्न अंग है।

उनकी उपासना निश्चय ही मन को शान्तचित्त और दृढ़ निश्चयी बना देती है। हम नारी को शक्ति का प्रतीक मानकर उन्हें समाज में यथोचित स्थान दें, उनका सम्मान करें, उन्हें सशक्त बनाने में सहयोग करें। इसके बदले में नारी को भी सशक्त होने पर अहं का परित्याग कर (शक्ति के सौम्य रूप में) अपने को समाज में प्रस्तुत करना चाहिए। इससे शक्ति की उपासना और उसकी कृपा दोनों ही चरितार्थ हो सकती है। समाज और राष्ट्र, प्रगतिशील बन सकता है।

स्वभाव

सोनी तिवारी, छात्राध्यापिका-बी.एड.

दुनिया में दो तरह की प्रकृति के लोग रहते हैं एक चलनी जैसे, दूसरे सूप जैसे।चलनी प्रकृति वाले लोग निरर्थक बातें अपने अंचल में रखते हैं और सार-सार को बाहर निकाल देते हैं, पर सूप स्वभाव के लोग इस संसार के मिले-जुले ढेर में से निरर्थक को झटककर दूर हटा देते हैं एवं सार को ग्रहण कर लेते हैं।

एच. आई. वी. (HIV) / एड्स (AIDS) के प्रति मध्यम सामाजिक आर्थिक स्तर की बालिकाओं में जागरूकता

डॉ. प्रीति सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, वनस्पति विज्ञान विभाग

प्रस्तावना

एड्स वर्तमान समय की सबसे बड़ी स्वास्थ्य समस्याओं में से एक है । एड्स /(AIDS - एक्वायरड् ईमुनो डिफीसीयंसी सिन्ड्रोम) का संक्रमण एच.आई.वी. (HIV-हयूमन ईमुनो वायरस) वायरस (विषाणु) के द्वारा होता है। माना जाता है कि सबसे पहले इस रोग का वायरस एच. आई. वी. अफ्रीका के खास प्रजाति के बंदरों में पाया गया और वहीं से पूरी दुनिया में फैला । एड्स स्वयं में कोई बीमारी नहीं है पर एड्स से पीड़ित मानव शरीर बैक्टीरिया (जीवाणुओं), वायरसों (विषाणुओं) तथा अन्य परजीवीयों द्वारा होने वाली संक्रामक बीमारियों के प्रति अपनी प्राकृतिक प्रतिरोधी शक्ति खो बैठता है क्योंकि एच.आई.वी वायरस रक्त में उपस्थित प्रतिरोधी पदार्थ "लसीका" कोशों पर आक्रमण करता है । एड्स पीड़ित मानव शरीर में प्रतिरोधक क्षमता के क्रमशः क्षय होने से कोई भी अवसरवादी संक्रमण यानी साधारण सर्दी जुकाम से लेकर टी.बी. (क्षय रोग) जैसे रोग तक सहजता से हो जाते हैं और उनका इलाज कठिन हो जाता है । अभी तक इस बीमारी को लाइलाज माना जाता है। दुनिया भर में इसके इलाज पर शोधकार्य चल रहे हैं । एच.आई.वी. संक्रमण को एड्स की स्थिति तक पहुँचने में 9 से 10 वर्ष या इससे भी अधिक समय लग सकता है। एच. आई.वी. से पीड़ित व्यक्ति अनेक वर्षों तक बिना किसी विशेष लक्षणों के रह सकते हैं। दुनिया भर में इस समय लगभग साढ़े चार करोड़ लोग एच.आई.वी का शिकार हैं। इनमें से दो तिहाई सहारा से लगे अफ्रीकी देशों में रहते हैं, वहाँ हर तीन में से एक वयस्क इसका शिकार है। दुनिया भर में लगभग 14,000 लोगों के प्रतिदिन इसका शिकार होने के साथ ही यह डर बन गया है कि ये बहुत जल्दी ही एशिया को भी पूरी तरह चपेट में ले लेगा।

एड्स के लक्षण

एच.आई.वी से संक्रमित लोगों में अक्सर लम्बे समय तक एड्स के कोई लक्षण नहीं दिखते। दीर्घ समय तक (3, 6 महीने या अधिक) एच.आई.वी भी औषधीय परीक्षण में नहीं उभरते। एच आई. वी संक्रमण के तीन मुख्य चरण हैं– तीव्र संक्रमण, नैदानिक विलंबता एवं एड्स।

- ,p vkbZ oh dh çkjafHkd vof/k जो कि उसके संक्रमण के बाद प्रारंभ होती है उसे तीव्र एच.आई.वी या प्राथमिक एच.आई.वी या तीव्र रेट्रोवायरल सिंड्रोम कहते हैं। कई व्यक्तियों में 2 से 4 सप्ताह में इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारी के लक्षण दिखने लगते हैं और कुछ व्यक्तियों में ऐसे कोई विशेष लक्षण नहीं दिखते। 40 % से 90 % मामलों में इस बीमारी के प्रमुख लक्षण बुखार, लिम्फ नोड्स में सूजन , गले की सूजन, चक्कते, सिर दर्द , मुँह और जननांगों के घाव आदि हैं। कुछ लोगों में इस स्तर पर अवसरवादी संक्रमण भी विकसित हो जाता है। कुछ लोगों में जठरांत्र की बीमारियाँ जैसे उल्टी, मिचली या दस्त और कुछ में परिधीय न्यूरोपैथी के स्नायविक लक्षण और जुल्लैन बर्रे सिंड्रोम जैसी बीमारियों के लक्षण दिखते हैं। लक्षण की अवधि आम तौर पर एक या दो सप्ताह होती है। ये समस्त लक्षण साधारण बुखार या अन्य सामान्य रोगों के भी हो सकते हैं। अतः एड्स की निश्चित रूप से पहचान केवल और केवल, औषधीय परीक्षण से ही की जा सकती है व की जानी चाहिये।
- एचआईवी संक्रमण के अगले चरण को नैदानिक विलंबता, स्पर्शोन्मुख एचआईवी या पुरानी एचआईवी कहते हैं।. उपचार के बिना एचआईवी संक्रमण का दूसरा चरण औसतन 8 साल तक रह सकता है । इस

चरण के अंत में कई लोगों को बुखार, वजन घटना, गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल समस्याएं और मांसपेशियों में दर्द अनुभव होता है। लगभग 60 –70 % लोगों में 3–6 महीने के भीतर लासीका ग्रंथियों (जांघ कि बगल वाली लसीका ग्रंथियों के अलावा) में सूजन या विस्तार भी देखा गया है।

- एचआईवी संक्रमण के अंतिम चरण एड्स को दो प्रकार से परिभाषित किया गया है या तो जब CD_4+टी कोशिकाओं कि संख्या 200 कोशिकाएं प्रति μL से कम होती हैं या तब जबकि एचआईवी संक्रमण के कारण कोई रोग व्यक्ति के शरीर में उत्पन्न हो जाता है । विशिष्ट उपचार के अभाव में एचआईवी से संक्रमित आधे लोगों के अन्दर दस साल में एड्स विकसित हो जाता है। सबसे आम प्रारंभिक स्थिति जो कि एड्स की उपस्थिति को इंगित करते हैं, वो हैं –न्यूमोसिस्टिस निमोनिया, वजन घटना, मांसपेशियों में खिचाव, थकान, भूख में कमी, ग्रास नली और श्वास नलिका में कई बार संक्रमण इत्यादि । अवसरवादी संक्रमण (बैक्टीरिया, वायरस, कवक और परजीवी के कारण) शरीर के हर अंग प्रणाली को प्रभावित कर सकते हैं जो कि आम तौर पर हमारे प्रतिरक्षा प्रणाली द्वारा नियंत्रित हो जाते हैं।. भिन्न भिन्न व्यक्तियों में भिन्न भिन्न प्रकार के संक्रमण होते हैं जो कि इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति के आस पास वातावरण में कौन से जीव या संक्रमण आम रूप से पाए जाते हैं।

एड्स संक्रमण के प्रमुख कारण :

समाज में एड्स / एच.आई.वी. के प्रति तरह तरह की भ्रान्तियाँ व्याप्त हैं ।पिछले कुछ वर्षों से इस जानलेवा बीमारी का फैलाव मात्र बीमारी की रोकथाम व बचाव के उपायों की जानकारी के अभाव में हुआ है। इसलिए कई देसी विदेशी संस्थाएँ युवा पीढ़ी (जिसकी इस बीमारी से सबसे ज्यादा प्रभावित होने की आशंका होती है) में जागरूकता फैलाने एंव भ्रान्तिओं को दूर करने का अनवरत् प्रयास कर रहे हैं।

एड्स / एच.आई.वी के संक्रमण के तीन प्रमुख कारण है–

- असुरक्षित यौन सम्बन्ध,
- संक्रमित रक्त के आदान प्रदान तथा
- संक्रमित माँ से शिशु में संक्रमण द्वारा ।

प्रणाली - यह अध्ययन इस परिकल्पना पर आधारित है कि मध्यम सामाजिक आर्थिक वर्ग की बालिकाओं की एड्स /एच.आई.वी के बारे में जो अल्प जानकारी है उसे चयनित प्रश्नावली; प्रतिपुष्टि व सूचना द्वारा वृद्धि की जा सकती है।

प्रस्तुत सर्वेक्षण में दो परिवर्ती राशिओं पर विचार किया गया है।

(क) एड्स / एच.आई.वी. : यह स्वतन्त्र परिवर्ती राशि है जिसके हानिप्रभाव व रोकथाम की जानकारी का मापन इस सर्वेक्षण में किया गया है।

(ख) मध्यम सामाजिक आर्थिक वर्ग की चुनौतियाँ : यह आश्रित परिवर्ती राशि है। बालिकाओं की प्रतिकिया उनके शैक्षणिक स्तर, सामाजिक पृष्ठभूमि व जिज्ञासु प्रकृति के ऊपर निर्भर है ।

इस सर्वेक्षण में मध्यम आर्थिक सामाजिक स्तर की 1000 बालिकाओं को रेण्डम विधि से सम्मिलित किया गया। चयनित प्रश्नावली के माध्यम से बालिकाओं से उनकी एड्स / एच.आई.वी. के प्रति जागरूकता के स्तर का मापन कर सूचना व प्रतिपुष्टि द्वारा बालिकाओं की एड्स /एच.आई.वी. के बारे में जानकारी बढ़ाने एवं भ्रान्तियों को दूर करने का प्रयास किया गया है।

क्र.	प्रश्न	प्राप्त प्रतिकिया (उत्तर)	उत्तर का प्रतिशत
1	क्या एड्स (AIDS), एच.आई. वी. + (HIV) वायरस के द्वारा फैलता हाँ	हाँ	70
		नहीं	15
		पता नहीं	15
2	क्या एच.आई. वी (HIV) का पूरा नाम "हयूमन ईमुनो डिफीसीयंसी सिंड्रोम" है?	हाँ	65
		नहीं	15
		पता नहीं	20
3	क्या एड्स (AIDS) का पूरा नाम "एक्वायरड् ईमुनो डिफीसींयसी सिंड्रोम" है ?	हाँ	65
		नहीं	25
		पता नहीं	10
4	क्या विश्व एड्स दिवस "1 दिसम्बर" को मनाया जाता है?	हाँ	68
		नहीं	22
		पता नहीं	10
5	भूख न लगना, वजन कम होते जाना, गले में खराश, लगातार बुखार, दस्त, बार बार उल्टी करना, सिर दर्द, थकान, यौन अंगों	हाँ	60
		नहीं	20

	में दर्द, टी.बी., शरीर की प्रतिरक्षा बिगड़ना तथा अन्त में मृत्यु क्या एड्स (AIDS) के लक्षण हैं ?	पता नहीं	10
6	क्या एड्स मच्छर काटने से फैलता है ?	हाँ	20
		नहीं	70
		पता नहीं	10
7	क्या एड्स "असुरक्षित तथा अप्राकृतिक यौन सम्बन्धों" के कारण फैलता है?	हाँ	60
		नहीं	25
		पता नहीं	15
8	क्या एड्स संकमित रक्त चढ़ाने से फैलता है?	हाँ	65
		नहीं	20
		पता नहीं	15
9	क्या एड्स संकमित माँ से उसके बच्चे में फैलता है?	हाँ	70
		नहीं	20
		पता नहीं	10
10	क्या एड्स सकंमित सिरिंज अथवा एक ही सिरिंज का बार बार उपयोग करने से फैलता है?	हाँ	70
		नहीं	20
		पता नहीं	10
11	क्या एड्स साथ मे रहने, गले मिलने, गाल पर किस करने तथा खेलने से फैलता है?	हाँ	40
		नहीं	50
		पता नहीं	10
12	क्या सार्वजनिक शौचालयों के उपयोग से एड्स फैलता है?	हाँ	35
		नहीं	40
		पता नहीं	
13	क्या "CD4 सेल काउन्ट परीक्षण" द्वारा HIV संकमण का पता लग सकता है?	हाँ	65
		नहीं	15
		पता नहीं	20
14	क्या " एड्स " का कोई इलाज है?	हाँ	20
		नहीं	60
		पता नहीं	20
15	क्या " एड्स " से बचाव किया जा सकता है?	हाँ	65
		नहीं	12
		पता नहीं	23
16	क्या "रक्त चढ़ाने" के पूर्व संकमित रक्त की जाँच करके "एड्स" से बचाव किया जा सकता है?	हाँ	70
		नहीं	20
		पता नहीं	10
17	सुरक्षित यौन सम्बन्ध तथा कण्डोम का प्रयोग करके क्या एड्स से बचाव किया जा सकता है?	हाँ	65
		नहीं	10
		पता नहीं	25
18	क्या एण्टीरीट्रोवायरल थीरेपी (ART) द्वारा "एच.आई.वी." के वृद्धि दर को कम किया जा सकता है?	हाँ	68
		नहीं	22
		पता नहीं	10
19	क्या किसी गर्भवती महिला का एच.आई.वी परीक्षण आवश्यक है?	हाँ	65
		नहीं	20
		पता नहीं	15
20	क्या आप सहमत हैं कि जन्म कुडली की बजाय विवाह पूर्व एच. आई. वी. (HIV) की जाँच होनी चाहिए?	हाँ	65
		नहीं	25
		पता नहीं	10

व्याख्या - चयनित प्रश्नावली के आधार पर प्राप्त जानकारी के अनुसार लगभग 65 प्रतिशत बालिकाओं को एच.आई.वी. (HIV) /एड्स (AIDS) के बारे में पर्याप्त जानकारी है तथा उनमें भ्रान्तियाँ भी कम है । इस अध्ययन में यह भी पाया गया कि लगभग 20 प्रतिशत बालिकाओं में एच.आई.वी. /एड्स के बारे में अल्प जानकारी तथा भ्रान्तियाँ व्याप्त है जबकि लगभग 15 प्रतिशत बालिकाएँ एच.आई.वी./एड्स जैसी भयानक बीमारी के बारे में पूर्णतः अनभिज्ञ है।

इस सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि शिक्षित तथा शहरी क्षेत्रों में रहने वाली बालिकाओं में एच.आई.वी./एड्स के प्रति जागरूकता का स्तर ज्यादा था जबकि अशिक्षित तथा ग्रामीण परिवेश से सम्बन्धित बालिकाओं में जागरूकता निम्न स्तर पर पायी गयी । सर्वेक्षण में पाया गया कि रूढ़िवादी परिवारों से सम्बन्धित बालिकाएँ एच.आई.वी./एड्स जैसे विशयों पर चर्चा करने में भी परहेज करती हैं।

निष्कर्ष :– "राष्ट्रीय उपार्जित प्रतिरक्षी अपूर्णता सहलक्षण नियंत्रण कार्यक्रम" और "संयुक्त राष्ट्रसंघ उपार्जित प्रतिरक्षी अपूर्णता सहलक्षण" के अनुसार भारत के 80% से 85% प्रतिरक्षा संक्रमण असुरक्षित, विषमलैंगिक यौन सम्बन्धों से फैल रहे हैं। भारत में एड्स से प्रभावित लोगों की बढ़ती संख्या के संभावित कारण हैं –

- आम जनता को एड्स के विषय में सही जानकारी न होना।
- एड्स तथा यौन रोगों के विषयों को कलंकित समझा जाना।
- शिक्षा में यौन शिक्षण व जागरूकता बढ़ाने वाले पाठ्यक्रम का अभाव।
- कई धार्मिक संगठनों का गर्भ निरोधक् के प्रयोग को अनुचित ठहराना आदि।

एड्स का एक सबसे बड़ा दुष्प्रभाव है कि समाज को भी संदेह और भय का रोग लग जाता है। यौन विषयों पर बात करना हमारे समाज में वर्जना का विषय रहा है। इस भयावह

स्थिति से निपटने का एक महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक बदलाव लाना भी है। बालिकाएँ ही परिवारिक इकाई की आधारशिला होती हैं। अगर उनकी ही जानकारी अपूर्ण होगी तो समाज की जानकारी भी अपूर्ण बनी रहेगी। वर्तमान समय सूचना क्रान्ति का है। जागरूकता ही लोगों को एड्स जैसी भयानक बीमारी से बचा सकती है । इसलिए हमें एड्स जैसी "सूनामी" से युवा पीढ़ी के रक्षण के लिए न केवल विज्ञापनों जैसी पारंपरिक साधनों बल्कि अन्य सूचना साधनों व उपयुक्त शिक्षा को अपनाना होगा । इस सर्वेक्षण में यह भी परिलक्षित होता है कि सामाजिक भेद एवं पारंपरिक लज्जा के कारण युवतियों को एड्स के बारे मे सम्पूर्ण जानकारी व बचाव के उपाय नही बताये जाते हैं; इससे उनका ही नहीं बल्कि पूरे समाज का स्वास्थ्य प्रभावित होता है।

अतः वर्तमान समय की माँग है कि प्रत्येक स्तर पर युवाओं खासकर युवतियों को एच.आई.वी./एड्स के बारे में सम्पूर्ण एवं सही जानकारी देने का हर संभव प्रयास किया जाए जिससे इस जानलेवा बीमारी को समूल नष्ट किया जा सके।

****

जीवन-दर्शन

प्रतिशोध और धैर्य

सोनी तिवारी, छात्राध्यापिका-बी.एड.

प्रतिशोध अपनी ही ज्वाला में जलते हुए धैर्य से बोला- "तुम मेरे साथ नहीं रहा करो। तुम्हारे जैसे शान्त व्यक्ति के साथ रहने से मेरी शान घटती है। मैं तो जैसे को तैसा करने पर विश्वास रखता हूँ।"

धैर्य ने शान्ति से प्रतिशोध का साथ छोड़ दिया। एकाकी प्रतिशोध तब से अधीरतापूर्वक सारे संसार में विचरण कर रहा है और अपना एवं समाज का अहित कर रहा है।

लघु कथा

लालच बुरी बला

शिफा नाजिर, बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

तीन आदमी सफर कर रहे थे राह में उनको सोने की तीन ईटें मिलीं तीनों ने खुशी से एक-एक ईंट ले ली फिर आगे बढ़े। उनके पास खाने का समान नहीं था। जब वे भूख से बेचैन हो गये तो आपस में कहने लगे कि कहीं से खाने का सामान मंगवाना चाहिए। उनमें से एक शख्स बोला कि आप दोनों आदमी यहीं ठहर जायें। मैं अभी सामने वाले गाँव से खाना खरीद कर लाता हूँ। दोनों ने यह बात मंजूर कर ली वे वहीं रुक गए फिर तीसरा आदमी खाना लेने के लिए गाँव की तरफ चल पड़ा। रास्ते में उसकी नीयत बदल गयी उसने अपने मन में सोचा कि अगर मैं खाने में जहर मिला दूँ तो बड़ा अच्छा होगा, क्योंकि जब मेरे दोनों साथी जहरीले खाने को खायेंगे तो मर जाएगें और ईंटे सब मेरी हो जायेंगी। ये सोचकर उसने खाना खरीदा उसमें जहर मिला दिया फिर वही जहरीला खाना साथ लेकर आने लगा । इधर उसके जाने के बाद उसके दोनों साथियों ने ये बात तय की कि हम दोनों मिलकर उसको मार डालें ताकि उसके हिस्से की ईंट हम लोगों की हो जाये। जब वो तीसरा आदमी खाना लेकर पहुँचा तो ये दोनों अचानक उस पर टूट पड़े और उसको जान से मार डाला। भूखे तो पहले से ही थे जब कत्ल से फारिग होकर उस खाने को खाया तो फिर वे दोनों भी मर गए और सोने की ईंटें वहीं धरी की धरी रह गयीं।

आलेख

दुष्कर्म की वेदना में बिलखती नारी

कोमल साहू, छात्राध्यापिका-बी.एड.

"ख्वाहिशों को संजोये उत्तराखण्ड से आयी एक परी
छूटा माँ का आंचल और घर से बनी एक लम्बी दूरी
दिल्ली में ठहर, लक्ष्य के प्रति हुई समर्पित जब
कुछ गिद्धों ने देखा चिड़िया को घोंसले से बाहर तब।
नोंच-नोंचकर खाया सबने और फिर ली एक लम्बी डकार
कुछ क्षणों में बनकर एक दिव्य प्रकाश, सोचती वह बार-बार।
क्यों आयी मैं घोंसले से बाहर,
मात्र करने को एक स्वप्न साकार।।"

16 दिसम्बर, 2012 को दिल्ली के पैरा मेडिकल की छात्रा के साथ सामूहिक दुष्कर्म की घटना ने पूरे राष्ट्र को झकझोर कर रख दिया है। छेड़छाड़, बाल-यौन शोषण एवं बलात्कार की घटनाओं से अखबार और मैग्जीन ठूँसे रहते हैं। लेकिन एक दिन ये अखबार घर के किसी कोने में बिछ जाते हैं और मैग्जीन के पन्ने लिफाफों का रूप ले लेते हैं। आखिर कब तक हम मुंह पर लिहाफ डालकर मुर्दो की तरह पड़े रहेंगे, या यूँ कहूँ कि हम उस मनहूस घड़ी का इंतजार कर रहे हैं जब हमारे घर की बहू-बेटियाँ इन भेड़ियों के हत्थे चढ़ेंगीं। क्या हमारे गाँव-देश की बेटी हमारी बेटी नही है ? हम कभी सरकार और कानून को, कभी फिल्म-जगत को और कभी-कभी स्वयं पीड़िता को दोषी बताकर अपना पल्ला झाड़ लेते हैं। लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि ये खूंखार भेड़िये हमारे ही किसी गाँव के अथवा परिवार के सदस्यों में छिपे होते हैं और कभी-कभी खून के रिश्तों का वास्ता देकर हम स्वयं उन्हें पनाह देते हैं। यदि परिवार के द्वारा ही इन भेड़ियों पर अंकुश लगा दिया जाता, दोषी पाये जाने पर इन्हें कानून को सौंप दिया जाता तो वर्तमान स्थिति इतनी दयनीय न होती। जब हमारे घर हमारे बेटे की शिकायत आती है तो हम बेबाक कहते हैं- "जवानी में अक्सर ऐसा हो जाता है।', 'वो तो लड़का है।' 'जरूर लड़की में कोई खोट है।' लेकिन जब हमारी खुद की बेटी किसी घटना का शिकार होती है तब हमारी मानसिकता झटपट बदल जाती है। आखिर क्यों ?

दुष्कर्म की इस महामारी को खत्म करने के लिए दोहरी मानसिकता से निकलकर सरकार और समाज की सभी इकाईयों को एक साथ आवाज उठानी होगी।

दुष्कर्म की शिकार हुई महिलाएं/बच्चियाँ जिन्दगी भर के लिए हीन भावना से घिर जाती हैं। कुछ सेक्स को गलत नजरिये से देखने लगती हैं, तो कुछ को जिन्दगी भर के लिए सेक्स से नफरत हो जाती है। कहते हैं कि वक्त का मरहम गहरे से गहरे जख्म को भर देता है, किन्तु कुछ जख्म इतने नासूर होते हैं कि उन्हें वक्त का मरहम भी नही भर पाता है। वास्तविकता में जो घटता है वह तो बस एक ही बार किन्तु स्मृतियाँ सर्वाधिक दुखदायी होती हैं जो कि ताउम्र सालती है। मनुष्य का संवेदनशील मन गीली लकड़ी की भाँति होता है, जिसमें उस घटना की स्मृतियाँ धुंधआती रहती हैं और यह धुंधुवाना ही सर्वाधिक दुखदायी होता है।

"अपमान के छाले छिल-छिल जाते हैं
रेंगता आँखों में जब चीर-हरण का दृश्य घिनौना
सुधियों की आहुति जख्मों को नोचती है
उकसाती है करने को पुरुषहीन धरा
अरे! जिसे स्वयं मैंने ही जना।।"

नदी के जल के लिए पहाड़ की ढलान जो काम करती है वही काम अतीत और उससे जुड़ी घटनाएँ आदि हमारे समाज के लिए करती हैं। हमारे वर्तमान समाज का जो चित्र दर्पण पर प्रतिबिम्बित हो रहा है, वो हमारे अतीत के चित्रों से थोड़ा भिन्न है। पितामह, विदुर आदि से सुसज्जित भरतवंशियों की राजसभा है, जहाँ एक ओर युधिष्ठिर अपने अनुजों सहित विराजमान है, वहीं

दूसरी ओर शकुनि के प्रतिनिधित्व में ज्येष्ठ कुरु पुत्र, कर्ण आदि, मध्य में विनाशकारी द्युत और कुल-वधू द्रौपदी के वस्त्र खींचता हुआ दुःशासन सर्वाधिक स्पष्ट दिखाई दे रहा है। सब कुछ यथावत ही है किन्तु दुःशासन, दुर्योधन, शकुनि की ठसाठस भीड़ में वर्तमान कृष्ण का प्रतिबिम्ब धूमिल पड़ गया है।

यह काली घटना भले ही युगों पुरानी हो गई हो किन्तु सार्वभौमिक सत्य यही है कि एक पहिये से जुड़ी छोटी-सी-छोटी कील तक घूमने को बाध्य होती है। जिस जुए को खेलकर समझकर पाण्डव आनन्द भोग रहे थे, उसी जुए रूपी अग्निकुण्ड में दिव्य जन्मा द्रौपदी का सर्वस्व जलकर भस्म हो गया।

दुःशासन की खोली में दुबके हुए पुरुष न जाने कब समझेंगे कि स्त्री देह का नही, भाव का नाम है। स्त्री ही महान शिव का मनोहर रूप है। जिस समाज को स्वयं स्त्री ने जन्म दिया, मात्र अपने दया भाव व करुणा के कारण आज वही स्त्री समाज की अनुचरी, एक दासी अथवा मात्र भोग्या बनकर रह गयी है। जिन गुणों के कारण स्त्री-पुरुषों से श्रेष्ठ मानी गयी है, उन्हीं के कारण उसका अस्तित्त्व खतरे में पड़ गया है-

"पिलाया था दूध जिसे समझकर बालक चंचल,
लूटी उसी ने मर्यादा, खींचा जोर से आँचल।"

आज कितनी निन्दनीय छवि उकेर रहा है हमारा भारतीय समाज, विश्व मानचित्र पर। आज की तारीख में नारी कहीं भी, कभी भी सुरक्षित नहीं है, न ही घर के भीतर और न ही घर के बाहर। हर पल, हर क्षण, आशंकित सी डरी हुई जी रही है, या यूँ कहें कि जिन्दगी गुजार रही है। हर माँ की यह कितनी बड़ी विवशता है कि वह अपनी बेटी को जितना अधिक सुरक्षित रखना चाहती है, उसे अपनी बेटी से उतनी ही कड़ाई बरतनी होती है।

पाश्चात्य रंग में लिपे-पुते, मनचले युवकों की काली हरकतें हमारी भारतीय संस्कृति के मुंह पर करारा तमाचा साबित हो रही है-

"पूजित है जिस धरा का हर कोना
चन्दन है माटी का हर ढेला
राम-कृष्ण भी खेले जिस पावनी धरा पर
उस भरत से भारत बना
सिंहों के साथ जो खेला
देखो! आज वही माँ भारती कितनी सिकुड़ और
सहम गयी है।
हुई दागदार अपने ही खून के छींटों से
धोते-धोते पाप चर्म-प्रेमियों के
गंगा भी मैली हो गयी है।"

यदि यह कहा जाय कि बीमार मानसिकता वाले इन जीवित मनुष्यों से सड़े-मुर्दे से भी अधिक दुर्गन्ध आती है, तो अतिशयोक्ति न होगी। स्त्री को भोग्या समझने वाले सामाजिक तबके से मैं केवल इतना ही कहना चाहूँगीं कि या तो ये अपने विवेक से सीख लें, अन्यथा समय तो सिखा ही देता है। विवेक से सीखने पर आदमी को दुख नही होता है, किन्तु जब समय सिखाता है तो व्यक्ति हाय-हाय करता है, सीखना तो पड़ता ही है। अपने कुकर्मों से आपने जितने घर जलायें हैं, संख्या में ये उतने ही रहें अब आगे न बढ़े, इसके लिए आवश्यक है कि तत्काल पास के सारे सम्भावित ईंधनों से अलग हो लिया जाय। क्योंकि समय आने पर विशालकाल हाथी को एक तुच्छ चींटी भी स्वर्ग का रास्ता दिखा सकती है अथवा काला बादल सहस्ररश्मि सूर्य को क्षण-भर में आच्छादित कर सकता है-

"पिच-पिच फेंकता मवाद, अपमान का यह फोड़ा
हर आने-जाने वाले ने मारा जब तानों का कोड़ा।
भूलकर भी न कुरेदना इस बुझी राख को दोबारा
क्योंकि एक तुच्छ चिंगारी भी राख कर सकती
है जलाकर विशाल अरण्य सारा।"

IQAC

IQAC के तत्त्वावधान के कुछ विशिष्ट कार्यक्रम, जिनका उल्लेख किया जाना वांछित है–

पॉलीथीन मुक्त परिसर – IQAC ने महाविद्यालय की विस्तार सेवा इकाई के साथ मिलकर महाविद्यालय को पॉलीथीनमुक्त बनाने का कार्यक्रम चलाया, जो सफल रहा। इस कार्यक्रम को आने वाले कई वर्षों तक संचालित किया जाता रहेगा।

शिक्षा में शोध को बढ़ावा देने के लिए विद्यालय प्रबन्धन ने दो अध्यापिकाओं के Research Proposal को वित्तीय सहायता के लिए चयनित किया। दोनों Research Project का कार्य प्रगति पर हैं–

i. Dr. Rita Chauhan - 'Factors Influencing teachers' use of ICT in Education.'
ii. Ms. Meenakshi Srivastava - 'A study of some factors underlying students' absence from the college.

27 एवं 28 नवम्बर को "Potential & Teaching : ICT Integration in classroom Teaching" विषय पर NAAC प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि - उद्घाटन सत्र
प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी, कुलपति
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

मुख्य अतिथि - समापन सत्र
प्रो. पीयूष रंजन अग्रवाल, कुलपति
पूर्वांचल विश्वविद्यालय

NATIONAL SEMINAR
ON POTENTIAL OF TEACHING:
ICT INTEGRATION IN CLASSROOM TEACHING

Introduction

A two day national seminar on **"Potential of Teaching: ICT Integration in Classroom, Teaching"** sponsored by NAAC (National Assessment and Accreditation Council) was held on 27th - 28th November 2015 in S.S. Khanna Girls' Degree College. Seminar was conducted in four technical sessions. Prof. G.C. Tripathi, Vice Chancellor, BHU graced the inaugural session as chief guest while Prof. A. Satyanarayan, Acting Vice Chancellor, University of Allahabad presided the function. Prof. Piyush Ranjan Agrawal, Vice Chancellor, Purvanchal University honored the valedictory session as the chief guest while Prof. D.K. Gupta, Vice Chancellor Jai Prakash Narayan University, Chappra presided over the session.

1. Theme of the Seminar

Where information and communications technology (ICT) is, part of the teaching process, it has enhanced the pupils' levels of understanding and attainment in the subject. It is because ICT is more about thinking skills than about mastering particular software applications. ICT can provide both the resources and the pedagogical framework for enabling pupils to become effective independent learners. Given the right hardware, software and curriculum activities, even severely physically disadvantaged pupils can achieve the same degree of success as anyone else. ICT enables pupils to gather data, experiment with changing aspects of models that would otherwise be difficult or even impossible to obtain.

Hence, it is necessary to analyze the potential of: ICT integration in classroom teaching.

2. Recommendation / Suggestions/Action Plans

Following Recommendation / Suggestions/Action Points were the outcome of the present seminar - The infrastructure of the institution must compliment the requirements of the technology.

Teacher should rely on themselves to be able, through training, to solve problems in their use of IC'T.

There is need to change the attitude of teachers toward ICT integration, which can be achieved through incentive and continuous in - service training of teachers.

Separate annual budget should be provided to each department of the institution for the development of ICT facility.

The establishment of an effective ICT unit and support structure as a driver for the integration of ICTs in the teaching learning process should be adopted.

To participate in ICT - driven education, greater commitments and willingness to share and adopted innovative solutions are needed from all aspects of society - from Governments, the private sector, communities, parents and students.

Institutions should be transformed into active learning center. The telecommunication and power infrastructure policies should focus on teaching institutions as starting points for transformation. Teachers and students must be empowered to be creative agents for change in their institutions, and must embrace a vision that will prepare their youth for tomorrow's challenge.

For becoming a self-reliant knowledge economy, ICT Awareness Programs should be included in the

curriculum as well as separate subsidized training courses could also be run.

3. Follow up actions, the institution proposes to undertake:

Based on the above suggestions/recommendations the IQAC of our college plans to organize seminars, workshops and training programme to train and motivate the teachers-

1. To use the computer for instruction.
2. To use the computer as a tool for demonstration working with existing Presentation.
3. To encourage students in class to search for relevant information on the Internet.
4. To use computers to apply differentiation among the students.
5. To use educational software with students for learning subject knowledge Through drill and practice.
6. To teach students to consider implications and opportunities of computer use.
7. To use e-mail to communicate with students out of college.
8. Our Library the centre of Learning should be well equipped with desk top or Laptop tables for the teacher and students to enable them to search information, collect data and read e-book thus enhancing their awareness and developing their skills needed in the learning of the subjects.
9. We have the Book Bank facility in the college Library which caters to the need of poor and needy students. Hence our college has made efforts to establish a similar Laptop Bank in the Library which will help the students to issue them each day and after completion of their work, they deposit it in the bank. It will give them a potential to learn advanced technology, in reading and collecting data which due to paucity of funds they are unable to do so.
10. Teaching of each subject in the college should be done with the help of ICT at least once a week.
11. An electronic screen of Geographical Map should be put up in the Library which will create an environment of ICT learning. Embolden Picture of Maps and other related subjects will flash upon the inward eye and help the students to register it in their minds.

प्रो. ए. सत्यनरायन, कार्यवाहक कुलपति
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

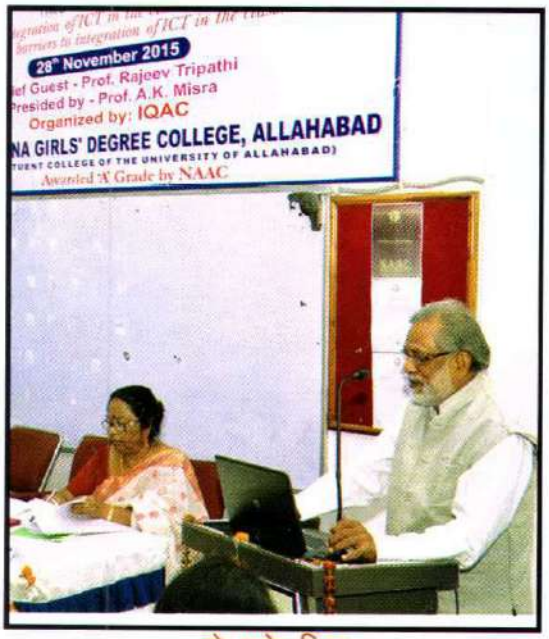

प्रो. ए.के. मिश्रा
एम.एन.एन.आई.टी.

पुरस्कार एवं पद अलंकरण

मुख्य अतिथि श्री राजन शुक्ल - कमिश्नर इलाहाबाद मण्डल

एस के पी सोसायटी अध्यक्ष श्री ईशी चन्द्र खन्ना और प्रबन्धक श्री दिलीप मेहरोत्रा

भारत की सनातन संस्कृति और पर्यावरण

डॉ. मीनू अग्रवाल
एसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास

"स्वच्छता और श्रम मनुष्य के सर्वोत्तम वैद्य हैं"–रोमासिन

पूर्व में उदित होता सूरज, पृथ्वी के दो तिहाई हिस्से में फैला समुद्र, नदियाँ, झील, तालाब, प्रकृति के हरे भरे जंगल, उसमें विचरण करते जीवजन्तु – इन सभी का योग है– पर्यावरण और इसी में है जीवन की धारा। प्रकृति की पूंजी है– धूप, हवा, पानी और हरी भरी धरती।

विकास की अंधाधुध दौड में मानव ने प्रकृति का मनचाहा दोहन किया। उसने वनों को काटा, गगनचुम्बी इमारते खड़ी कर दी। नदियों में अपशिष्ट डाले तो नदियाँ पुण्यतोया नहीं रहीं। तालाबों को पाट कर आवास बना लिए। प्रकृति की उपेक्षा का नतीजा – न पीने का साफ पानी, न सांस लेने के लिए शुद्ध हवा। पिछले बीस सालों में पर्यटन भी बढ़ा है। हमें सोचना होगा कि पहाड़ों में सुरंगे न हो, जलविद्युत परियोजनाएँ मर्यादा में रहें, भागीरथी –अलकनन्दा को पूर्णतया बाँध में न बाँधा जाए, कूड़ा करकट मलबा पावन नदियों में न फेंका जाए, दूषित पानी नदियों को पापिष्ठ न बनाए, नदियों के किनारे आवास नियन्त्रित सीमा में ही बने, वनों को अकारण न जलाया जाए, पौधारोपण को क्रियान्वित किया जाए, जल का अपव्यय रोका जाए।

प्रकृति सम्पत्ति पर कुल्हाड़ी मार कर बैठा है
आदमी स्वार्थ से भरा पूरा बैठा है।
आदमी चित्रकारी करता है
महिमा धरती की सोंधी खुशबू को,
पेड़–पौधों को ही भूल बैठा है

–बी. टी. ललिलानायक की लोक समाचार नामक कविता की पंक्तियॉ

भूमण्डलीकरण के युग में ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत क्षरण, जलवायु परिवर्तन, हिमनदों का पिघलना, विविध प्रकार के जलस्रोतों का विषाक्त होना, वायु में घुलती जहरीली गैसें, अम्लीय वर्षा, विकिरण, मशीनों का शोर, भूमिगतजल स्रोतों का कम होना, जैसी अनेक पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएँ पूरे मानव अस्तित्त्व के लिए खतरा बन चुकी है। प्रकृति के साथ सहयोगी का भाव तिरोहित हो गया है, अन्धाधुंध दोहन और शोषण ने विकास को गति तो दी लेकिन हम अथर्ववेद के ऋषि के उस सीख को भूल गए जिसमें यह निर्देशित है कि पृथिवी का अत्यधिक दोहन न करो, यदि करो भी तो उसकी भरपायी किसी न किसी रूप में कर दिया जाए। अथर्ववेद का वचन है–

" यत्ते भूमे विश्वनामि, क्षिप्रं तदपि रोहतु।
मा ते मर्म विभृगवरि मा ते हृदयमर्पिपम्।

एक औसत वृक्ष अपनी जड़ों के पास लगभग 500 गैलन पानी रोक कर रखता है, सतह के पास होने के कारण वनों में अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ खूब विकसित होती हैं। वृक्षारोपण आवश्यक है। प्राचीन काल में वृक्ष भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ साथ आध्यात्मिक प्रेरणा के स्रोत थे। प्राचीन काल में वृक्ष संरक्षण और परिरक्षण पुनीत कर्तव्य था। ग्लोबल संस्कृति के साथ आज यह भाव लुप्त होता जा रहा है। प्राचीन भारत में अशोक पहला शासक कहा जा सकता है जिसने सड़कों पर छाया के लिए बरगद के वृक्ष लगवाए, आम्र की वाटिकाएँ रोपवायी, आधे आधे कोस पर कुएँ खुदवाए, पशुओं और मनुष्यों के लिए पौशाला बनवाई, उसने औषधियों से सम्बन्धित वृक्ष, मूल, और फल भी लगवाए, उसने द्विपदों, पक्षियों और वारिचरों पर विविध अनुग्रह किए। अशोक अपने लेख में कहता है कि 'जीव सहित भूसे को नहीं जलाना चाहिए, हिंसा के लिए वन को नहीं जलाना चाहिए। अशोक के अभिलेखों में अभिव्यक्त ये निर्देश उसे पर्यावरण और मूल्यों के प्रति सजग सम्राट के रूप में स्थापित करतें हैं।

वेदों का वचन है कि जल औषधिकारक है। मेघ के ताड़ित करने पर इधर उधर चलकर नाद करने के कारण जल समूह का नाम 'नदी' पडा। वरुण द्वारा प्रेरित होने पर नृत्य करने से एकत्र होने पर 'आपः' संज्ञा हुई, इच्छा न रहते हुए भी इन्द्र ने अपनी शक्ति से जल को वरण किया इसलिए उसका नाम 'वारि' पडा, इन्द्र के महत्त्व के कारण जलों ने अपने को बड़ा मान कर उदन

किया तभी से वे 'उदक' कहलाए। वेदों के अनुसार जलों का स्वामी समुद्र है। जल इन्द्र का ओज, वीर्य, बल, शक्ति और ऐश्वर्य है। जल रोग दूर करने वाली औषधियों के प्रदाता थे और वैदिक ऋषियों ने निरन्तर प्रवाहित होने वाले जलों का आह्वान किया, और प्रार्थना की कि वर्षा की धाराएँ पृथिवी का अभिषेक करें, जिससे अनेक प्रकार के अनाज और औषधियाँ उत्पन्न हों। प्राचीन काल में जल की निरन्तरता बनाए रखने के लिए आर्ष ग्रन्थों में वापी, कूप, तडाग, के निर्माण और उसे सदानीरा बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस सन्दर्भ में शासकीय प्रयास के उदाहरण भी मिलतें हैं, जिनकी स्पष्ट जानकारी प्राचीन अभिलेखों में सन्निहित है।

कलिंग नरेश खारवेल ने अपने अभिषेक के प्रथम वर्ष टूटे हुए शीतल जलाशयों का पुनर्निमाण करवाया था और पाँचवे वर्ष नन्द राजा द्वारा 300 वर्ष पूर्व उद्घाटित तनसुलि नहर को नगर तक ले आया था। जूनागढ़ लेख प्राचीन काल में प्रजा के लिए जल की उपलब्धता के प्रति शासकों के प्रयासों का अच्छा उदाहरण है। उक्त लेख से ज्ञात होता है कि मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त के शासनकाल में उसके राष्ट्रिय वैश्य पुष्यगुप्त ने गिरनार पर्वत के एक प्राकृतिक खण्ड के एक छोटे से निकास पर बाँध बनवाकर एक झील का निर्माण कराया था, इसमें बरसाती पानी जमा होता था, दूरस्थ खेतों में सिचांई के लिए अशोक के समय में उसमें नालियाँ बनवाई गई थी, इस झील का नाम सुदर्शन था, शक संवत 72 के मार्गशीर्ष मास में कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को घनघोर वर्षा हुई, जिसके फलस्वरूप जल की बाढ़ से झील का वह बाँध तल तक टूट गया था और उसमें काफी बड़ी दरार पड़ गयी थी और झील का सारा पानी बह गया था तब रूद्रदामन ने उस बाँध को फिर से बँधवाया था। सम्राट स्कन्दगुप्त के काल में संवत 136 में भाद्रपद की षष्ठी की रात्रि में घनघोर वर्षा होने से इस झील का बाँध पुनः टूट गया था, उस समय चक्रपालित ने, जो सुराष्ट्र के गोप्ता पर्णदत्त का पुत्र था और पिता की ओर से गिरिनगर के प्रशासन के लिए नियुक्त था, ने टूटी हुई दरार को बन्द कराकर एक नया बाँध बनवाया था। कहने का तात्पर्य यह है कि तत्कालीन प्रशासन जनता के लिए जल की उपलब्धता के प्रयासों के प्रति सजग थी।

गिरते भूजलस्तर, पीने योग्य साफ पानी की कमी, नदियों के प्रदूषण जैसी समस्याओं से जूझ रहे वर्तमान युग में जल संरक्षण की दिशा में अब वर्षाजल संग्रह की महत्ता को स्वीकारा जा रहा है। पाँच सौ वर्ग मीटर या इससे बड़े भूखण्डों पर वर्षाजल संग्रह योजना को क्रियान्वित करने की नीति पर जोर दिया गया है। यह समय की मांग है। लेकिन प्राचीन काल में भी लोग जलसंरक्षण के प्रति सचेत थे। श्रृंग्वेरपुर में नदी की बाढ़ के अतिरिक्त जल को सहेजने के लिए मिले विशाल तालाब के अद्वितीय उदाहरण से स्पष्ट है कि तत्कालीन जनमानस जल संरक्षण के प्रति सचेत था, जल संचयन के प्रमुख स्रोत तालाब थे, कूप, तालाब बावड़ी के निर्माण को प्रोत्साहन दिया जाता था। पौराणिक और धर्मशास्त्रीय विवरणों से पता चलता है कि प्राचीन काल में तालाब का निर्माण एक धार्मिक कर्तव्य माना जाता था, तालाबों को क्षति पहुँचाने पर दण्ड निर्धारित थे।

आज जल प्रदूषण बहुत विकट समस्या बन चुकी है। करोड़ो लीटर प्रदूषित अपशिष्ट जल के कारण गंगा, यमुना आदि नदियों का जल आचमन लायक नही रहा। नदियों में गिरते नाले, कूड़ा करकट, फैक्ट्रियों के रसायन, एक चुनौती बन चुके हैं। नमामि गंगे योजना के तहत भारत सरकार ने पुण्यतोया नदियों के निर्मलीकरण की योजना शुरू कर दी है। भारतीय संस्कृति में वैदिक ऋषि प्रार्थना करता था कि जल हमें सुख प्रदान करें–"शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।" जल में सब औषधियाँ विद्यमान है। अथर्ववेद में प्रार्थना मिलती है कि समस्त नदियाँ हमारे अनुकूल ही मिलकर बहें–"सं सं स्रवन्तु सिन्धवः "। प्राचीन पौराणिक साहित्य अनवरत सन्देश देते रहे कि नदी में उच्छिष्ट न डाला जाए। श्रीमद्भगवत के नायक श्रीकृष्ण सर्वोत्तम पर्यावरणविद् कहे जा सकतें हैं। कृष्ण चरित में कालिय दमन का प्रसंग पर्यावरण से जुड़ा है। जल जीवन है, नदियाँ पुण्यतोया है, पौराणिक साहित्य स्वच्छता और शुचिता का शंखनाद करतें हैं, जनमानस को जल, नदी, उद्यान, को स्वच्छ रखने का संदेश देतें हैं। अग्नि पुराण में जलाशयों में गर्हित वस्तुओं को न डालने का आवाहन है–"मलादिप्रक्षिपेननाप्सु..."। कूर्म पुराण में कहा गया है

कि 'चैत्य वृक्षों को नहीं काटना चाहिए, जल में उच्छिष्ट नहीं डालना चाहिए। पदम पुराण में कहा गया है कि नदी तट पर, सागरतीर पर, वृक्ष के मूल में, उद्यान में, रम्य वाटिका में, राजपथ पर, विप्र के आयतन में, कभी भी मल त्याग नही करना चाहिए। मत्स्य पुराण में तो यहाँ तक कहा गया है कि जो किसी आपत्ति के न होने पर सड़क पर मल आदि दूषित वस्तु फेके उसे एक कार्षापण का दण्ड देना चाहिए और उसी से उस गंदी वस्तु को हटवाना चाहिए। पौराणिक सन्तों ने एक वापी को दस कूप के बराबर, दस वापी को एक बड़े जलाशय के बराबर और दस जलाशयों को एक पुत्र के बराबर, एक वृक्ष को दस पुत्रों के बराबर बता कर पर्यावरण के घटकों यथा वृक्ष, कूप, वापी की संरक्षा का ही सन्देश दिया। धर्मशास्त्रों ने जलाशयों को क्षति पहुँचाने वालों के लिए दण्ड के विधान तय किए।

ग्लोबल संस्कृति में पानी खरीदा जाता है, भारतीय संस्कृति में पानी के लिए निःशुल्क प्याउ की परम्परा थी। "रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।" ग्लोबल संस्कृति में प्लास्टिक कल्चर और बड़ी बड़ी इमारतों का अस्तित्व मानव को हरियाली से वंचित कर रहा है, भारतीय संस्कृति में हर घर में तुलसी के बिरवे और पीपल –बरगद में देवसदन की अवधारणा और उसे न काटने की परम्परा थी। ग्लोबल संस्कृति में नदियाँ गिरते जलस्तर और प्रदूषण की मार से बेहाल है, भारतीय संस्कृति में नदियाँ पुण्यतोया थी, उनमें अपशिष्ट फेंकना पाप और दण्डनीय था।

बढ़ती जनसंख्या, भौतिकतावादी लोभ, विकास की अंधाधुध दौड़ में नदियों के किनारे निर्माण कार्य जोरों से होने लगे है, मानवीय गतिविधियों से नदियों के जीवन का प्रभावित होना स्वाभाविक है। माननीय हाईकोर्ट ने गंगा आदि नदियों के किनारे 200 मीटर के दायरे में नवीन निर्माण पर रोक लगा दी है ताकि मानव प्रदूषण से नदियों को बचाया जा सके। प्राचीन पौराणिक सन्दर्भो में यह निर्देश बहुत पहले से ही था ताकि पर्यावरण संतुलित रहे, नदियाँ पुण्यतोया बनी रहें। पुराणों में कहा गया है कि गंगा के 'तीर' से एक गव्यूति तक का विस्तार 'क्षेत्र' कहलाता है, इस क्षेत्र की सीमा में अतिक्रमण नहीं होना चाहिए, गंगा तीर पर वास ठीक नहीं है। यहाँ यह जानना जरूरी है कि एक गव्यूति दो कोस की दूरी के बराबर मानी गयी, यानी गंगा आदि नदियों के तट से दो कोस की दूरी तक के क्षेत्र में मानव आवास नहीं होने चाहिए।

किसी कवि की पंक्तियाँ सारगर्भित हैं–

"पास रखेगी नहीं, सब कुछ लुटाएगी नदी।
आज है, कल को कहीं सूख जाएगी नदी,
बैठना फुरसत से दो पल, पास जाकर तुम कभी,
देखना अपनी कहानी खुद सुनाएगी नदी,
हमने वर्षों विष पिलाकर आजमाया है बहुत,
अब हमें भी विष पिलाकर आजमाएगी नदी।"

प्रेरणा

दीपक और अंधकार

सोनी तिवारी, छात्राध्यापिका-बी.ए.

दीपक जल रहा है, घृत चुकने को आया। लौ क्षीण हो चली। वायु के झोंकों ने देखा कि अब दीपक पर विजय पाना आसान है, तो वे वृंद-वृंद मिलकर तेज आक्रमण करने लगे। अंधकार नीचे दबा पड़ा था। यह स्थिति देखकर वायु बोला- "दीपक! अब तो तुम्हारा अंत आ गया है। अब कुछ ही देर में यहाँ मेरा साम्राज्य स्थापित हो जायेगा।" दीपक मुस्कुराया और बोला- "यह देखना विधाता का काम है कि किसका साम्राज्य होगा। मेरा ध्येय है-प्रकाश बिखेरने के लिए निरंतर जलत रहना, सो अंत समय उससे विमुख क्यों होऊँ।"

इसके थोड़ी देर पश्चात् जब अन्तिम क्षण आया तो दीपक ने अपनी समस्त शक्तियों को बटोकर इतना प्रकाश दिया कि वहाँ का सम्पूर्ण अंधकार सिमट कर रहा गया। दीपक का यह बलिदान भी व्यर्थ नहीं गया, क्योंकि अगले ही क्षण में सूर्योदय की लालिमा वातावरण में छाने लगी थी प्रकाश के पथ पर अकेले आगे बढ़ने वाले चाहे कितने ही हारते क्यों न लगे, दैवीय संरक्षण सदा उन्हें विजय का श्रेय दिलाता एवं अनगिनत विभूतियों का अधिकारी बनाता है।

आलेख

वर्तमान समय में उच्च शिक्षण ग्रहण करने वाले शिक्षार्थियो में अनुशासनहीनता एक समस्या

मीनाक्षी श्रीवास्तव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, बी.एड. संकाय

भौतिक समृद्धि की आकांक्षा के कारण जहां एक ओर अधिकाधिक संख्या में विद्यार्थी उच्च शिक्षा ग्रहण करने की दिशा में तेजी से उन्मुख हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर, उनके जीवन में अनुशासन का घोर अभाव भी देखा जा रहा है। यह चिन्ताजनक है। बात-बात में उत्तेजित होना, गाली-गलौज और मारपीट करना, मादक पदार्थों के लिए चोरियां करना और शिक्षकों-संस्थान के झूठे प्रदर्शन के लिए चोरियां करना और शिक्षकों से दुर्व्यवहार करना आदि उच्च शिक्षा से सम्बन्धित विद्यार्थियों में पाये जाने वाले आम दुर्गुण हैं, जिनके कारण शिक्षण-संस्थान तो बदनाम होते ही हैं, शिक्षकों पर भी उंगलियां उठायी जाती हैं।

पिछले एक डेढ़-दशक में समाज में हिंसक वारदातों में तेजी से वृद्धि हुई है और इनमें विद्यार्थियों की सक्रिय भूमिका बहुत-से सवाल खड़े करती है। आज भले ही यह रोना रोया जाता है। सरकार की अनेक योजनाओं के अलावा बैंकों से सहज ऋण के कारण पहले की तुलना में आज उच्च शिक्षा प्राप्त करना सभी वर्गों के लिए आसान है। यह विडम्बना अवश्य है कि उच्च वर्ग के साधन-सम्पन्न विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ अनेक दुर्व्यसनों के लिए भी धन एवं सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं जबकि साधनहीन वर्ग के विद्यार्थी जैसे ही सुख-सुविधाएँ पाने के लिए उत्कंठित होते हैं और गलत राह पर चल पड़ते हैं। आखिर उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश लेने वाला विद्यार्थी विद्या के मन्दिर में रैगिंग जैसी घटनाओं को क्यों अंजाम देता है ? कभी स्वयं शिकार होता है और बाद में दूसरों को शिकार बनाता है और माता-पिता उनकी रहनुमाई करते नजर आते हैं? दरअसल आत्मानुशासन, मर्यादित आचरण, संयम, शिष्टाचार, नैतिकता, बड़ों का आदर-सम्मान, छोटों से स्नेह, राष्ट्र-चेतना, सामाजिक कर्तव्य और दायित्व की आरम्भिक महत्त्वपूर्ण शिक्षा घर से ही दी जानी चाहिए, ऐसा होता भी आया है। लेकिन दुर्भाग्यवश, अब आधुनिक माता-पिता के पास अपने बच्चों को ये शिक्षाएँ देने के लिए समय नहीं है अथवा उनकी दृष्टि में ये शिक्षा अब अप्रासंगिक हो गयी है। संचार-माध्यमों को वे संतान का सही गुरु मानने लगे हैं, जो सचमुच ऐसे गुरु साबित हो रहे हैं जिनसे देश के भावी कर्णधार सामाजिक वातावरण को प्रदूषित करने की कला में निष्णात हो रहे हैं और सबका जीना दूभर कर रहे हैं। इस बात को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि बिना अनुशासन के शिक्षा-संस्थान नहीं चल सकते। ऐसे में, उपरोक्त विवरणों के बाद यह प्रश्न स्वाभाविक है कि क्या विद्यार्थियों में अनुशासन अब अप्रांसागिक हो गया है ? यदि नहीं, तो आखिर उन्हें अनुशासन की शिक्षा कहाँ से और कैसे मिलेगी ? जबकि उनकी अनुशासहीनता सिर चढ़कर बोल रही है और उसे बाकायदा शह मिल रही है। शिक्षक को तो प्रशासन ने ही पंगु बना दिया है। आखिर इस ज्वलंत प्रश्न का उत्तर कौन देगा ?

वक्त और भाग्य

सुमय्या, बी.ए. प्रथम वर्ष

वक्त और किस्मत हर किसी के साथ नही होते। जिन्दगी में बुरा वक्त सब का आता है लेकिन कोई तो उस बुरे वक्त के साथ बिखर जाता है तो कोई निखर जाता है। जब वक्त अच्छा हो तो सब अच्छा लगता है दोस्त-यार, प्यार-वार, रिश्ते अपनापन, घूमना-फिरना, हँसना, बोलना, लेकिन जब वक्त बुरा हो तो यही सब बहुत बुरा लगता है। वक्त को हम गुजरने से रोक नहीं सकते भाग्य किसी का भी हो हम उसे बदल नहीं सकते, पर वक्त से पहले आगे बढ़ना और भाग्य को मात देना, यह दुनिया में बहुत कम लोग ही कर पाते हैं, और शायद यही लोग इस कठिन जिन्दगी पर जीत हासिल करते हैं।

शैक्षिक वातावरण एव
छात्र सहयोगी गतिविधि

शैक्षिक वातावरण एवं छात्र सहयोगी गतिविधियां

यह महाविद्यालय, कला, विज्ञान, वाणिज्य एवं बी.एड. संकाय में अध्ययनरत लगभग 3000 छात्राओं को उच्च कोटि का शैक्षिक वातावरण एवं समुन्नत संसाधन उपलब्ध कराने व छात्र सहयोगी सेवाओं में निरन्तर वृद्धि के लिये प्रतिबद्ध है।

महाविद्यालय के वातानुकूलित, कम्प्यूटरीकृत 'श्यामनाथ कक्कड़ पुस्तकालय' में छात्राओं को अध्ययन के लिये सभी सुविधाएं एवं संसाधन उपलब्ध हैं। 25000 पुस्तकें, श्रेष्ठ उपन्यास, अनेक संदर्भ ग्रन्थों के अलावा नियमित रूप से 12 समाचार पत्र, 31 पत्रिकाएं तथा 40 जर्नल से छात्राएं ज्ञान वर्धन कर रहीं हैं। निर्धन छात्राओं को बुक बैंक से निःशुल्क पुस्तकें प्राप्त करने की भी सुविधा दी जा रही है। छात्राध्यापिकाओं के लिये बी.एड. संकाय में विभागीय पुस्तकालय भी है। DELNET और INFLIBNET के माध्यम से छात्राओं एवं शिक्षक वर्ग को Online e-books पढ़ने की भी व्यवस्था है। आवश्यक अध्ययन सामग्री को न्यूनतम मूल्य में फोटोकॉपी कराने की सुविधा भी पुस्तकालय प्रदान कर रहा है।

राष्ट्र निर्माण में प्रतिभा सम्मान की भूमिका को स्वीकार करते हुए सत्र 2014–15 में महाविद्यालय श्रेष्ठता सूची में स्थान प्राप्त करने वाली छात्राओं को वार्षिकोत्सव में पदक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

छात्रा का नाम	संकाय	पदक
नम्रता मिश्रा	कला	मनोहर दास खन्ना स्मृति स्वर्ण पदक
तनु रिया	विज्ञान	डॉ. मधु टंडन स्मृति स्वर्ण पदक
स्वाति द्विवेदी	वाणिज्य	गायत्री राजनरायण धवन स्मृति स्वर्ण पदक
शिखा पाण्डेय	बी.एड.	अशोक मोहिले स्मृति स्वर्ण पदक
ऐश्वर्या पांडेय	बायोटेक्नोलॉजी	न्यायमूर्ति राम भूषण मेहरोत्रा स्मृति स्वर्ण पदक
स्वाति द्विवेदी	सर्वतोमुखी (सभी संकायों के मध्य)	प्रेसिडेन्ट स्वर्ण पदक
ऐश्वर्या पांडेय	(अकादमिक श्रेष्ठता) विज्ञान संकाय	प्रेसिडेन्ट स्वर्ण पदक

वाणिज्य संकाय में प्रथम वर्ष में प्रिया गुप्ता, द्वितीय वर्ष में रत्निका गुप्ता तथा तृतीय वर्ष में स्वाति द्विवेदी को सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर ₹ 11000– ₹11000 का चैक विशेष छात्रवृत्ति के रूप में सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी द्वारा प्रदान किया गया। इसके अलावा सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी के माध्यम से समाज के विभिन्न दान दाताओं द्वारा विभिन्न विषयों में उच्चतम अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को उनकी मेधा का सम्मान करते हुए अनेक छात्रवृत्तियां प्रदान की गयीं। जिनमें कला संकाय में बी.ए. प्रथम वर्ष में नशरा खान, बी.ए. द्वितीय वर्ष में काशिफा इतरत, बी.ए. तृतीय वर्ष में नम्रता मिश्रा, विज्ञान संकाय में बी. एस–सी. प्रथम वर्ष में रिमशा सुल्ताना, द्वितीय वर्ष में सैयदा फौज़िया इकबाल तथा तृतीय वर्ष में तनु रिया ने सर्वोच्च अंक प्राप्त किया।

बी.एड. संकाय की श्रेष्ठता सूची में द्वितीय स्थान प्राप्त ज्योति पाण्डेय को इस वर्ष की अशोक मोहिले स्मृति छात्रवृत्ति प्रदान की गयी। इसके अतिरिक्त कला संकाय की बी.ए. प्रथम वर्ष की सकीना फातिमा, कीर्ति द्विवेदी, अदिति बिसार्या, द्वितीय वर्ष की शिखा पाण्डेय और ऐमन इफ्तेख़ार, तृतीय वर्ष की तहरीन फात्मा तथा संजना पाण्डेय विज्ञान संकाय में बी.एस–सी. प्रथम वर्ष की कुलसूम जाफ़री, दीक्षा मिश्रा, द्वितीय वर्ष की फरहीन सिद्दीकी, तसबीहा ताज जर्रीन, तृतीय वर्ष की शराह हसीन तथा अंजलि सिंह वाणिज्य संकाय में बी.कॉम. प्रथम वर्ष की अलीज़ा अली, अपराजिता पाण्डेय और अम्बराह करीम, अरूणिमा शर्मा और बी.एड. संकाय की ज्योति पाण्डेय तथा मरियम गुफ़रान ने श्रेष्ठता सूची में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी।

महाविद्यालय में अनुशासन व्यवस्था हेतु सत्र के प्रारम्भ में ही प्रॉक्टोरियल बोर्ड द्वारा मतदान विधि से छात्रा परिषद के पदाधिकारियों का चयन हुआ। जिसमें काशिफ़ा इतरत प्रेसिडेन्ट, मेघना सिंह एवं यशी जायसवाल वाइस प्रेसिडेन्ट, नीतिशा कपूर सेक्रेटरी, सविता मिश्रा ज्वॉइंट सेक्रेटरी के रूप

में चयनित हुई। इनके अतिरिक्त प्रत्येक संकाय से छात्रा प्रतिनिधियों का चयन हुआ। छात्रा परिषद के पदाधिकारियों और प्रतिनिधियों ने पूरे सत्र में ड्राइविंग लाइसेंस, हेलमेट, वेशभूषा तथा स्टूडेन्ट कार्ड संबंधी निर्देशों का पालन महाविद्यालय छात्राओं में सुनिश्चित किया। 'यातायात नियम जागरूकता कार्यक्रम' में ट्रैफिक पुलिस ने छात्राओं को सड़क सुरक्षा संबंधी नियमों की जानकारी प्रदान की।

महाविद्यालय में समाज के निर्बल वर्ग की छात्राओं को मुख्य धारा से जोड़ने के लिये Spoken English & Personality Development का दो महीनें का शार्ट टर्म कोर्स संचालित किया गया। यह कोर्स छात्राओं के शैक्षिक स्तर को उत्कृष्ट बनाने के साथ ही रोजगार संभावनाओं की वृद्धि में भी सहायक है। इस सत्र में 71 छात्राओं ने सैद्धान्तिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त कर व्यक्तित्व विकास किया।

पुरा छात्रा संगठन या ''पुनर्सन्धानम्'' वह मंच है जहाँ छात्राएं महाविद्यालय की पुरानी छात्राओं के साथ गौरवशाली परम्पराओं के अनुभव साझा करती हैं। इस वर्ष महाविद्यालय में आयोजित पुरा छात्रा सम्मेलन में सत्र 1980–90 की उत्तीर्ण छात्राओं ने भाग लिया। जिसमें काव्यपाठ, अन्त्याक्षरी, 'जस्ट ए मिनट' प्रतियोगिताएं आयोजित हुईं। श्रीमती शशिबाला चौधरी, डॉ. मंजुलेश विश्वकर्मा, डॉ. प्रतिभा पाण्डेय, डॉ. जाह्नवी जोशी, डॉ. रुचि मालवीय, डॉ. जेबा नकवी, डॉ. अनुजा पाठक, डॉ. मीनाक्षी श्रीवास्तव, श्रीमती सबीहा, डॉ. ज्योति बैजल, श्रीमती रीना मेहरोत्रा आज भी महाविद्यालय का नाम गौरवान्वित कर रहीं हैं। अगले सत्र के लिये नयी कार्य कारिणी का चयन किया गया–जिसमें अध्यक्ष– श्रीमती शशीबाला चौधरी, उपाध्यक्ष–प्रतिभा पाण्डेय तथा डॉ. जाह्नवी जोशी, सचिव– डॉ. ज्योति बैजल, संयुक्त सचिव– डॉ. रुचि मालवीय तथा श्रीमती सबीहा तथा सांस्कृतिक सचिव के रुप में– आभा श्रीवास्तव, मंजुलेश विश्वकर्मा और सुमैय्या का चयन किया गया। अन्त में सब ने शपथ ग्रहण कर राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन को सफल बनाने का संकल्प लिया।

'महिला प्रकोष्ठ के अन्तर्गत छात्राओं को महिला अधिकार के प्रति जागरूक बनाने का प्रयास किया जाता है। इसी क्रम में Womens studies centre इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 'कानूनी परामर्श कार्यशाला' में वाणिज्य संकाय की अंकिता मेहरा, सलोनी गुप्ता, सृष्टि खरे तथा कला संकाय की बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा मंजरी शुक्ला, मानसी मालवीय तथा रूपेन्द्र कौर ने प्रतिभागिता की। महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ में इलाहाबाद

विश्वविद्यालय के जन्तु विज्ञान विभाग की प्रोफेसर अनीता गोपेश का 'महिला सशक्तीकरण' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। जिसमें उन्होंने नारी को उत्पीड़न के विरूद्ध स्वयं आवाज उठाने की आवश्यकता पर बल दिया। प्रकोष्ठ में अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में महिला सशक्तीकरण पर परिचर्चा आयोजित की गई।

'महाविद्यालय विस्तार कार्य परियोजना' के अन्तर्गत महाविद्यालय में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गए। अगस्त माह में 'पॉलीथीन का प्रयोग बन्द हो' विषय से सम्बन्धित कैप्शन्स तथा आलेख को वॉल मैगजीन पर लगाया गया। इसी क्रम में महाविद्यालय को पॉलीथीन मुक्त करने का संकल्प शिक्षक, गैर शिक्षक वर्ग तथा छात्राओं द्वारा लिया गया। छात्राओं ने गरीब बच्चों को चयनित कर उन्हें साक्षर बनाने का कार्य किया। प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत छात्राओं द्वारा प्रौढ़ नागरिकों को साक्षर बनाने के साथ–साथ डिजिटल इंडिया अभियान से भी लाभान्वित करने के लिए मोबाइल, राशन कार्ड, आधार कार्ड, एल.पी.जी. सब्सिडी आदि के उपयोग का प्रशिक्षण प्रदान कर जागरूक किया गया। UPTEC के श्री नीरज श्रीवास्तव ने महाविद्यालय की छात्राओं को Skill Development, Digital India, Make in India को उद्धृत करते हुए महाविद्यालय में संचालित होने वाले Computer Course के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रमों की श्रृंखला में महाविद्यालय में पौधा रोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 'महिला अल्प बचत योजना' पर एक व्याख्यान आयोजित किया गया जिसमें एच.डी.एफ.सी. बैंक, करेली की मैनेजर श्रीमती कोमल खरबन्दा एवं डिप्टी मैनेजर श्री ज्ञानेन्द्र श्रीवास्तव ने बचत योजना बैंक खाता, नेट बैंकिग के साथ–साथ प्रधानमंत्री जन–धन योजना, प्रधान मंत्री जीवन सुरक्षा बीमा योजना, दुर्घटना बीमा योजना के बारे में विस्तार से बताया। 'राज अन्ध विद्यालय, इसराजी देवी शिक्षण संस्थान', एल्गिन रोड, इलाहाबाद में महाविद्यालय की छात्राओं ने बच्चों को पर्यावरण स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं सामान्य ज्ञान की जानकारी दी तथा वहाँ कैम्पस की सफाई की। इसी के साथ अन्ध विद्यालय में ब्रेल पुस्तकों, खाद्य सामग्री एवं अन्य उपयोगी वस्तुओं का भी वितरण किया गया। विस्तार कार्य के अन्तर्गत ही Impact of Global Warming विषय पर अन्तर महाविद्यालयीय पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया और पुरस्कार प्रदान किया गया। छात्राओं में व्यवसाय के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें सी.एस. अंकुल उदय एवं सी.एस. अभिषेक मिश्र ने कम्पनी सेक्रेटरी के पाठ्यक्रम, इसके लाभ एवं उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इसी श्रृंखला में यूको बैंक शाखा मीरापुर द्वारा एक दिवसीय कैम्प लगाकर छात्राओं को शून्य बैलेंस पर खाता खुलवाने की जानकारी प्रदान की गई। छात्राओं के भीतर सामाजिक सेवा भाव एवं मानवीय गुणों को विकसित करने के उद्देश्य से करेली स्थित कुष्ठ आश्रम में छात्राओं द्वारा सेवा कार्य एवं स्वच्छता कार्यक्रम किया गया तथा उपयोगी वस्तुओं का वितरण भी किया गया। विस्तार कार्य के अन्तर्गत ही छात्राओं द्वारा संगम तट पर एक रैली निकाली गयी, जिसका उद्देश्य गंगा की स्वच्छता, हरित पर्यावरण एवं पॉलीथीन मुक्त पर्यावरण का संदेश देकर समाज को इसके प्रति जागरूक करना था। NASI के जनरल सेक्रेटरी प्रो. यू.सी. श्रीवास्तव का 'स्वास्थ्य, पौष्टिक आहार एवं पर्यावरण' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया तथा बी.एड. में प्रतियोगिताएं सम्पन्न करायी गयी।

महाविद्यालय में छात्राओं को स्वास्थ्य सम्बन्धी परामर्श देने हेतु 'स्वास्थ्य सेवा प्रकोष्ठ' सतत् क्रियाशील है। इसके अन्तर्गत सप्ताह में तीन दिन डॉ. वन्दना राज छात्राओं की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण करती हैं। सत्र पर्यन्त डॉ. वन्दना राज गुप्ता, डॉ. मनीष राज द्वारा स्वास्थ्य से सम्बन्धित विषयों पर व्याख्यान दिये गये।

स्टाफ क्लब के अन्तर्गत महाविद्यालय में प्रतिवर्ष शिक्षक शिक्षिकाओं द्वारा महाविद्यालय के संस्थापक माननीय प्रोफेसर डी.डी. खन्ना के सम्मान में 'प्रेसीडेन्ट डे' का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष भी सांस्कृतिक कार्यक्रम में भजन, लोकगीत, लोकनृत्य समूह गीत तथा कव्वाली प्रस्तुत की गई। लघु नाटिका "भाभी जी घर पर हैं" का सफल मंचन सभी संकायों के शिक्षक–शिक्षिकाओं द्वारा मिलकर किया गया।

छात्राओं की कल्याणकारी नीतियों और व्यवस्थाओं के अनुपालन हेतु महाविद्यालय में 'छात्र कल्याण परिषद' द्वारा विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सत्र के प्रारम्भ में "नवोत्कर्ष' समारोह सोल्लास सम्पन्न किया गया, जिसमें छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम में गणेश वन्दना, राधाकृष्ण नृत्य तथा लघुनाटिका प्रस्तुत कर नवप्रवेशी छात्राओं का स्वागत किया। श्री नितिका दास गुप्ता को 'मिस फ्रेशर' तथा सविता मिश्रा को उपविजेता 2015 चुना गया। छात्र कल्याण परिषद, इतिहास परिषद एवं राष्ट्रीय सेवा योजना (यूनिट – 4) के सम्मिलित प्रयास से 'डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के प्रेरक वचन' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित की गयी तथा विजित प्रतिभागियो को पुरस्कृत भी किया गया। इसी श्रृंखला में – "Creating Awareness About the Future Prospects and Booming Career Option as Company Secretary" विषय पर Career oriented workshop का आयोजन किया गया। सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयन्ती को राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में मनाया गया, जिसमें सरदार पटेल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से सम्बन्धित अनेक कार्यक्रम जैसे एकता रैली, प्रश्नमंच, प्रपत्र प्रस्तुतीकरण, व्याख्यान तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किये गए। छात्राओं ने Wall magazine का विशेष अंक "पटेल इतिहास के झरोखे से" भी तैयार किया। सभी परिषदों के संयुक्त तत्त्वावधान में छात्राओं को 'एयरलिफ्ट' एवं 'चॉक डस्टर' सिनेमा भी दिखाया गया। तृतीय वर्ष की छात्राओं के लिये विदाई समारोह 'आशीष तरंग' का आयोजन किया गया।

छात्राओं के बहुमुखी विकास की प्रक्रिया में शिक्षक के साथ–साथ अभिभावकों की संबद्धता अनिवार्य है। इसी उद्देश्य से महाविद्यालय में शिक्षक अभिभावक संघ की कई बैठकें आयोजित की गयी। विज्ञान संकाय में आयोजित शिक्षक अभिभावक गोष्ठी में अभिभावकों को छात्राओं के लिए 75 प्रतिशत उपस्थिति, हेलमेट व ड्राइविंग लाइसेंस की अनिवार्यता, विभिन्न छात्रवृत्तियां तथा छात्राओं की अनुपस्थिति पर कॉलेज द्वारा छात्राओं के घर Mobile संदेश भेजने के बारे में जानकारी दी गई। वाणिज्य संकाय द्वारा आयोजित गोष्ठी में अभिभावकों को महाविद्यालय की समय–सारिणी, लाइब्रेरी की सुविधा, कम्प्यूटर कोर्स, एन.सी.सी., एन.एस.एस. दामोदर श्री निबन्ध प्रतियोगिता, प्रो. जी.सी. अग्रवाल स्मृति व्याख्यान तथा प्रपत्र लेखन प्रतियोगिता के बारे में जानकारी दी गई।

विद्यार्थी एवं कम्यूनिटी में कौशल आधारित शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत सरकार नें 12वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत यू.जी.सी. में 'कम्यूनिटी कॉलेज मॉडल' को स्वीकृत किया। जिसमें विविध आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ–साथ ही रोजगार परक शिक्षा एवं कौशल में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को सीधे कार्यशक्ति में प्रवेश कराने के लिये शिक्षण संस्थाओं में कम्यूनिटी कॉलेज स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया। यह हर्ष और गर्व का विषय है कि महाविद्यालय का चयन 12 वीं पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत – Advance Diploma in Communication and Printing Skills कोर्स के लिये यू.जी.सी. द्वारा स्वीकृत हुआ। इनके अतिरिक्त अकादमिक उन्नयन की दिशा में अग्रसर महाविद्यालय में चार Minor Projects और पाँच नेशनल सेमिनार हेतु स्वीकृति प्राप्त हुई है।

समस्त छात्र सहयोगी सेवाएं और शैक्षिक वातावरण से छात्राएं राष्ट्र हित में उपयोगी हो इसी आशा से महाविद्यालय निरन्तर संसाधन वृद्धि के लिये संकल्पबद्ध है।

आलेख

अगर आज होते कबीर

डॉ. आशा उपाध्याय
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी

इक्कीसवीं सदी के दौर में भारत में जातीय और धार्मिक टकराहटें बढ़ी हैं। जातीय अभियान और हेयता से बना मन समाज और राजनीति की गति को नियन्त्रित करने की हैसियत रखता है और ऐसा करने में मानवीय सम्बन्धों को अस्वीकार करने में भी संकोच नहीं करता है। ऐसे समय में चौदहवीं शताब्दी के कबीर की यह वाणी लोकतंत्र से कह रही है – ''हम वासी उस देस के जहां जाति– बरन–कुल नाहिं'' आज भी तो हम कुछ ऐसी ही कल्पना नहीं कर रहे ? आज जिस प्रकार सम्प्रदायवाद, बाह्यचार और बाहरी भेद–भाव समाज पर निरन्तर आघात कर रहे हैं उस पर कबीर का यह उद्‌बोधन सटीक बैठता है –

ना जाने तेरा साहब कैसा है
मसजिद भीतर मुल्ला पुकारै, क्या साहब तेरा बहिरा है?
चिंउटी के पग नेवर बाजै, सो भी साहब सुनता है।
पंडित होय के आसन मारै, लम्बी माला जपता है।
अंतर तेरे कपट–कतरनी, सो भी साहब लखता है।

कबीर की ऐसी अनेक वाणियां आज के इसी सम्प्रदायवाद, बाह्याचार और बाहरी भेद–भाव पर निरन्तर आघात करती हैं। कबीर ने मनुष्य–मनुष्य के बीच भेद करने वाले व्यक्ति, भाव या विचार को कभी स्वीकार नहीं किया। कबीर मिल मजदूर न होकर मालिक और स्रष्टा दोनों थे। कबीर इस तथ्य से भली भाँति अवगत थे कि मनुष्य–मनुष्य के बीच भेद केवल वर्ण जाति और धर्म से ही नहीं होता बल्कि व्यवसाय के आधार पर भी समाज में ऊँच नीच का भेद किया जाता है। इसके बावजूद उन्होंने अपने व्यवसाय को कभी छिपाया नहीं। यह उनकी दृढ़ निष्ठा को दर्शाता है – 'जाति जुलाहा मति को धीर, हरषि–हरषि गुण रमै कबीर।

मानवतावाद की स्थापना के लिये कष्ट, सहिष्णुता, पर दुख कातरता और अपरिग्रह की नितान्त आवश्यकता है। हमारी भारतीय संस्कृति में इन्हें सबसे बड़ा गुण माना गया है और इनके बिना कोई व्यक्ति सुसंस्कृत नहीं होता। मनुष्य–मनुष्य में भेद उत्पन्न करने वाले बाह्याडम्बरों, मजहबों रूढ़ियों और अन्ध विश्वासों के प्रति जैसा कठोर रुख कबीर ने अपनाया वैसा किसी और साधु सन्त या भक्त ने नहीं। कबीर ने सामाजिक कुरीति को मिटाते हुए जन्मना जाति को कभी स्वीकार नहीं किया। कबीर ने जो दर्शन सूत्र गढ़ा और दार्शनिक समस्या सुलझाने का तृणमूल अर्थात् ग्रास रूट प्रयास किया वह अति व्यावहारिक है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने स्पष्ट रूप से यह माना है कि कबीर के महत्त्व का जो बड़ा आयाम है वह है उनका अस्वीकार का साहस और इस अस्वीकार को सांस्कृतिक मंच पर प्रस्तुत करना। कबीर का समाज दर्शन कई दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है – उन्होंने व्यवस्था की विसंगतियों के उद्‌घाटन और उन पर कठोर टिप्पणियों से अलग बेहतर समाज, संस्कृति और बेहतर मनुष्यता के उनके स्वप्नों को, उनके उन तमाम मानवीय सरोकारों को सामने लाता है जो उन्हें अपने समय के सन्दर्भ में तो एक बड़े कद और बड़ी हैसियत देते ही हैं, आगामी समयों में भी अधिक बड़े कद और अधिक बड़ी हैसियत के साथ उन्हें जीवित रखते हैं। कबीर का दर्शन भी मानवीय सरोकारों और उनके प्रखर सामाजिक दृष्टि तथा उपलब्धियों से अछूता नहीं है। ब्रह्म को सामने लाकर कबीर ने मानव मात्र की एकता और समानता को रेखांकित किया है। 'एक नूर तैं सब जग उपज्या'' कहकर उन्होंने राजा प्रजा, छोटा–बड़ा सबका बहिष्कार किया है।

कबीर को आधुनिक अथवा समकालीन कहने के पीछे एकमात्र उद्‌देश्य यह है कि वे अपने समय की चेतना को तत्कालीन स्थितियों से आगे ले जाकर व्याख्यायित करते हैं। आज 'सेक्यूलरिज्म' की जो व्याख्या की जा रही है कबीर

उससे ऊपर थे। तभी तो उन्होंने हिन्दू और मुसलमान दोनों की रूढ़िवादिता और आडम्बर पर प्रहार किया। 'सेक्यूलरिज्म' न तो धर्म निरपेक्षता है न सर्व धर्म समभाव। उसमें मनुष्य को मनुष्य के रूप में पहचानने की क्षमता पर बल दिया गया है और तभी कबीर 'लोक' से जुड़कर भी लोक के अन्ध विश्वास से स्वयं को मुक्त रख सके।

कबीर के यहां कविता सामाजिक कर्म है क्योंकि वह समाज को बदलने की ओर उन्मुख है। कबीर प्रश्नातीत भरोसे के नहीं, सप्रश्न बल्कि प्रश्नवाची आस्था के कवि हैं। उनके यहाँ शब्द भाषा का एक इकाई या माध्यम या प्रतीक नहीं है, उसका आध्यात्मिक आशय है –

शब्द हमार हम शब्द के, शब्दहिं लेहु परख्खि।
जो तू चाहै मुक्तिबो अब मति जाहु सरक्कि।।
रैन समाना भानु में, भानु अकाशे माहिं।
अकाश समाना शब्द में, शब्द परे कछु नाहिं।।

कबीर ने दो बातों पर जोर दिया है – 1. आत्म संस्कार 2. समाज संस्कार। काम, क्रोध, लोभ और मद को जीतना आत्म संस्कार है, तभी तो उन्होंने लिखा– ''मन न रंगाये, रंगाये जोगी कपड़ा।'' कबीर ने समाज संस्कार के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों – बलि प्रथा, जाति प्रथा, मूर्ति पूजा, कर्म कांड आदि का विरोध इस वाक्य से किया – 'पाड़े निपुण कसाई।' उनके ये दोनों संस्कार साथ–साथ चलते हैं। कबीर के साधु किसी जाति में नहीं बंधे हैं, वे केवल मनुष्य हैं और ईश्वर के सच्चे भक्त हैं। कबीर के उपदेश भी नैतिकता से जुड़े हैं, इसीलिए उन्होंने लिखा– ''ऐसी बानी बोलियें, मन का आपा खोय। औरन को सीतल करै, आपहुँ सीतल होय।।'' उनकी यह सदाचार की शिक्षा है और सदाचार का आधार होता है – प्रेम। कबीर की प्रासंगिकता केवल सामाजिक विषमता के कारण नहीं है बल्कि मनुष्य के आचरण से जुड़ी है इसीलिए कबीर हमेशा रहेंगे। कबीर जब पाखंडियों की आलोचना करते हैं तब भी मन की आनन्द अवस्था यानी प्रेम को महत्त्व देते हैं। कबीर न केवल सारे तंत्रों द्वारा अपनाये गये बल्कि एक तंत्र के रूप में ढाल दिये गये। उनके साहित्य को हम 'सूक्ष्म वेद' की संज्ञा दे सकते हैं।

समकालीन कवि और साहित्यकार कबीर की मानसिकता को अपने काव्य संवेदना के अधिक समीप पाते हैं। कबीर की रचना को उनके सहज जीवन बोध और तत्कालीन समाज व्यापी मिथ्याचार के बीच उत्पन्न द्वन्द्व एवं तनाव की कविता के रूप में देखा जा सकता है। कबीर की निर्भीकता, दृढ़ता, यथार्थदर्शिता, मस्ती, फक्कड़पन, विवेकशीलता, अभेद दृष्टि, चारित्रिक निर्मलता जैसी अनेक विशेषताएँ आज के साहित्यकार को अपनी तरफ आकर्षित करती हैं। लेकिन यहां वे कबीर से अलग भी हो जाते हैं क्योंकि उनके लिये यह संसार मृग मरीचिका न होकर यथार्थ है। कारण यह है कि आधुनिक युग विज्ञान और अनुसंधान का युग है, जहां प्रत्येक घटना को कार्य–कारण परम्परा से जोड़कर देखा जाता है।

कबीर के मन में मनुष्य की परिकल्पना व्यापक मूल्यों के आधार पर है और इसी अखंड विश्वास के सहारे साहस के साथ उन्होंने समस्त धार्मिक विधि विधान को अस्वीकार कर मनुष्य को सहज मूल्यों पर प्रतिष्ठित किया है। आज धर्म, जाति और सम्प्रदाय विशेष के आधार पर मनुष्य को छोटा किया जा रहा है जबकि कबीर ने मनुष्य को अहिंसक, सत्यवादी तथा ज्ञान से प्रकाशित होने की बात कही थी। कबीर जब यह कहते हैं – मैं भी भूखा ना रहू साधु न भूखा जाय। तब वह थोड़े में संतोष का जीवन दर्शन रचते हैं जो आधुनिक उपभोक्तावाद के विरुद्ध साहित्य का बुलन्द स्वर है। कबीर न तो केवल कवि थे और न सिर्फ समाज सुधारक। ये सब तो उनकी मूल चेतना के 'बाई प्रोडक्ट' हैं। समाज में जाति – बिरादरी को लेकर राजनीतिक पार्टियां बनती हैं, हिन्दू–मुस्लिम भेद को लेकर पार्टियां बनती हैं। इन पार्टियों के आगे मनुष्य नहीं रहता, ब्राह्मण, हिन्दू, मुसलमान, शूद्र रहता है। इसलिए कबीर की कोशिश थी कि मनुष्य की पहचान कैसे की जाय। उनका मूल उद्देश्य था कि बाहर का कर्मकांड छोड़ो, अपने अंतर को शुद्ध करो, सभी को अपना भाई समझो।

'अर्थ केन्द्रित मानसिकता' हमारे आधुनिक समाज

के पतन का प्रमुख कारण है। 'अर्थ' के आगे सभी मूल्य गौण हो गये हैं। कबीर ने इस आर्थिक सम्पन्नता और विपन्नता का स्थान–स्थान पर घोर विरोध किया है। उन्हें 'अर्थ' के आगे 'मनुष्य' का अवमूल्यन स्वीकार नहीं था। 'धर्म' के नाम पर आज जिस विषाक्त मानसिकता का प्रचार–प्रसार है वह कबीर को कभी सह्य नहीं था इसीलिए उन्होंने लोक धर्म की स्थापना करते हुए सामान्य जन को रूढ़ तथा जर्जर अंधविश्वासों एवं आडम्बर से अलग मानवता के सूत्र में बांधा –

कह हिन्दु मोहि राम पियारा, मरम न काहू जाना।
आपस में दोउ लरि मुये, मरम न काहू जाना।।

कबीर ने 'अनुभव–सत्य' को प्रमाण माना – 'मैं कहता आँखिन की देखी, तू कहता कागद की लेखी।' 'अनभै सांचा' के द्वारा अनुभव की बात कहना कबीर का तेवर है। अपने अनुभव के आधार पर उन्होंने जीवन–जगत की आलोचना करते हुए मानव–मूल्यों को प्रतिष्ठित किया। आम जन के प्रति करुणा, जन भाषा की पक्षधरता, पाखंड के प्रति आक्रोश, समदर्शिता, मानवता का प्रचार–प्रसार एवं स्वावलम्बन का महत्त्व जैसे अनेक प्रेरणादायी कार्य कबीर को आज हमसे जोड़ते हैं।

कबीर के शब्द मृत्यु में अमरता के खोज की प्रक्रिया हैं। यह प्रक्रिया अंतस्साधनात्मक भी है किन्तु इसमें प्रबल सामाजिक चेतना का भाव है, पक्षधरता का भाव है। कबीर की भक्ति में सामाजिक चेतना के साथ–साथ विवेक का स्वर है। उनका विद्रोह भी विवेक का सहचर है। कबीर उस तड़प की निरावृत अभिव्यक्ति थे जो भारतीय जिज्ञासा की तड़प है और जिसे भारतीय मनीषा विविध दर्शनों में बोलने का प्रयास करती रही है। कबीर आज भी एक ऐसी आवाज़ हैं जो सुनी जा रही है और सुनी जानी चाहिए।

कविता

वो और मैं

सृष्टि खरे, बी.काम. तृतीय वर्ष

वो पिंजरे में कैद पक्षी सी
उड़ने को आतुर।
मैं हताश मुसाफिर सी
नैराश्य की दास।।
वो बारिश की पहली बूँद
जीव का संचार लिए।
मैं सूखे की तपन सी
व्याकुलता भरी प्यास।।
वो पीपल की लता सी
अठखेलियां करते हुए
मैं पतझर की पत्तियों सी
कोई स्थिरता नहीं।।
वो सरिता सी चंचल
खुद में प्रवाह समेटे।
मैं स्थिर जलाशय सी
कूल परिधि में कैद।।
वो नव शिशु की मुस्कुराहट सी
निश्छल और निर्मल।
मैं किसी वृद्ध की रुदन
जीवन भर की पीड़ा लिए।।
वो मनुष्य के लक्ष्य सी
समृद्धि और वैभव लिए।
मैं जीवन पथ की विडम्बना सी
तमाम असमंजस लिए।।
"वो" अर्थात्,
सुखद भविष्य की कामना
सर्वज्ञ बनने की भावना।
"मैं" अर्थात्
कठोर यथार्थ की सत्यता
लक्ष्य प्राप्त करने की व्यस्तता।।

NATIONAL SEMINAR ON "CLASSROOM ATTENDANCE: AN INDICATOR IN THE RELEVANCE OF EDUCATION TO LIFE"

मुख्य अतिथि - समापन सत्र
प्रो. एच.एस. धामी,
कुलपति, कुमाऊं विश्वविद्यालय

विशिष्ट वक्ता
प्रो. संदीप सान्याल
ट्रिपल आई.टी., इलाहाबाद

विशिष्ट वक्ता
प्रो. मंजू सिंह - अध्यक्ष समाजशास्त्र
वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

A two day National Seminar on **"Classroom Attendance: An Indicator in the Relevance of Education to Life"** sponsored by UGC (University Grants Commission) was organized on 30-31st January, 2016 by Community College, in collaboration with Dr. Madhu Tandon B.Ed. Faculty at S.S. Khanna Girls' Degree College, Allahabad. The seminar was conducted in four technical sessions. Prof. A. Satyanarayan, Dean Arts, University of Allahabad, inaugurated the seminar. The Inaugural Session was chaired by him and Prof. Manju Singh, Head Department of Sociology, Banasthali Vidyapeeth, Rajasthan was the guest of honour. Hon'ble Justice Sunita Agarwal graced the valedictory session as the chief guest and Prof. H.S. Dhami, Vice Chancellor, Kumaon University, chaired the session. In all 408 registrations were made in the national seminar in which papers were received from across the borders from scholars of international universities: one each from **China, Texas USA, London UK and Singapore** and within India from 17 states namely:- **J&K, Delhi, Punjab, Rajasthan, Bihar, UP, Uttarakhand, Chattisgarh, Jharkhand, Gujarat, Maharashtra, Orissa, Tamil Nadu, West Bengal, Assam, Sikkim, Manipur and Nagaland.**

The suggestions that came to the fore were that teacher-taught ratio would have to be looked into and defined clearly. It is only if the ratio is specified and kept low that an emotional bond will develop between the teacher and the taught and the student will be committed to attend classes regularly. Value education should also be imparted in institutions of higher education. In order to achieve academic excellence, educational institutions will have to adopt rigorous attendance policies such that students improve upon their regularity in classrooms, gather rich learning experiences from the educational environment of campuses, acquire skills to successfully transfer their learning to real life situations and thus make their education relevant to life.

राष्ट्रीय सेमिनार की झलकियाँ

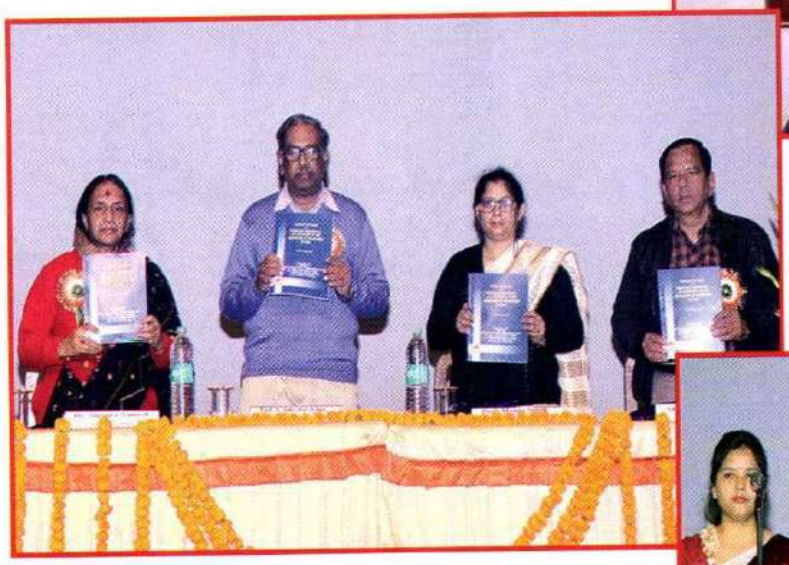

अकादमिक और सांस्कृतिक गतिविधियां

अकादमिक और सांस्कृतिक गतिविधियां

अकादमिक और सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रतिभागिता छात्राओं के चतुर्मुखी विकास के लिये आवश्यक है। इसी विचार के अनुरूप महाविद्यालय छात्राओं ने सत्र पर्यन्त महाविद्यालय, अन्तर इकाई, जिला, प्रदेश तथा राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में स्थान प्राप्त कर व्यक्तिगत गौरव वृद्धि करने के साथ–साथ महाविद्यालय प्रगति में भी योगदान दिया।

यूनाइटेड नेशन्स इन्फॉरमेशन सेन्टर फॉर इंडिया एन्ड भूटान तथा श्री राम चन्द्र मिशन के संयुक्त तत्त्वावधान में ''वह व्यक्ति जिसका आन्तरिक जीवन नहीं है, अपनी परिस्थितियों का गुलाम हैं – (हेनरी फ्रेडरिक)'' विषय पर अखिल भारतीय निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की 10,000 संस्थाओं और 11 भाषाओं में आयोजित दो लाख प्रतिभागियों में महाविद्यालय की बी.ए. तृतीय वर्ष की तनु वर्मा, बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की नौशीन नज़र, बी.ए. प्रथम वर्ष की रंजना पाल, बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की रश्मि लखमानी, बी.एड. संकाय की तनुशा यादव, आयशा एहसान, दिव्या कुमारी और कंचन शुक्ला का निबंध जोनल स्तर के पुरस्कार हेतु चयन किया गया।

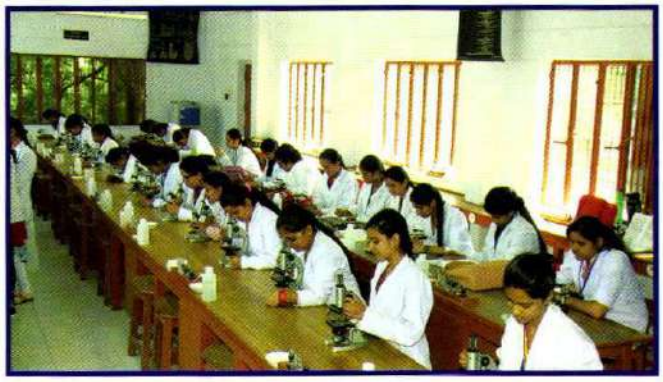

आर्य कन्या डिग्री कॉलेज में प्रकाश चन्द्र जुगमन्दर दास अग्रवाल लोकहित ट्रस्ट द्वारा प्रायोजित अन्तर महाविद्यालय निबंध प्रतियोगिता में महाविद्यालय की तेरह छात्राओं ने प्रतिभागिता कर प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज में हिन्दी पखवारे में आयोजित स्वरचित कहानी प्रतियोगिता में महाविद्यालय की छात्रा दस्तगीर खानम को प्रथम तथा स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता में अबीहा रिज़वी को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

हमीदिया गर्ल्स डिग्री कॉलेज में नेशनल ह्यूमन राइट्स कमीशन नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में बी.ए. द्वितीय वर्ष की अमीशा खान तथा आफरीन शकील ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

आर्य कन्या डिग्री कॉलेज में हिन्दी पखवारे के अन्तर्गत आयोजित निबंध लेखन, स्वरचित कहानी एवं कविता प्रतियोगिता में छात्राओं ने भाग लिया जिसमें महाविद्यालय की बी.कॉम. तृतीय वर्ष की अंकिता मेहरा को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज के संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित संस्कृत निबंध, सामान्य ज्ञान, श्लोक पाठ एवं एकल गीत प्रतियोगिता में बी.ए. प्रथम वर्ष की शिवानी त्रिपाठी एवं तृतीय वर्ष की नलिनी निषाद ने प्रतिभागिता कर प्रमाण पत्र प्राप्त किया। संस्कृत निबंध लेखन प्रतियोगिता में शिवानी त्रिपाठी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

Logophilia Education Pvt. Ltd. द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में महाविद्यालय की 54 छात्राओं ने भाग लिया, जिसमें GALA event के लिए महाविद्यालय का प्रतिनिधित्व बी.ए. तृतीय वर्ष की काशिफा इतरत, बी.ए. द्वितीय वर्ष की प्रिया गुप्ता तथा बी.ए. प्रथम वर्ष की नवीना नैवेद्य ने किया।

जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज में 'Social Networking Sites- Boon or Bane' विषय पर आयोजित वाद–विवाद

प्रतियोगिता में बी.कॉम. प्रथम वर्ष की छात्रा साक्षी सिंह तथा बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की अरुणिमा शर्मा को 'Best Team' का पुरस्कार प्राप्त हुआ। बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की छात्रा जैनब बुतुल एवं रश्मि लखमानी ने जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज में Com Edu Fest के अन्तर्गत 'Prospects of skill Development' विषय पर आयोजित लघु शोध पत्र लेखन प्रतियोगिता में सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया।

यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज में 'Effect of Tobacco Consumption on Human Health in Present Scenario' विषय पर आयोजित PPT प्रतियोगिता में बी.कॉम. प्रथम वर्ष की वन्दिता अग्रवाल ने प्रथम तथा साक्षी सिंह ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया।

सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज के जन्तु विभाग द्वारा "Radiation – A Silent Pollution Injurious to Health' विषय पर आयोजित अन्तर्महाविद्यालयीय निबन्ध प्रतियोगिता में महाविद्यालय की 17 छात्राओं ने प्रतिभागिता की, जिसमें बी.एस–सी. तृतीय वर्ष की तस्नीम फातिमा ने प्रथम, अलीमा सुम्बुल ने द्वितीय तथा दीक्षा तिवारी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

National Academy of Sciences द्वारा 'Scientific Temper" विषय पर आयोजित National Workshop में बी. एस–सी. द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की 42 छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

NASI द्वारा आयोजित National Mathematics Day पर "Topics in Algebraic Topology and Application" विषय पर आयोजित कार्यशाला में बी.एस–सी. द्वितीय एवं तृतीय वर्ष की 23 छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित Madhav Mathematics Competition में बी.एस–सी. की 25 छात्राओं ने भाग लिया। सत्र 2014–15 में 18 प्रतिभागियों ने इस प्रतिभागिता का प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

National Graduate Physics Examination में इस वर्ष महाविद्यालय की 30 छात्राओं ने भाग लिया। विगत वर्ष में आयोजित इसी परीक्षा में बी.एस–सी. तृतीय वर्ष की अंजलि चावला व पल्लवी केसरवानी तथा बीना सिंह व शेफाली केसरवानी ने 10% अंक से अधिक अंक प्राप्त करने का प्रमाण पत्र प्राप्त किया।

समाजिक विज्ञान परिषद व राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्त्वावधान में 'Heartfulness & Stress Management' विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 'ध्यान' के महत्व को विषय विशेषज्ञ इलाहाबाद डिग्री कालेज के राजनीति विज्ञान विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नरेन्द्र बाजपेयी तथा Heartfulness कार्यक्रम के जोनल इंचार्ज सुयश मिश्रा के व्याख्यान एवं प्रयोग द्वारा स्पष्ट किया गया। फिल्में मनोरंजन पूर्ण ज्ञान का साधन हैं सामाजिक विज्ञान परिषद तथा छात्र कल्याण परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में इस तथ्य के अनुरूप छात्राओं को 'एयर लिफ्ट' तथा 'चाक डस्टर' फिल्में महाविद्यालय ऑडोटोरियम में दिखाई गई। सामाजिक विज्ञान परिषद एवं अन्य सभी परिषदों के संयुक्त तत्त्वावधान में UNESCO द्वारा घोषित 'मातृ भाषा दिवस' का आयोजन किया गया।

समस्त परिषदों के संयुक्त तत्त्वावधान में 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस' का आयोजन किया गया। निराला सभागार, इलाहाबाद विश्वविद्यालय में क्षितीन्द्र नाथ मजुमदार की जयन्ती पर आयोजित कला प्रतियोगिता में महाविद्यालय के चित्रकला विभाग की छात्राओं ने प्रतिभागिता की।

चित्रकला विभाग में बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्राओं द्वारा 'क्रियेटिव आर्ट वर्क' के अन्तर्गत कार्ड मेकिंग, बुक मार्क एवं डायरी कवर मेंकिंग इत्यादि करवाया गया। विभाग तथा विस्तार कार्य समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में 'पर्यावरण संरक्षण' विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विभाग द्वारा दो दिवसीय कार्यशाला 'दिवाली डेकोरेशन' का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत छात्राओं को 'ब्रेड क्राफ्ट' से दिया, फूलदान, मोमबत्ती, फोटोफ्रेम और पेपर क्वलिंग से विभिन्न प्रकार की सजावटी वस्तुओं का निर्माण करना सिखाया गया। इसके अतिरिक्त तीन दिवसीय कला कार्यशाला का भी आयोजन किया गया, जिसमें Fevicryl Art Company, Kanpur से आये प्रशिक्षित शिक्षक द्वारा फ्रैबिक कलर और M. seal के माध्यम विभिन्न सजावटी वस्तुओं का निर्माण छात्राओं द्वारा कराया गया। वसंत पंचमी के शुभ अवसर पर पेन्टिंग विभाग हेतु निर्मित

भवन का उद्घाटन किया गया।

दर्शन विभाग द्वारा सत्र के प्रारम्भ में विषय की जानकारी देने के उद्देश्य से ''दर्शन की जीवन में उपयोगिता' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। विभाग द्वारा अन्तर इकाई प्रपत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा अन्य महाविद्यालयों के छात्र–छात्राओं ने प्रतिभागिता की। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार है –

क्र.सं.	नाम	कक्षा	स्थान	महाविद्यालय / विश्वविद्यालय
1	अभिषेक मिश्रा	बी.ए. तृतीय	प्रथम	इलाहाबाद विश्वविद्यालय
2	ऋषभ गुप्ता	बी.एड.	द्वितीय	के.पी. ट्रेनिंग कालेज
3	नीलू मिश्रा	बी.एड.	तृतीय	एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय
4.	मोहिनी मिश्रा	बी.ए. द्वितीय	सांत्वना	आर्य कन्या डिग्री कालेज
5.	अंकिता शुक्ला	बी.ए. द्वितीय	सांत्वना	ईश्वर शरण डिग्री कालेज
6	किशन कुमार साहनी	बी.कॉम. तृतीय	सांत्वना	ईश्वर शरण डिग्री कालेज

संगीत विभाग में महाविद्यालय में सत्र भर आयोजित कार्यक्रमों जैसे स्वतंत्रता दिवस, फ्रेशर फंक्शन, दामोदर श्री, राष्ट्रीय एकता दिवस, राष्ट्रीय संगोष्ठी में सरस्वती वंदना, स्वागत गीत, फ्यूजन गीत, गणेश वंदना प्रस्तुत की गई। बसंत पंचमी के उपलक्ष्य में सरस्वती पूजा का आयोजन भी विभाग द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त विभाग में अन्तरइकाई लोकगीत प्रतियोगिता ''सप्तस्वर'' आयोजित की गई। जिसमें डॉ. प्रमिति चौधरी, डॉ. अनुराधा बनर्जी और श्री उत्पल बापी ने निर्णायक का दायित्व वहन किया। प्रतियोगिता का परिणाम इस प्रकार रहा–

क्र.सं.	महाविद्यालय टीम	स्थान
1.	आर्य कन्या डिग्री कॉलेज	प्रथम
2.	एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय	द्वितीय
3.	राजर्षि टंडन गर्ल्स डिग्री कॉलेज	तृतीय
4.	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय	सान्त्वना
5.	सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज	सान्त्वना

इतिहास परिषद के अन्तर्गत प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्व विभाग की छात्राओं ने 'युगयुगीन कला' विषय पर प्रोजेक्ट बनाए। मध्यकालीन इतिहास की छात्राओं ने 'गांधी जी' और '1857 का स्वाधीनता संग्राम'' विषय पर प्रोजेक्ट बनाए। विवेकानन्द जयन्ती के अवसर पर Wall Magazine 'सृजन' का विवेकानन्द विशेषांक तैयार किया। सरदार पटेल की जयंती के उपलक्ष्य में इतिहास परिषद, छात्र कल्याण परिषद तथा अकादमिक समिति के संयुक्त तत्वावधान में प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्राचीन इतिहास विभाग की छात्राओं ने पटेल जयन्ती के अवसर पर Wall Magazine सृजन का ''पटेल–इतिहास के झरोखे'' से विषयक विशेषांक तैयार किया। इतिहास परिषद द्वारा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के डॉ. अशर्फी लाल श्रीवास्तव का व्याख्यान आयोजित किया गया जिसका विषय था – ''प्राचीन भारत का प्रथम पितृहन्ता राजवंश'' तथा 'प्राचीन भारत में राजनीतिक विवाह'। इस अवसर पर उन्होंने 'धरोहर' संग्रहालय में रखी मूर्तियों की मूर्ति शिल्प के संदर्भ में व्याख्या की। इतिहास परिषद द्वारा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के मध्यकालीन इतिहास विभाग के प्रो. हेरम्ब चतुर्वेदी का व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसका विषय था – 'मध्यकालीन भारत में राजत्व की अवधारणा'।

संस्कृत विभाग द्वारा अन्तर्महाविद्यालयीय निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसका विषय था– ''भारतीय संस्कृति व संस्कारों का मूल–संस्कृत भाषा''। प्रतियोगिता के परिणाम इस प्रकार रहे –

क्र.सं.	स्थान	नाम	कक्षा	महाविद्यालय / विश्वविद्यालय
1.	प्रथम स्थान	शिवानी त्रिपाठी	बी.ए. प्रथम	एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय
		ऋतम्भरा	बी.ए. द्वितीय	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय
2.	द्वितीय स्थान	पूजा	बी.ए. तृतीय वर्ष	ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज
		रोमी यादव	बी.ए. तृतीय वर्ष	श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय
3.	तृतीय स्थान	प्रज्ञा मालवीय	बी.ए. द्वितीय वर्ष	राजर्शि टण्डन महिला महाविद्यालय
		श्रद्धा तिवारी	बी.ए. तृतीय वर्ष	आर्य कन्या डिग्री कॉलेज
		पारुल मिश्रा	बी.ए. तृतीय वर्ष	ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज
4.	सान्त्वना पुरस्कार	सरोज	बी.ए. प्रथम वर्ष	एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय
		शैलजा कुमारी	बी.ए. प्रथम वर्ष	यूइंग क्रिश्चियन कॉलेज
		अमिता गौतम	बी.ए. तृतीय वर्ष	राजर्षि टण्डन महिला महाविद्यालय
		सोनम कनौजिया	बी.ए. तृतीय वर्ष	आर्य कन्या डिग्री कॉलेज
		प्रियंका यादव	बी.ए. तृतीय वर्ष	ईश्वर शरण डिग्री कॉलेज
		मनीषा पटेल	बी.ए. तृतीय वर्ष	श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय

उर्दू विभाग द्वारा इस्मत चुगताई जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में इस्मत चुगताई पर व्याख्यान का आयोजन किया गया, जिसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग के अध्यक्ष प्रो. अली अहमद फात्मी ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

अंग्रेजी विभाग में छात्राओं ने पाठ्यक्रम से सम्बन्धित विषयों पर extempore speech competition में भाग लिया। विषय को रुचिकर बनाने के उद्देश्य से पाठ्यक्रम पर आधारित नाटकों और उपन्यासों से सम्बन्धित फिल्में भी दिखाई गई, जिनमें से Pride and Prejudice, Macbeth, Merchant of Venice, David Copperfield A Passage to India, Guide आदि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त विभाग की छात्राओं ने Logophilia द्वारा आयोजित प्रतियोगिता "Logophilia Series" में भी भाग लिया।

नन्द किशोर खन्ना वाणिज्य संकाय परिषद द्वारा "Different Avenues in Commerce and Management" विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया, जिसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के वाणिज्य एवं व्यावसायिक प्रशासन विभाग के प्रो. अरुण गर्ग ने छात्राओं को वाणिज्य के विभिन्न आयामों से अवगत कराया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के वाणिज्य एवं व्यावसायिक प्रशासन विभाग के प्रो. जे.एन. भार्गव द्वारा "Time Management" विषय पर सारगर्भित व्याख्यान आयोजित किया गया। विभाग में "Digital India" विषय पर PPT प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 12 महाविद्यालय के प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त विभाग में Career Support Programme आयोजित किया गया जिसमें UPTEC से आए वक्ता ने विभिन्न कम्प्यूटर कोर्स के बारे में बताया। कार्यक्रम की श्रृंखला में वाणिज्य संकाय द्वारा प्रो. जी.सी. अग्रवाल मेमोरियल अन्तर इकाई प्रश्न मंच प्रतियोगिता आयोजित की गयी। जिसका परिणाम इस प्रकार है –

संस्था का नाम	स्थान
इलाहाबाद विश्वविद्यालय	प्रथम
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय	द्वितीय
जगत तारन महिला महाविद्यालय	तृतीय

इसके अतिरिक्त संकाय में अन्तर महाविद्यालीय प्रपत्र लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। स्थान एवं पुरस्कार प्राप्त छात्राओं का विवरण इस प्रकार है–

संस्था का नाम	छात्रा का नाम	स्थान
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय	अनामिका त्रिपाठी	प्रथम
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय	कृति बासु	द्वितीय
जगत तारन महिला महाविद्यालय एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय	1. देवयानी श्रीवास्तव 2. नौशीन	तृतीय
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय जगत तारन महिला महाविद्यालय	1. अरूणिमा शर्मा 2. मनीषा सिंह	सांत्वना पुरस्कार

सरोज लाल जी मेहरोत्रा विज्ञान संकाय में विज्ञान परिषद के तत्त्वावधान में सत्र के प्रारम्भ में एक दिवसीय 'Orientation workshop' का आयोजन किया गया, जिसमें ई.सी.सी. के भौतिकी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ. आर.पी. खरे द्वारा बी.एस–सी. प्रथम वर्ष की छात्राओं को सामान्य एवं महत्वपूर्ण तथ्यों जैसे कक्षा में उपस्थिति Notes preparation व विभिन्न Support services के बारे में जानकारी दी गई। परिषद एवं विस्तार कार्य समिति के संयुक्त तत्त्वावधान में महाविद्यालय प्रांगण में पौधारोपण कराया गया। इसके अतिरिक्त Science wall Magazine "Plexus" के समस्त कार्यक्रम एक माह तक Late Ex-President APJ Abdul Kalam को श्रद्धांजलि के रुप में समर्पित किये गये। नवम्बर माह में परिषद द्वारा निबन्ध लेखन का आयोजन किया गया, जिसका विषय था 'Impact of Environmental Degradation'.

जन्तु विज्ञान विभाग द्वारा बी.एस–सी. तृतीय वर्ष की छात्राओं को NASI की गंगा गैलरी का भ्रमण करवाया गया। World Ozone Day के अवसर पर विभाग द्वारा अन्तर्महाविद्यालयीय निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अतिरिक्त अन्य महाविद्यालयों के 34 छात्र/छात्राओं ने भाग लिया। निबन्ध का विषय था – "Causes & Consequences of Ozone Layer Depletion/Changing Climates: A Global Issue" जन्तु विज्ञान विभाग एवं बायोटेक्नोलॉजी के संयुक्त तत्त्वावधान में "Isolation and Identification of Microorganism from different Sources' विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें बी.एस–सी. तृतीय वर्ष की छात्राओं ने महाविद्यालय प्रांगण के अतिरिक्त रमा देवी इण्टर कालेज, एस.के.पी. इण्टर कॉलेज व टैगोर पब्लिक स्कूल की मिट्टी के नमूनों की जांच की। मिट्टी में Microbial Contamination की Serial dilution method द्वारा जांच की गई। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय कैंटीन की चटनी व आस–पास की दुकानों की खाद्य सामग्री में भी Microbes की जांच की गई। विभाग द्वारा "Analysis of water Samples collected from Different sites of Allahabad" विषय पर दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं को गंगा नदी, यमुना नदी व तीन तालाबो के पानी के नमूनों की Biological और chemical analysis की जानकारी दी गई। कार्यशाला में छात्राओं ने विभिन्न Parameters जैसे D.O., Free CO_2, जल की क्षारीयता, Turbidily, Chloride ious व Zooplankton की Qualitative व Quantitative analysis का प्रयोग किया। जन्तु विज्ञान विभाग तथा Extension Activity Cell के संयुक्त तत्त्वावधान में एक guest lecture का आयोजन किया गया, जिसमें UGC के Emeritos Professor, Prof. U.C. Srivastava ने Nutrition and Healthy Living विषय पर व्याख्यान दिया। इसमें उन्होंने antioxidants व free radicals के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा की। विभाग द्वारा 'Zoo Fest' प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें बी.एस–सी. की छात्राओं ने 36 charts व Models प्रदर्शित किये। इसके अतिरिक्त बी.एस–सी. तृतीय वर्ष की छात्राओं ने विभिन्न विषयों पर प्रोजेक्ट भी बनाए।

भौतिकी विभाग द्वारा Electronics विषय पर workshop आयोजित की गई, जिसमें बी.एस–सी. तृतीय वर्ष की छात्राओं

ने अनेक रोचक विषयों पर प्रोजेक्ट बनाए। इसके अतिरिक्त बी.एस–सी. द्वितीय की छात्राओं को Overhead projector की सहायता से Optics एवं बी.एस–सी. प्रथम एवं तृतीय वर्ष की छात्राओं को LCD Projector और Multimedia की सहायता से Electricity एवं Digital Electronics विषय समझाए गए।

गणित विभाग में बी.एस–सी. तृतीय वर्ष की छात्राओं के लिए 'स्लोगन एवं सूक्तियां', प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त विभाग की 5 छात्राओं ने ''दामोदर श्री'' निबन्ध प्रतियोगिता में प्रतिभागिता की।

वनस्पति विज्ञान विभाग में "Herbarium Preparation" विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें छात्राओं को पौधो का संग्रहण, पौधो को सुखाने एवं हरबेरियम की शीट में लगाने की विधियां बताई गई। नवम्बर माह में विभाग में 'Applied Aspects of Botany' विषय पर एक सेमिनार आयोजित किया गया, जिसमें छात्राओं ने PowerPoint पर अपने प्रपत्र प्रस्तुत किये। बी.एस–सी. तृतीय वर्ष की छात्राओं को इलाहाबाद विश्वविद्यालय की वनस्पति विज्ञान विभाग की Ruxburgls Botanical Garden एवं Agharkar Botanical Museum में वनस्पतियों एवं उनके जीवाश्मों के अध्ययन हेतु ले जाया गया। वहां पर Prof. D.K. Chauhan द्वारा उन्हें वनस्पतियों एवं जीवाश्मों के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

रसायन विज्ञान विभाग में बी.एस–सी. तृतीय वर्ष की छात्राओं ने "Applications of Coordination Chemistry in daily life" विषय पर PowerPoint Presentation प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त बी.एस–सी. तृतीय वर्ष की पांच छात्राओं ने यूइंग क्रिशिचियन कॉलेज के रसायन विभाग में आयोजित एक दिवसीय सेमिनार में भाग लिया। सेमिनार का विषय था– Industrial and Biological Applications of coordination chemistry इस सेमिनार के तृतीय Session में महाविद्यालय की जागृति गुप्ता ने PPT Presentation में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अन्य कार्यक्रम में बी.एस–सी. प्रथम वर्ष की छात्राओं ने Inorganic Chemistry से सम्बन्धित विविध विषयों पर Charts भी बनाए।

डॉ. मधु टण्डन बी.एड. संकाय का द्विवर्षीय सत्र 2015 में प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम की मुख्य अतिथि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कला संकाय की पूर्व डीन प्रो. मृदुला त्रिपाठी एवं मुख्य वक्ता इलाहाबाद विश्वविद्यालय, शिक्षा शास्त्र विभाग की अध्यक्ष प्रो. प्रतिभा उपाध्याय थीं। ''छात्रों के सर्वांगीण विकास में विद्यालयीय क्रियाओं की भूमिका'' विषय पर छात्राध्यापिकाओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये, जिसके आधार पर 'छात्रा परिषद' के विभिन्न पदों के लिये उनका चयन किया गया। सूक्ष्म शिक्षण की प्रायोगिक कक्षाओं के साथ–साथ अतिथि व्याख्यान माला के अन्तर्गत उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय के निदेशक प्रो. एस.पी. गुप्ता ने 'शैक्षिक उद्देश्यों का व्यावहारिक स्वरूप' विषय पर व्याख्यान दिया।

छात्राओं में भारत की समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा के प्रति रुचि जागृत करने और उनकी कलात्मक प्रतिभा को मंच प्रदान करने के लिये महाविद्यालय की सांस्कृतिक समिति के निर्देशन में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये। प्रमुख रूप से – स्वतंत्रता दिवस, नवोत्कर्ष, दामोदर श्री राष्ट्रीय अकादमिक विशिष्टता सम्मान समारोह, सरदार वल्लभ भाई पटेल जयन्ती तथा राष्ट्रीय सेमिनार में देशगीत, सरस्वती वंदना, गणेश वन्दना, फ्यूजन गीत एवं भजन की प्रस्तुति की गयी। महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव 'उदिता' में सरस्वती वंदना, लोक नृत्य एवं छात्राओं द्वारा अखिल भारतीय कवि सम्मेलन ''शब्द रंग'' की मनोहारी, प्रस्तुति की गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि मंडलायुक्त श्री राजन शुक्ला ने कार्यक्रम की प्रशंसा की। गणतन्त्र दिवस के अवसर पर देश भक्ति परक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो. योगेश्वर तिवारी ने महाविद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सराहना करते हुए छत्राओं का उत्साह वर्धन किया।

आलेख

हमारी आपकी अपनी भाषा एक परिचय

पूनम कुशवाहा, अतिथि प्रवक्ता, हिन्दी

'भाषा शब्द संस्कृत में 'भाष्' धातु से निष्पन्न है जिसका अर्थ है- 'भाष् व्यक्तायां वाचि' अर्थात् व्यक्त वाणी।

व्यावहारिक दृष्टि से हम भाषा का प्रयोग दो रूपों में करते है पहला बोलने और सुनने के लिए और दूसरा लिखने-पढ़ने के लिए। भाषा की लघुतम इकाई 'ध्वनि' है जबकि भाषा की सार्थक लघुतम इकाई 'शब्द को माना जाता है।

भारतवर्ष में संस्कृत सबसे प्राचीन भाषा है जिसे देववाणी के नाम से भी पुकारा जाता है इसकी लिपि 'देवनागरी' है। संस्कृत के दो रूप हमें प्राप्त होते हैं- वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत। वैदिक संस्कृत में वेदों की रचना की गयी है और लौकिक संस्कृत हमें संस्कृत के कवियों-भास, कालिदास, भवभूति, माघ आदि के रचनाओं में प्राप्त होता है।

हमारे देश में भाषा का विकास काल-क्रमानुसार अग्रांकित रूप से प्राप्त होता है-

संस्कृत- वैदिक संस्कृत (1500-1000 ई.पू.)
लौकिक संस्कृत (1000-500 ई.पू.)
पालि - 500 ई.पू. - 1 ई.
प्राकृत - 1 ई. - 500 ई.
अपभ्रंश - 500 ई. - 1000 ई.
हिन्दी - 1000 ई. - अब तक

हिन्दी का विकास अपभ्रंश से हुआ है। हिन्दी हमारी मातृभाषा और राजभाषा है।

हिन्दी 'फारसी' का शब्द है। हिन्द शब्द का नामकरण सिन्धु के नाम पर हुआ। हिन्दी हिन्द प्रदेश (मध्य प्रदेश) की भाषा है। इस प्रदेश के अन्तर्गत भारत के दस राज्य आते हैं-

1. हरियाणा
2. हिमाचल प्रदेश
3. उत्तर प्रदेश
4. दिल्ली
5. राजस्थान
6. मध्य प्रदेश
7. बिहार
8. उत्तराखण्ड
9. झारखण्ड
10. छत्तीसगढ़

हिन्दी की पाँच उपभाषा तथा 19 बोलियाँ है जो अंग्राकित है-

1. पश्चिमी हिन्दी उपभाषा- इसकी 5 बोलियाँ है- ब्रजभाषा, खड़ी बोली, हरियाणवी, कन्नौजी और बुंदेली

2. पूर्वी हिन्दी उपभाषा - इसकी 3 बोलियाँ हैं- अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।

3. राजस्थानी हिन्दी उपभाषा- इसकी 4 बोलियाँ हैं- मारवाड़ी, मेवाती, मालवी, ढूँढाडी (जयपुरी)।

4. बिहारी हिन्दी उपभाषा- इसकी 3 बोलियाँ है- भोजपुरी, मैथिली और मगही।

5. पहाड़ी हिन्दी उपभाषा- इसकी 3 बोलियाँ हैं- गढ़वाली, कुमाऊँनी, पश्चिमी पहाड़ी।

हिन्दी की 'लिपि' 'देवीनागरी' है। वर्तमान समय में पठन-पाठन, शासन-प्रशासन, पत्र-पत्रिकाओं में हिन्दी की एक बोली खड़ी बोली का प्रयोग किया जा रहा है। खड़ी बोली का मानक रूप राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर सम्पर्क साधक भाषा के रूप में प्रचलित है। खड़ी बोली के मानक रूप को हिन्दी भाषा के नाम से प्रतिष्ठा प्राप्त है। भाषा को मानक रूप देते हुए इसे व्याकरण बद्ध किया गया जिससे इसके स्वरूप में स्थिरता आयी और यह सरल, सुगम व सहज रूप से विशाल जन समुदाय के बीच विचार-विनिमय का माध्यम बनी। हिन्दी का व्याकरण मूलतः संस्कृत भाषा के व्याकरण पर आधारित है। वर्तमान समय में अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव ने इसे भी प्रभावित किया। समय-समय पर सरकारी व निजी स्तर की संस्थाओं के माध्यम से विद्वानों द्वारा इसके स्वरूप देने का प्रयास किया गया है हिन्दी अपने इस नवीन रूप के गठन में बदलाव और सुधार कर इसे नूतन स्वरूप के साथ बदलते परिवेश में भी मजबूती से अपनी जड़े जमाये रखने में सहायक रही है।

हिन्दी वर्णमाला में 11 स्वर, 33 व्यञ्जन हैं यानी कुल 52 वर्ण हैं जो इस प्रकार हैं-

स्वर- ह्रस्व स्वर - अ इ उ ऋ
दीर्घ स्वर - आ ई ऊ ए ऐ ओ औ
व्यंजन - स्पर्श व्यंजन - क ख ग घ ङ
च छ ज झ ञ
ट ठ ण ढ ण
त थ द ध न
प फ ब भ म
अंतस्थ व्यंजन- य र ल व
उष्म व्यंजन - श ष स ह
संयुक्त व्यंजन - क्ष त्र ज्ञ श्र
आगत व्यंजन- ड़ ढ़
अयोगवाह - अं (अनुस्वार) अः (विसर्ग)
ये हिन्दी भाषा का आधार हैं।

सत्य

स्वर्ग की सीढ़ी

राधा साह, बी.ए. प्रथम वर्ष

- मारना चाहते हो तो बुरी इच्छाओं को मारो।
- जीतना चाहते हो तो क्रोध और तृष्णाओं को जीतो।
- खाना चाहते हो तो गुस्से को खाओ।
- पीना चाहते हो तो ईश्वर भक्ति का शर्बत पीओ।
- पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहनो।
- देना चाहते हो तो नीची निगाह करके दो, और भूल जाओ।
- लेना चाहते हो तो माता-पिता और गुरु का आशीर्वाद लो।
- आना चाहते हो तो गरीबों की सहायता को आओ।
- बोलना चाहते हो तो सत्य और मीठे वचन बोलो।
- खरीदना चाहते हो तो प्रेम का सामान खरीदो।
- देखना चाहते हो तो अपनी बुराई को देखो।।

माँ ने दिया पेन्सिल जैसा बनने की आशीर्वाद

प्रियंका सुप्याल, छात्राध्यापिका-बी.एड.

कागज पर पेन्सिल से कुछ लिखती हुई माँ के पास जाकर जब बेटे ने पैर छुए तो माँ ने कहा- 'तुम पेन्सिल जैसे बनना। बेटे ने कहा क्यों माँ ? आइये जाने माँ ने क्या कहा.....

तुमने महान उपलब्धियाँ हासिल करने की योग्यता है, किन्तु यह न भूलो तुम्हें एक ऐसे हाथ की भी जरूरत होती है, जो तुम्हारा मार्गदर्शन करे।

छीलते समय पेन्सिल को कष्ट सहन करना पड़ता है। उसके बाद वह तेज और सुन्दर लिखती है। इसी तरह तुम भी दुख, अपमान और संघर्ष के समय धैर्य रखना, और उन्हें सहन करना। सुन्दर और बेहतर इंसान बन जाओगे।

पेन्सिल अपनी गलतियों को सुधारने के लिए रबड़ का इस्तेमाल करने की इजाज़त देती है। हमें भी अपनी गलतियों को सुधारने के लिए तैयार रहना चाहिए। इससे न्यायपूर्वक लक्ष्यों तक बढ़ने में मदद मिलती है।

पेन्सिल की कार्यप्रणाली में बाहरी की नहीं, बल्कि इसके भीतर के ग्रेफाइट की भूमिका होती है। लेड की गुणवत्ता अच्छी होगी तो लेख भी सुन्दर होगा। तुम भी बाहर की तुलना में आंतरिक सुन्दरता पर ध्यान देना।

पेन्सिल हमेशा अपना निशान छोड़ती है। ठीक इसी प्रकार तुम्हारा छोटे से छोटा काम अपना निशान छोड़ जाए। इसलिए ऐसा कर्म करना, जिसके निशानों को देखकर लज्जित न होना पड़े।

आलेख

प्रकृति के सुकुमार कवि 'पंत'

शिवानी त्रिपाठी, बी.ए. प्रथम वर्ष

प्रकृति के सुकुमार कवि 'सुमित्रानन्दन पन्त' मेरे प्रिय कवि हैं। छायावादी युग के ख्याति-प्राप्त कवि पन्त सात वर्ष की अल्पायु से ही कविताओं की रचना करने लगे थे। उनकी प्रथम रचना सन् 1916 ई. में सामने आई। 'गिरजे का घण्टा' नामक इस रचना के पश्चात् वे निरन्तर काव्य-साधना में लीन रहे। 1919 ई. में इलाहाबाद के 'म्योर कॉलेज' में प्रवेश लेने के पश्चात् उनकी काव्यात्मक रुचि और भी अधिक विकसित हुई। सन् 1920 ई. में उनकी रचनाएँ 'उच्छ्वास' एवं 'ग्रन्थि' प्रकाशित हुई। पन्त कोमल हृदय एवं सौन्दर्य से युक्त कवि थे। इन्होंने 'वीणा' एवं 'पल्लव' नामक काव्य-संग्रहों की रचना की। इसके पश्चात् प्रयाग आकर 'रूपाभ' नामक एक प्रगतिशील विचारों वाली पत्रिका का सम्पादन- प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसके पश्चात् वे महर्षि अरविन्द घोष से मिले और उनसे प्रभावित होकर अपने काव्य में उनके दर्शन को मुखरित किया। इन्हें इनकी रचना 'कला और बूढ़ा चाँद' पर साहित्य अकादमी, 'लोकायतन' पर 'सोवियत' और 'चिदम्बरा' पर 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' मिला। पन्त के काव्य में कल्पना एवं भावों की सुकुमार कोमलता के दर्शन होते हैं। इन्होंने प्रकृति एवं मानवीय भावों के चित्रण में विकृत तथा कठोर भावों को स्थान नहीं दिया है। इनकी छायावादी कविताएँ अत्यन्त कोमल एवं मृदुल भावों को अभिव्यक्त करती हैं। पन्त जी बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न साहित्यकार थे। 'लोकायतन' नामक काव्य में इनकी सांस्कृतिक और दार्शनिक विचारधारा व्यक्त हुई है। इस रचना में इन्होंने ग्राम्य-जीवन और जन-भावना को छन्दोबद्ध किया है। 'वीणा' में पन्त जी के प्रारम्भिक प्रकृति के अलौकिक सौन्दर्य से पूर्ण गीत संगृहीत हैं। 'पल्लव' में प्रेम प्रकृति और सौन्दर्य के व्यापक चित्र प्रस्तुत किए गए है। 'गुञ्जन' में प्रकृति-प्रेम और सौन्दर्य से संबंधित गम्भीर एवं प्रौढ़ रचनाएँ संकलित की गई हैं। 'ग्रन्थि' नामक काव्य-संग्रह में वियोग का स्वर प्रमुख रूप से मुखरित हुआ है। प्रकृति यहाँ भी कवि की सहचरी रही है। 'स्वर्णधूलि', 'स्वर्ण-किरण', 'युगपथ', 'उत्तरा' तथा 'आतिमा' आदि में पन्त जी महर्षि अरविन्द के नव-चेतनावाद से प्रभावित हैं। 'युगान्त', युगवाणी' और 'ग्राम्या' में कवि समाजवाद और भौतिक दर्शन की ओर उन्मुख हुआ है। इन रचनाओं में कवि ने दीन-हीन और शोषित वर्ग को अपने काव्य का आधार बनाया है। पन्त जी सौन्दर्य के उपासक थे। उनकी सौन्दर्यानुभूमि के तीन प्रमुख केन्द्र रहे हैं- प्रकृति, नारी तथा कला-सौन्दर्य। उनके काव्य-जीवन का प्रारम्भ ही प्रकृति-चित्रण से हुआ है। उनका सौन्दर्य प्रेमी मन प्रकृति को देखकर विभोर हो उठता है। 'वीणा' में कवि स्वयं को एक बालिका के रूप में अत्यधिक सहजता एवं कोमलता से चित्रित करता है। ऐसा वर्णन हिन्दी साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है। आगे चलकर 'गुंजन' आदि काव्य-रचनाओं में कविवर पन्त का प्रकृति प्रेम मांसल बन जाता है। वस्तुतः 'पल्लव' और 'गुंजन' में प्रकृति और नारी मिलकर एक हो गए है और कवि प्रकृति में ही नारी-सौन्दर्य का दर्शन करने लगता है, लेकिन प्रकृति के इस नारी-चित्रण में कवि सदैव एवं सर्वत्र पावनता ही देखना चाहता है कवि पन्त एक व्यक्तिवादी कलाकार के सम'न अन्तर्मुखी बनकर अपनी कल्पना को असीम गगन में खुलकर विचरण करने के लिए मुक्त करते हैं-

मधुरिमा के मधुमास
मेरा मधुकर का-सा जीवन
कठिन कर्म है, कोमल मन
विपुल मृदुल सुमनों से विकसित
विकसित है विस्तृत जग-जीवन।

कविवर पन्त जी का प्रिय रस श्रृंगार है; परन्तु उनके काव्य में शान्त, अद्भुत, करुण, रौद्र आदि रसों का भी सुन्दर प्रयोग अद्वितीय है। संयोग श्रृंगार की छटा दर्शनीय है-

इन्दु पर, उस इन्दु मुख पर साथ ही,
थे पड़े मेरे नयन, जो उदय से,
लाज से रक्तिम हुए थे, पूर्व को,
पूर्व था, पर वह द्वितीय अपूर्व था।

पन्त जी कविता की भाषा के लिए दो गुणों को आवश्यक मानते हैं- चित्रात्मकता और संगीतात्मकता। इसके लिए उन्होंने कविता की भाषा और भावों में पूर्ण सामंजस्य पर बल दिया है-

बाँसों का झुरमुट-
सन्ध्या का झुटपुट,
है चहक रही चिड़िया,
टी-वी-टी टुट् - टुट् ।

चित्रात्मकता तो पन्त की कविता का प्राण ही है। उनकी प्रकृति सम्बन्धी कविताओं में इस कला का चरमोत्कर्ष दिखाई पड़ता है। 'नौका-विहार' का एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

नौका से उठती जल-हिलोर,
हिल पड़ते नभ के ओर-छोर!
विस्फारित नयनों से निश्चल,
कुछ खोज रहे चल तारक दल।
ज्योतित कर नभ का अंतस्तल;
जिनके लघु दीपों को चञ्चल,
अंचल की ओट किए अविरल,
फिरती लहरें लुक-छिप पल-पल।

छायावाद ने अभिव्यक्ति की नयी शैली को अपनाया। इस नई शैली के कारण अलंकारों में भी नवीनता आई। यही कारण है कि पन्त के काव्य में भी नवीन अलंकारों के दर्शन होते हैं। उदाहरण के लिए मानवीकरण अलंकार का एक रूप देखें-

कहो तुम रूपसि कौन ?
व्योम से उतर रहीं चुपचाप,
छिपी निज छाया में छवि आप,
सुनहरी फैला केश-कलाप।

पन्त सी उपमाएँ अन्य कवियों की रचनाओं में बहुत कम मिलती हैं। वह एक के बाद दूसरी सुन्दर उपमाओं की लड़ी-सी बाँधते चलते हैं। वे कहीं सूक्ष्म की स्थूल से तथा कहीं स्थूल की सूक्ष्म से उपमा देने में अत्यन्त निपुण हैं। पन्त जी असाधारण प्रतिभा से सम्पन्न साहित्यकार थे। काव्य के भाव एवं कला, दोनों ही क्षेत्रों में वे एक महान् कवि सिद्ध हुए। पन्त जी युगद्रष्टा एवं युगस्रष्टा दोनों ही थे। छायावाद के युग-प्रवर्तक कवि के रूप में इन्हें अपार ख्याति प्राप्त हुई है। पन्त जी के काव्य का विवेचन करते हुए डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने लिखा है-

"पन्त केवल शब्द-शिल्पी ही नहीं, महान् भाव-शिल्पी भी हैं। वे सौन्दर्य के निरन्तर निखरते सूक्ष्म रूप को वाणी देने वाले और सम्पूर्ण युग को प्रेरणा देने वाले प्रभाव शिल्पी भी हैं।"

इनकी कविता 'ग्राम्य श्री' मुझे अत्यन्त प्रिय है। इस कविता की कुछ पंक्तियाँ लिखकर लेख समाप्त करती हूँ-

फैली खेतों में दूर तलक,
मखमल सी कोमल हरियाली,
लिपटी जिससे रवि की किरणें,
चाँदी की-सी उजली जाली।
अब रजत स्वर्ण मंजरियों से,
लद गई आम्र तरु की डाली,
झर रहे ढाक-पीपल के दल,
हो उठी कोकिला मतवाली।

आलेख

शक्ति का पुंज नारी

प्रिया गुप्ता, बी.कॉम- द्वितीय वर्ष

भारतीय संस्कृति में सदा से नारी को अति उच्च स्थान दिया जाता रहा है। उसे मातृशक्ति की प्रतीक 'देवी' की संज्ञा दी जाती रही है। मनु ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि-जहाँ नारी की पूजा होगी, वहाँ देवताओं का वास होगा।" यहाँ पूजा शब्द का अर्थ पुष्प, धूप, दीप से नहीं वरन् सम्मान देने एवं प्रसन्न मनःस्थिति में रखने के लिए किए गए व्यवहारों से है।

नारी 'शक्ति' का सघन पुंज है। शक्ति तो शक्ति है, वह जहाँ पर लगेगी, अपना परिचय देगी। कभी नारी वात्सल्य एवं ममता की प्रतिरूप होती है तो कभी अपनी दृढ़ता ओर साहस का परिचय देती हुए हुंकार भरती है।

आज वर्तमान स्थिति में, समाज के हर क्षेत्र में नारी का परोक्ष-अपरोक्ष रूप से प्रवेश हो चुका है। आज तो कई ऐसे प्रतिष्ठान एवं संस्थाएं है, जिन्हें केवल महिलाएं संचालित करती हैं। व्यापार, तकनीकी एवं इंजीनियरिंग जैसे पेचिदा विषयों में नारी का दखल देखते ही बनता है।

स्वामी विवेकानंद जी का कहना है कि- "नारी का उत्थान स्वयं नारी ही करेगी कोई और उसे उठा नहीं सकता। वह स्वयं उठेगी। बस उठने में उसे सहयोग की आवश्यकता है और जब उठ खड़ी होगी तो दुनिया की कोई ताकत उसे रोक नहीं सकेगी। वह उठेगी और समस्त विश्व को अपनी जादुई कुशलता से चमत्कृत करेगी।" आज नारी जागरूक हो चुकी है लेकिन उसे स्वयं में पवित्रता और साहस, शौर्य को फिर बढ़ाना होगा ताकि कोई उसका गलत उपयोग न कर सके।

नारी के सघन संवेदनशील शक्ति होती है। नारी की प्रकृति बड़ी अनोखी एवं बेजोड़ मानी जाती है। इसमें करुणा है, तो निष्ठुरता भी। त्याग भी है तो मोह का प्रचंड चक्रवात भी। नारी के स्वभाव में दया, सेवा, करुणा, सद्भावना, क्षमा जैसे दिव्य गुणों का बाहुल्य रहता है।

अतंतः नारी श्रद्धा है, पवित्रता है, कला है, और वह सब कुछ है, जो इस संसार में, सर्वश्रेष्ठ के रूप में दृष्टिगोचर होता है। नारी कामधेनु है, अन्नपूर्णा है, श्रद्धा है, सिद्धि है। बस जरूरत है नारी शक्ति को सद्भावना से सींचा जाए, इसे पुष्पित पल्लवित होने का अवसर दिया जाए।

कविता

एक लड़की

नेहा दुबे, बी.ए. प्रथम वर्ष

अपनों के हाथों पिसती है लड़की
किस्मत के आगे झुकती है लड़की
जब बात हो परिवार के दर्द की
तो खुद भी दर्द में होती है लड़की।
परिवार और उनकी खुशियों के लिए
अपने सपनों को खोती है लड़की
नादान लोग, जानते नहीं कि बोझ नहीं
कल की खुलती किस्मत है लड़की।
कोई भविष्य नहीं कल, बिना लड़की
खूँटे से बंधी जैसी गाय है लड़की
कभी यहाँ तो कभी वहाँ
बाँधी जाती है लड़की।
लड़की के सपनों का कोई मोल नहीं
और उसके हद का कोई छोर नहीं
मिट्टी के जैसे कोमल होती है लड़की
जैसा सांचा वैसे ढलती है लड़की।
माँ-बाप जैसा कहे वैसा करती है लड़की
इतने पर क्या, वह खुश रहती होगी
जाने क्या-क्या सहती होगी
बाबुल की लाज होती है लड़की।
जीवन जीना सिखाती है लड़की
वंश को आगे बढ़ाती है लड़की
लड़कों से बढ़कर होती है लड़की
फिर जाने क्यों लोग, नहीं चाहते लड़की।।

सूक्ति– मौक्तिकानि

अर्चना कुमारी, बी.ए. प्रथम वर्ष

(1) धर्मार्थकाम मोक्षाणामारोग्यं मूल मुत्तमम् ।

निरोगी होना व्यक्ति की प्रथम आवश्यकता है। स्वस्थ शरीर के द्वारा ही धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि संभव है।

(2) जीवितं यः स्वयं चेच्छेत् कथं सोऽन्यं प्रघातयेत् ।

जो स्वयं कष्टहीन जीवन जीना चाहता है, उसे दूसरों को पीड़ा नहीं पहुँचानी चाहिए।

(3) क्रियासिद्धिः सत्वे भवति महतां नोपकरणे।

महापुरूष अपने लक्ष्य की सिद्धि अपने पराक्रम द्वारा करते हें, उन्हें साधनों की अपेक्षा नहीं होती।

(4) महान् महत्स्वेषु करोति विक्रमम् ।

पराक्रमी व्यक्ति निर्बल पर अपना पराक्रम नहीं दिखाता वह अपने बल का प्रदर्शन अपने समान बलिष्ठ व्यक्ति के समक्ष ही करता है।

(5) अतिलोभो न कर्त्तव्यः स तु दुःखस्य कारणम् ।

अत्यधिक लोभ अनेक विपत्तियों को निमन्त्रण देता है जो दुःख का कारण बनती है।

(6) अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति।

कुमार्गगामी व्यक्ति का साथ उसके सगे-सम्बन्धी भी छोड़ देते हैं।

(7) केतकीगन्धमाघ्रातुं स्वयमायान्ति षद्पदाः।

गुणी व्यक्ति को अपने गुणों का बखान करने की आवश्यकता नहीं होती। केतकी की सुगन्ध पाकर भौंरे स्वतः खिंचे चले आते हैं।

(8) ज्ञानं भारः क्रिया बिना।

अर्जित ज्ञान को यदि व्यवहार में न लाया जाये तो वह मस्तिष्क के लिए भार के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

(9) अति परिचयादवज्ञा भवति।

बुद्धिमान मनुष्य अति घनिष्ठता से दूर रहते है, क्योंकि उससे तिरस्कार ही मिलता है।

(10) हितं मनोहारि च दुर्लभः वचः।

हितकारी एवं मन को प्रिय लगने वाले वचन एक साथ मिलना दुर्लभ है।

अतिलोभो न कर्त्तव्यः

कोमल केसरवानी, बी.ए. प्रथम वर्ष

एकस्मिन् देशे कश्चिद राजा आसीत् । तस्य नाम मायादासः। अतिलुब्धः सः दरिद्रः इव जीवनं नयति स्म। एकदा कोऽपि मुनिः मायादासस्य प्रासादम् आगच्छत् । नृपतिः तं मुनिम् सत्कारेणातोषयत् । नृपतिना सत्कृतः सन्तुष्टः मुनिः अवदत नृपते! स्वस्त्यस्त ते । अभीष्टं वरं वरय इति। मुनिनैवम् उक्तः सः भूपतिः लोभेन प्रेरितः वरम् अयाचत-मया स्पृश्यमानाः पदार्थाः सौवर्णाः भवन्तु इति। तथास्तु इत्युक्त्वा मुनिः अन्तर्हिताः।

मुनेः वरं लब्ध्वा गृहम् प्रविष्टः मायादासः तत्र स्थितानि वस्तूनि अस्पृशत् । तेन स्पृष्टानि वस्तूनि सद्यः एव सौवर्णानि जातानि। तद् दृष्ट्वा सः नितरामतुष्यत् । ततः तस्य महती पिपासा जाता। सः जलं पातुम् उद्यतः अभवत् तेन स्पृष्टं जलमपि सुवर्णपिण्डमभवत् । साधूक्तं न मृषा भवति।

तस्मिन् अवसरे राजकुमारी कुसुममञ्जरीमादाय तत्रागता "पितः! अतीव सुन्दाणीमानि कुसुमानि" इति चावदत् । नृपतिः तां मञ्जरीं करेणास्पृशत् । तेन स्पृष्टा मञ्जरी सुवर्णमयी जाता। तद् दृष्ट्वा कुमारी दुःखिता अभवत। सुतां समाश्वासयितुम् प्रवृत्तः सः मायादासः ताम् अङ्के उपवेशयति स्म। हन्त! कुमारी सुवर्णप्रतिमा सञ्जाता। मायादासः शोकेनोच्चैः व्यलपत् । तदा भाग्यात् स एव मुनिः नृपते पुरतः प्रत्यक्षम् अभवत् । मायादास ते प्रणम्य- "महर्षे ! कृपया दत्तं वरम् निवर्तयतु। इयंम् कुमारी मम् जीवितं स्यात् " इति न्यवेदयत् ।

महर्षि अवदत् - 'मायादास! त्वया सुवर्णस्य महत्वं गणितम् । वस्तुतः तत् तुच्छम् । उद्यानात् जलमानय। तेन जलेन सिक्तानि वस्तूनि पूर्वामवस्थां प्राप्स्यन्ति।' इत्युक्त्वा मुनिः तत्रैवान्तर्हितः। मायादासः उदयानात् जलमानयत्। तेन जलेन सिक्तानि सौवर्णानि वस्तूनि स्वां प्रकृतिं प्राप्तानि।

सजकुमार्यपि मन्दं हसन्ती पितुः मानसमतोषयत् । सत्यम् उक्तम् -

"अतिलोभो न कर्त्तव्यः, स तु दुखस्य कारणम् ।"

कः बलवान् ?

शिवानी त्रिपाठी, बी.ए. प्रथम वर्ष

पुरातनकाले गङ्गातीरे एकः आश्रमः आसीत् । तत्र याज्ञवल्क्यः नाम महर्षिः वसति स्म। सः श्येनमुखात् पतिताम् एकां मूषिका दृष्टवान। करूणया सः तां मूषिकाम् आश्रमं प्रति नीतवान् ।तत्र मन्त्रबलेन तां कन्यकां कृतवान् । याज्ञवल्क्यस्य सन्ततिः न आसीत् । अतः तां कन्यकां स्वपुत्रीवत् पलितवान् सः।

कालान्तरे सा कन्यका विवाहयोग्या अभवत् । याज्ञवल्क्यः सूर्येण सह तस्याः विवाहं कारयितुम् इष्टवान् । अतः सः पुत्रीं पृष्टवान् 'भवती सूर्यं परिणेष्यति किम् ?' इति।

तदा सा उक्तवती- "अहं सूर्यस्य तापं सोढुं न शक्नोमि। अतः इतोऽपि उत्तमम् अन्यं वरम् सूचयतु" इति।

ऋषिः सूर्यम् एवं पृष्टवान् - "भगवन ! भवतः अपेक्षया उत्तमः वरः कः ?" इति।

सूर्यः उक्तवान् - "मेघः माम् आच्छाय तिष्ठति। सः मम् अपेक्षया बलवान्, योग्यः अपि" इति।

ऋषिः मेघम् आहूतवान् । पुनः पुत्रीं दृष्टवान् प्रश्नं पृष्टवान् - "भवती एतं परिणेष्यति किम् ?" इति।

सा उक्तवती- "एतस्य वर्णः कृष्णः। अतः एषः मास्तु। इतोऽपि उत्तमं वरं सूचयतु" इति।

ऋषिः मेघं पृष्टवान् । मेघः उक्तवान् - "यद्यपि अहं सूर्यम् आच्छादय तिष्ठामि तथापि वायुः सहस्रधा मम विभागं करोति। अतः सः एव मम अपेक्षया वलवान्" इति।

ऋषिः वायुम् आहूतवान् । परन्तु पुत्री वायुम् अपि न इष्टवती। "इतोऽपि बलवान् कः अस्ति" इति पृष्टवती।

"यद्यपि अहं मेघस्य सहस्रधा विभागं करोमि तथापि अहं पर्वतं कम्पयितुं न शक्नोमि। अतः पर्वतः एव बलवान्" अनन्तरं ऋषिः पर्वतम् आहूतवान् ।

परन्तु पर्वतः उक्तवान् - "यद्यपि अहं बलवान्, तथापि मूषकः मम् शरीरे सर्वत्र बिलं करोति। अतः मूषकः एव मम अपेक्षया बलवान्" इति।

ऋषिः मूषक आहूतवान् । पुत्री पृष्टवान् - "भवती एतं परिणेष्यति किम् ?" इति । सा सन्तोषेण तम् अङ्गीकृतवती। अनन्तरं ऋषिः तां मूषिकां कृत्वां मूषकेण सह तस्याः विवाहं कारितवान् ।

रेन्जर

जागरूक और उत्तरदायी नागरिक निर्मित कर समाज, राष्ट्र और विश्व सेवा के लिये सदा तत्पर रहने वाला प्रशिक्षण रेन्जर है।

महाविद्यालय में पाँच दिवसीय शिविर में डी.टी.सी. गाइड श्रीमती ऊषा कुशवाहा ने 55 रेन्जर्स निपुण और डॉ. रेखा रानी ने प्रवेश का प्रशिक्षण दिया।

शिविर में रेन्जर के नियम, सिद्धान्त, प्रतिज्ञा तथा उद्देश्य आदि से अवगत कराते हुयें उन्हें प्रार्थना गीत, झण्डा गीत का अभ्यास कराया गया। विभिन्न प्रकार की गांठे बांधना और तालियां, तम्बू गाड़ना, पुल बनाना, प्राथमिक चिकित्सा, एक बर्तन, एक तीली से खाना बनाना भी छात्राओं को सिखाया गया।

शिविर के अन्तिम दो दिनों में रेन्जर्स ने जनपदीय रैली में भाग लिया। सक्रिय सहभागिता से महाविद्यालय रेंजर्स को उपजेता के लिये शील्ड प्रदान की गयी।

एन.सी.सी.

गणतन्त्र दिवस पर महामहिम राष्ट्रपति
श्री प्रणव मुखर्जी महानिदेशक
लेफ्टिनेन्ट जनरल श्री अनिरूद्ध चक्रवर्ती
के साथ लेफ्टिनेन्ट डॉ. रेखा रानी

ग्रुप कमाण्डर के.ए. महावीर से
हाथ मिलती कैडेट रचना
कौशल

पायलेटिंग करती
कैडेट दुर्गेश नंदनी

ऋतुवर्णनम्

मोहिनी मिश्रा, बी.ए. प्रथम वर्ष

वर्षा ऋतु-

- स्वनैर्घनानां प्लवगाः प्रबुद्धा विहाय निद्रां चिरसन्निरूद्धाम् ।
  अनेकरूपाकृतिवर्णनादाः नवाम्बुधाराभिहताः नदन्ति ।।1।।
- मत्ता गजेन्द्राः मुदिता गवेन्द्राः वनेषु विक्रान्ततरा मृगेन्द्राः।
  रम्या नगेन्द्राः निभृता नरेन्द्राः प्रकीडितो वारिधरैः सुरन्द्रः।।
- वर्षप्रवेगाः विपुलाः पतन्ति प्रवान्ति वाताः समुदीर्णवेगाः।
  प्रनष्टकूलाः प्रवहन्ति शीघ्रं नद्यो जलं विप्रतिपन्नमार्गाः।।
- घनोपगूढं गगनं न तारा न भास्करो दर्शनमभ्युपैति।
  नवैर्जलौघैर्धरणी वितृप्ता तमोविलिप्ता न दिशः प्रकाशाः ।।
- महान्ति कूटानि महीधराणां धाराविधौतान्यधिकं विभन्ति।
  महाप्रमाणेर्विपुलैः प्रपातैर्मुक्ताकलापैरिव लम्बमानैः।।

हेमन्तः ऋतु

- अत्यन्तः सुख-सञ्चारा मध्यान्हे स्पर्शतः सुखाः।
  दिवसाः सुभगादित्याः छायासलिलदुर्भगाः।।
- खर्जूरपुष्पाकृतिभिः शिरोभिः पूर्णतण्डुलैः।
  शोभन्ते किञ्चदालम्बाः शालयः कनकप्रभाः।।
- एते हि समुपासीना विहगाः जलचारिणः।
  नासगाहन्ति सलिलमप्रगल्भा इवाहवम् ।।
- अवश्यायतमोनद्धा नीहारतसावृताः।
  प्रसुप्ता इव लक्ष्यन्ते विपुष्पाः वनराजयः।।

वसन्तः ऋतु

मोहिनी मिश्रा, बी.ए. प्रथम वष

- सुखानिलोऽयं सौमित्रे कालः प्रचुरमन्मथः।
  गन्धवान् सुरभिर्मासो जातपुष्पफलद्रुमः।।
- पश्य रूपाणि सौमित्रे वनानां पुष्पशलिनाम् ।
  सृजतां पुष्पवर्षाणि वर्ष तोयमुचामिव।।
- प्रस्तरेषु च रम्येषु विविधाः काननद्रुमाः।
  वायुवेगप्रचलिताः पुष्पैरवकिरन्ति गाम् ।।
- अमी पवनविक्षिप्ता विनदन्तीव पादपाः।
  षट्पदैरनुकूजभ्दिः वनेषु मदगन्धिषु ।।
- सुपुष्पितांस्तु पश्यैतान् कर्णिकारान् समन्ततः।
  हाटक प्रतिसञ्छन्नान् नरान् पीताम्बरानिव।।

सूक्तयः

प्रगति चौधरी, बी.ए. प्रथम वर्ष

माता भूमिः पुत्रोऽहम् पृथिव्याः।
वीरभोग्या वसुन्धरा।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।
परोपकाराय सतां विभूतयः।
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
अक्रोधेन जयेत् क्रोधम् ।
सत्यमेव जयते नानृतम् ।
क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे।
उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम् ।

एन.सी.सी.

नैशनल कैडेट कोर का प्रमुख उद्देश्य कैडेट के व्यक्तित्व का विकास कर उसे कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाना है। इसी उद्देश्य से महाविद्यालय में 2008–09 से 6 यू. पी. गर्ल्स बटालियन एन.सी.सी. की प्लाटून अर्थात 55 कैडेट्स कार्यरत हैं। सत्र भर आयोजित प्रशिक्षण एवं अन्य गतिविधियों से कैडेट को शारीरिक और मानसिक दक्षता प्रदान कर राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति जागरूक कर कर्तव्य बोध कराया जाता है। प्रशिक्षण और दक्षता के परिणाम स्वरूप कैडेट्स ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्थान अर्जित कर महाविद्यालय गौरव में वृद्धि की। अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस पर भारत वर्ष में एन.सी.सी. ने लिमका बुक ऑफ रिकार्ड में नाम दर्ज कराया। जिसमें 6 यू.पी. गर्ल्स बटालियन के अन्तर्गत महाविद्यालय कैडेट्स ने भी प्रतिभागिता की। राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता वॉलीबॉल दिल्ली में बी.ए. तृतीय वर्ष की दीपषिखा सिंह का चयन नेषनल वॉली बॉल टीम के लिये हुआ। एडवंचर माउण्टेनरिंग दार्जिलिंग में बी.ए. द्वितीय वर्ष की ज्योति कुमारी ने प्रतिभागिता की। ग्रुप पेट्रोलिंग और ग्रुप एडवेंचर में कैडेट को 2 स्वर्ण पदक प्राप्त हुए। राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित उत्तर प्रदेष नेषनल इंटीग्रेटेड प्रतियोगिता (UPNIC) में महाविद्यालय के तीन कैडेट ने प्रतिभागिता की। उत्तर प्रदेश एन.सी.सी. निदेशालय के अपर महानिदेशक मेजर जनरल एस.एस. मामक के स्वागत में कैडेट दुर्गेष नंदनी ने पॉयलेटिंग किया और पायलेटिंग में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। **Best Table Drill** के लिये कैडेट नेहा व कैडेट सृष्टि कुषवाहा ने स्वर्ण पदक प्राप्त किया। **UPNIAP** में उत्तर प्रदेष को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। जिसका नेतृत्व बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की कैडेट नेहा तथा बी.ए. प्रथम वर्ष की सृष्टि कुषवाहा ने किया। प्रादेशिक स्तर पर इंटीग्रेटेड ग्रुप कंपटीषन **IGC** (जिसमें फ्लैग एरिया का विषय था संभावनाओं का प्रदेश) में बी.ए. द्वितीय वर्ष की रचना कौषल और सृष्टि पाल का चयन हुआ। खेल प्रतियोगिता कबड्डी में प्रादेशिक स्तर पर आगरा के लिये बी.कॉम. द्वितीय वर्ष की कैडेट नेहा का चयन हुआ। कैडेट्स को सेना द्वारा युद्ध कौशल में प्रयोग होने वाले हथियारों की जानकारी देने के लिये हथियारों की प्रदर्शनी आयोजित की गई। जिसमें एस एल आर, टैंक, तोपगाड़ी, लाइट मशीन गन, रॉकेट लांचर, सैटेलाइट आदि के प्रयोग संबंधी जानकारी प्रदान की गयी। सरदार वल्लभ भाई पटेल जयंती अर्थात् राष्ट्रीय एकता दिवस पर स्वच्छ भारत अभियान राष्ट्रीय कार्यक्रम संबंधी जागरूकता के लिये रैली का आयोजन किया गया। महाविद्यालय में संचालित पॉलिथीन मुक्त वातावरण कार्यक्रम में कैडेट्स ने पॉलिथीन प्रयोग न करने की शपथ ली और समस्या को जड़ से उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया। SPL शिविर फतेहगढ़ के लिये अर्पिता बनर्जी, स्वाति यादव, दीपषिखा शुक्ला, मंजरी शुक्ला और राधा निषाद का चयन हुआ।

राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता दिल्ली में वॉली बॉल में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिये बी.ए. तृतीय वर्ष की दीप शिखा सिंह को सम्मानित किया गया। गणतंत्र दिवस पर महाविद्यालय कैडेट्स ने मार्च पास्ट कर झण्डे को सलामी दी। कपूर एण्ड संस के सौजन्य से बी.ए. प्रथम वर्ष की कु. सोनी को उत्साह वर्धन हेतु सारस्वत खत्री पाठशाला द्वारा हीरो साइकिल प्रदान की गयी।

वीराङ्गना विश्पला

सपना केसरवानी, बी.ए. प्रथम वर्ष

वैदिकयुगे कश्चित् 'खेलः' इति नाम्ना प्रसिद्धः राजा आसीत् । सः क्रीडायाम् अतीव कुशलः, विशेषज्ञः च आसीत्, अतएव तस्य नाम 'खेलः' इति आसीत् ।

तस्य पत्नी अतीव युद्धनिपुणा वीराङ्गना आसीत्, यस्या नाम, 'विश्पला' इति आसीत् ।

एकस्मिन् युद्धे सा युद्धं कुर्वन्ती शत्रुभिः परिवेष्टिता जाता, तस्याः द्वौ अपि पादौ छिन्नौ, सा विकलाङ्गी अभवत्, परन्तु वीराङ्गना विश्पला हतोत्साहा न जाता, तस्याः साहसं वीरताम् उत्साहं च दृष्ट्वा खेलराजस्य मार्गनिर्देशकः अगस्त्यः तस्याम् एव रात्रौ देवचिकित्सकौ अश्विनीकुमारौ आहूतवान्, तौ च विश्पलायै लौहनिर्मितौ पादौ अकल्पयताम् । सा च वीराङ्गना ततः अतीवोत्साहयुक्ता शत्रुभिः निहितं धनं जितवती।

इत्थं पूर्वं विकलाङ्गी अपि विश्पला वीराङ्गना लौहपादसाहाय्येन शत्रून जित्वां तदीयं धनम् आहृतवती। अतः एवोक्तम् -

"क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे।" इति

विजयादशमी

नलिनी निषाद, बी.ए. तृतीय वर्ष

भारतीयाः उत्सवप्रियाः भवन्ति। अतएव भारते उत्सवानाम् आधिक्यं दृश्यते नानाविधेषु भारतीयोत्सवेषु विजयादशमी विशिष्टोत्सवः अस्ति आश्विनमासस्य शुक्लपक्षस्य दशमी विजयादशमी कथ्यते। अयं वीराणां महोत्सवः अपि कथ्यते एवं श्रूयते यद् अस्मिन् एव दिने भगवान् रामचन्द्रः रावणस्य वधार्थं यात्रा कृतवान् । यथोक्तम् अथ विजयदशम्यामाश्विने शुक्लपक्षे दशमुखनिधनाय प्रस्थितो रामचन्द्रः।

एतस्मिन् दिवसे श्रीरामः राक्षसराजस्य रावणस्य वधमकरोत अतएव रावणोपरि श्रीरामचन्द्रस्य विजयकारणात् एव अस्य उत्सवस्य नीलकण्ट पक्षिणः दर्शनं शुभं भवति अस्मिन् दिवसे भारतवर्षस्य नगरे-नगरे ग्रामे-ग्रामे च रामलीलायाः प्रदर्शनं भवति तत्र अर्धमस्य अहंकारस्य च प्रतीकरूपस्य रावणस्य अग्निदाहः भवति।

अश्र सर्वेषु प्रतीकेषु असतः पराजयः सतः विजयश्च सन्निहितो वर्तते। अयम् उत्सवः "असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय" इति शिक्षां ददाति।

सुभाषितानि

प्रगति चौधरी, बी.ए. प्रथम वर्ष

न त्वहं कायमे राज्यं न स्वर्ग नापुनर्भवम् ।
कामये दुःखतप्तानां प्राणिनामर्तिनाशनम् ।।1।।
छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे ।
फलान्यपि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरूषाः इव ।।2।।
आत्मार्थं जीवलोकेऽस्मिन् को न जीवति मानवः ।
परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति ।।3।।
सदयं हृदयं यस्य भाषितम् सत्यभूषितम् ।
कायः परहिते यस्य कलिस्तस्य करोमि किम् ? ।।4।।
वृत्तं यत्नेन संरक्षेत् वित्तमेति च याति च ।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः ।।5।।
काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम् ।
व्यसनेन तु मूर्खाणं निद्रया कलहेन वा ।।6।।
धीराः शोकं तरिष्यन्ति लभन्ते सिद्धिमत्तुमाम् ।
धीरैः सम्प्राप्यते लक्ष्मीः धैर्यं सर्वत्र साधनम् ।।7।।
कामं क्रोधं तथा लोभं स्वादं श्रृंगारकौतुके ।
अतिनिद्रातिसेवे च विद्यार्थी ह्यष्ट वर्जयेत ।।8।।

समयः

शिवानी त्रिपाठी, बी.ए. प्रथम वर्ष

समयः निरन्तरं चलति,
न कदापि सुस्थः भवति,
यः अस्य पालनं करोति,
सः एव सर्वदा उत्तमं फलं खादति,
अस्यं एकं-एकं क्षणं मूल्यावान् अस्ति।
अयं कस्यापि प्रतीक्षां न करोति,
न अयं कस्यापि मित्रम् ,
न अस्य कोऽपि गुरूः,
यदि अस्य कोऽपि दुरूपयोगः करोति,
सः कदापि प्रगति न कर्तुं शक्नोति।
अयं जीवनस्य आधारः अस्ति,
अयमेव जीवव्य सारः अस्ति,
शिक्षा-
अतः अस्माभिः सर्वैः समयस्य पालनम
करणीयम् । इदं सफलतायाः मंत्रः अस्ति
"काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छतिधीमताम् ।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा।।"

सुवचनानि

नलिनी निषाद, बी.ए. तृतीय वर्ष

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम् ।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करष्यिति।।1।।
अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम् ।।2।।
प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात् प्रियं हि वक्तव्यं वचने का दरिद्रता ।।3।।
अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहिंत च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ।।4।।
सर्पा पिबन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते
शुष्कैः तृषैः वनगजाः बलिनो भवन्ति
वन्यैः फलैर्मुनिवराः क्षपयन्ति कालम्
सन्तोष एव पुरूषस्य परं निधानम् ।।5।।

समयस्य सदुप्रयोगः

नलिनी निषाद, बी.ए. तृतीय वर्ष

अस्मिन् संसारे मानवजीवनं दुर्लभम् अस्ति। तत्र मानवजन्म गृहीत्वा अपि मानवः समयस्य महत्वं न जानाति मानवजीवने समयस्य बहु महत्वं वर्तते।

संसारे अन्यानि वस्तूनि विनष्टानि पुनरपि लब्धुं शक्यन्ते परं समयः विनष्टः केनापि उपायेन पुनः लब्धुं न शक्यते। यस्य आयुषः यः अंशः निरर्थकः गतः सः गतः एव। अतः तथा प्रयतितत्यं यथा एकस्यापि क्षणस्य दुरूपयोगः न स्यात् यतः समयः कस्यापि प्रतीक्षां न करोति।

लोके बहवो जनाः वृथैव इतस्ततः भ्रमणः कृत्वा समयं यापयन्ति। केचिद् तु आलस्येन निरन्तरं तिष्ठश्रैव सन्ति। आलस्येन ते दैनिककार्याणि अपि नियमतः न कुर्वन्ति। अतस्ते रूग्णाः भवन्ति। केचन तु धूते, कलहे, चाटुकारितायां च समस्तं समयं नयन्ति। निजतीवनस्य च बहुमूल्यम् अंश वृथा यापयन्ति। एवं समयस्य सदुप्रयोगः मानवानां कल्याणाय भवति। समयस्य सदुपयोगः जीवन सफलतायाः प्रथमं सोपानं समुत्रतेः मूलमन्त्रम् आत्मनिर्माणस्य च परमसाधनमस्ति।

श्रमः एव विजयते

(परिश्रम की ही जय होती है)

कोमल केसरवानी, बी.ए. प्रथम वर्ष

अमरेकिादेशे एकस्मिन् स्थाने सैनिकानाम् आवासाय निमार्णकार्यं प्रचलद् आसीत् । तत्र द्वारादिनिनिर्माणहेतोः काष्ठस्य गुरूतरः खण्डः नीयते स्मः। केचित् सैनिकाः वृहत्कायं तं काष्ठखण्डं भूमेः उत्थाप्य यानम् आरोपयितुं यतमानाः आसन् । किन्तु काष्ठस्य अतिभारवत्वात् बहुप्रत्यये अपि ते अक्षमा जाताः।

तेषां सैनिकानाम् एकः नायकः अपि आसीत् य दूरत एव अधिकबलप्रयोगाय तान् प्रेरयति स्म। अत्रान्तरे कश्चित् तुरङ्गाधिरूढः आगच्छन् तत्र प्राप्तः। सः भारवहने अक्षमान् सैनिकान् विलोकयन् नायकम् अवदत् - किं पश्यति भवान् ? यदि एतेषां सहयोगं भवान् कुर्यात, तदा कार्यं सुकरं स्यात् ।

नायकः प्रोवाच - किं न वेत्ति भवान् ? अहम् एतेषाम् अधिकारी अस्मि। कथम् एतैः सह कार्यं कुर्याम् ? तत्कथनम् श्रुत्वा सः अश्ववादी अश्वाद् आवातरत् निजं कोटपरिधानं च अवतार्य भूमौ न्यदधात् ततः असौ काष्ठखण्डस्य उन्नयने सैनिकैः साकं बलं साहाय्यम् अकरोत् । काष्ठखण्डः याने आरोपितः अभवत् ।

सर्वे तस्य सहयोगं प्राशंसन् । नायकः अपि धन्यवादं वितीर्णवान् । तदनु स आगन्तुकः पुनः अश्वम् आरूह्य नायकम् अभाषत् - महाशयः! यदा कदाचिद् ईदृशः अवसरः आपतेत् , प्रधानसेनापतिः वाशिंगटनः स्मर्यताम् । स पुनरपि आगभिष्यति। स्वसेनापतिं वाशिंगटनम् अभिजानन् स नायकः लज्जितो भूत्वा क्षमाम् अयाचत् ।

वाशिंगटनः अभाषत- "कर्त्तव्ये कर्मणि गुरूता लघुता वा भवति। एतद् भूयोभूयः अवधेयं।"

विश्वबन्धुत्वम

सपना केसरवानी, बी.ए. प्रथम वर्ष

विश्वस्य सर्वान् जनान् प्रति बन्धुत्वस्य भावः एकः भावः एव विश्वबन्धुत्वम् इति कथ्यते। शान्तिमयाय जीवनाय विश्वबन्धुत्वस्य भावनां नितरां महत्त्वं भजते। भावनैषा अपरिहार्या आवश्यकता। सर्वजनहितम् सर्वजनसुखम् च बन्धुत्वं बिना न सम्भवति। विश्वबन्धुत्वम् एव दृष्टौ निधाय केनापि मनीषिणा निर्दिष्टम् -

"अय निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।"

साम्प्रतम् अखिले जगति कलहस्य अशान्तेः च साम्राज्य व्याप्तम् अस्ति, येन साधन सम्पन्नः अपि मानवः सुखस्य-स्थाने दुःखम् एव अनुभवति। यद्यपि ज्ञानबलेन मानवः इदानीं वायुयानेन आकाशे विचरितुं, जलपोतेन सागरान् सन्ततु, रेल यानेन विश्वभ्रमणं कर्तुं, ग्रहयानेन चन्द्रादिग्रहेषु च गन्तुं समर्थः अस्ति गन्तुं समर्थः अस्ति, तथापि परस्परं सम्बन्धानाम कटुतया स अशान्तः एव दृश्यते, कष्टम् च अनुभवति। अस्य प्रधानं कारणं विश्वबन्धुत्वस्य अभावः एव।

विगतयोः द्वयोः विश्वयुद्धयोः विनाशलीलां सर्वे जानन्ति एव। इदानीं तृतीयस्य युद्धस्य सम्भावना सर्वदा मानवजातिम् आक्रान्तां करोति, येन विश्वस्य भयंकरो नाशो भवितुं शक्नोति। अतः आवश्यकता अस्ति यत् मानवः मानवं प्रति बन्धुवत् आचरणम् कुर्यात् । एकः देशः अन्येन देशेन सह बन्धुतायाः व्यवहारं कुर्यात् । सबलाः देशाः दुर्बलानां देशानाम् उपरि आक्रमणम् न कुर्युः। स्वार्थस्य लोलुपतायाः महत्वाकाङ्क्षायाः च स्थाने परोपकारस्य, दयायाः त्यागस्य, परस्परं सहयोगस्य च प्रसारो भवेत्। त्यागस्य, परस्परं सहयोगस्य च प्रसारो भवेत्

यद्यपि शान्तिस्थापनार्थं संयुक्तराष्ट्रसंघः, निर्गुटान्दोलनम् अन्यानि संघटनानि च सततं प्रयानं प्रयत्नं कुर्वन्ति, तथापि स्वार्थस्य, अहंकारस्य, शक्ति-वर्धनस्य च दूषितेन भावेन भ्रान्ताः केचिद् देशाः संघर्षरताः सन्ति, येन विरोधः अशान्तिश्च वर्धते। अनेन मानवः एव मानवहन्त सञ्जातः। सर्वत्र प्रेम्णः बन्धुत्वस्य च अभावो वर्तते, याभ्यां बिना शान्तिः जीवने दुर्लभा जाता।

संसारे सर्वेषु मानवेषु समानं रक्तं प्रवहति, सर्वेषां च नियन्तैकः एव अस्ति। एतत्सर्वं जानन्तः अपि जनाः स्वार्थपरायणतया परस्परम् कलहं कुर्वन्ति। अस्य मूलं कारणम् विश्वबन्धुत्वस्य अभावं एव अस्ति। अत एव सर्वेषु बन्धुत्वम् भावना नितान्तम अपेक्षिता वर्तते।

विश्वबन्धुत्वे इयमेव भावना सन्निहिता विद्यते-

"सर्वे भवन्तु सुखिनः,
सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु,
मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत् ।।"

प्रहेलिका

शिवानी त्रिपाठी, बी.ए. प्रथम वर्ष

1. दन्तैर्हीनः शिलाभक्षी निर्जीवो बहुभाषकः।
   गुणस्यूतिः समृद्धोऽपि परपादेन गच्छति।।

   उपानत् ।

2. शोभितोडस्मि शिखण्डेन दीर्घैः पक्षैरलङ्कृत।
   राष्ट्रियो विहगश्चास्मि, नृत्यं पश्यन्ति मे जना।

   मयूरः।

3. पाठितो नारम्यहं किञ्चित् तथापि साक्षरोडस्म्यहम् ।
   पादैर्विनैव गच्छामि कथयामि बिना मुखम् ।।

   पत्रम् ।

4. क्वचित् प्रस्तुतरतुल्योडस्मि क्वचिच्च तरलं पुनः।
   क्वचिद्वायुसमं सूक्ष्मं, मां पश्यन्ति सदा जनाः।।

   जलम् ।

5. रेफादौ मकारोडन्ते वाल्मीकिः यस्य गायकः।
   सर्वश्रेष्ठं यस्य राज्यं वद कोडसौ जनप्रियः।।

   रामः

सत्सङ्गति–महिमा

नलिनी निषाद, बी.ए. तृतीय वर्ष

गंगा पापं शशी तापं दैन्यं कल्पतरूस्तथा।
पापं तापं च दैन्यं च हन्ति सज्जनसङ्गमः ।।1।।
साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः।
तीर्थ फलति कालेन सद्यः साधुसमागमः ।।2।।
आरम्भगुर्वी क्षयिणी क्रमेण, लध्वी पुरा वृद्धिमती च पश्चात्।
दिनस्य पूर्वार्द्ध-परार्द्धभिन्ना, छायेव मैत्री एव-सज्जनानाम् ।।3।।
संसारकटुवृक्षस्य द्वे फले ह्यमृतोपमे।
सुभाषितरसास्वादः सङ्गतिः सुजेन जने।।4।।
दानेन पार्णिन तु कंकणेन, स्नानेन शुद्धिर्न तु चन्देन।
मानेन तृप्तिर्न तु भोजनेन, ज्ञानेन मुक्तिर्न तु मुण्डनेन

India's Faceless Millions

Sayeda Fauzia Iqbal, B.Sc.-Part-III

Our country India is a country of great people who belong to various communities, linguistic area and economic background. It was a British colony until 1947. We gained Independence and got a new government and a new system of governance. Many things changed, administration, judiciary and military affairs came into our own hands. But, one thing which has been the same since centuries and still remained unchanged was the condition of the common man. The rich and powerful controlled the country in pre-British and British eras and this continued after Independence. Political parties comprised mostly upper caste leaders, while the Indian democracy which was a government of the people for the people and by the people suffered. The masses with whom the real power in a democracy is vested were misled by the selfish leaders. Totalitarian regimes continued to flourish in the country. The government policies were only for the powerful. The Indian masses remained faceless and voiceless. This has continued till this day. Sixty eight years since independence the various reforms, be they educational, agricultural, economical or technological advance have benefitted only the top 20% or the so called 'The creamy Layer' of the Indian population. Indian government is getting rich day by day, but all the money is going into a bottomless pit called 'The Indian Treasury. 'Nothing is being done which will benefit the poor. The so called 'Indian shining' campaign has also lost all its shine. India does not need to shine for only the top 20% of the Indian population, but the masses as well.

Our country is divided into two distinct societies : India and Bharat. The Indians control all the resources and take advantage of all the facilities provided by the system. These are the upper class, while the Bharatiyas are the general masses, farmers, and workers etc., who do not have any power or voice. They are remote controlled by the upper class. Various revolutions in our country have only increased the power of the upper class. Agricultural revolution only benefitted big farmers. Small and marginal farmers remained where they were. Even today their interests are not taken care of. They suffer under huge mounts of debts. Money lenders exploit them. They suffer due to unfair and unjust government policies. As it has happened in Dadri, where farmers were stripped off their lands for practically nothing. When they protested, they were beaten and put in jails. Dadri is not as isolated incident. It is happening everywhere in India. In the name of industrialization, they are being deprived of their lands. Six tribals died in Orissa when police fired on them. Their crime was that they dared to protest against the establishment of a steel plant on their lands.

Many such incidents keep happening, while the bigger incidents grab headlines, the smaller ones go unnoticed. The rightless, the voiceless and the faceless people of our country continue to suffer.

The quota issue has been ragging our country for quite sometimes now. Protests were made all across our country. Medicos and Engineering students protested. They argued that all admissions should be done purely on merit. While the quota committee, argued that it was done for the upliftment of the down

trodden. Both were right in their logic. The Government was right in earnest but the motive behind this policy won't suffice. Only the creamy layer benefits while among the OBCs those who are really backward continue to be deprived. The benefit of government policies isn't really benefitting the masses while they are also doing injustice to the poor among the upper castes.

Industrialization in India has created more of a capitalist than a socialist society. The rich have got more rich the poor have also improved their means but they have not been able to keep up with the rest. Our judicial system too is affected by this rich and powerful supporting mind set. Be it the Jessica Lal Murder case or the Nitiesh Katara murder case or Nirbhaya murder caste the accused even with sufficient evidence against them are roaming scot free making use of their money and muscle power. The Indian masses or the common man is voiceless. They don't have rights or any voice. They are the faceless millions. We need to take some steps to do away with this imbalance and for the sake of social justice.

Woman.....

Simran Wadhvani, B.Com. Part two

Don't imagine a woman is weak,
She must have a right to speak
She is equal to all,
She will never let her image fall
She is in a high place today of,
Doctors, Soldiers, Scholars,
A woman is a mother, a friend
and a wife
She is the one who gives us life.
She is God's creation, she can build
a nation.

The Generous Sea

Tanusa Yadav, B.Ed.

Once a dirty little stream of water was flowing along the country side. After flowing along for long, it finally wanted some company. The stream wanted to join a larger water body. So on hearing the sound of river close by, it changed its course and decided to join it.

As it flowed along side the river the little stream asked, "Dear mighty river, will you be kind enough to allow me to merge with your fresh water ?"

The river replied, "No, no! I cannot accept your dirt. It will ruin my water."

The stream was heart broken by the rude remark, but continued to flow parallel to the river.

As the little stream kept flowing, it finally caught the sea.

On reaching the sea the stream asked, "Oh! large hearted sea, can I merge in you ?"

The sea generously opened its arms with love and unlike the river warmly accepted the steam with all dirt. Thus, stream happily joined the sea and both the stream and the river continued to flow side by side sea.

Season came and went. But one particular year summer was very bad. Its scorching heat quickly dried up all the water of the mighty river. Creaks began to show up in the dry river bed. The river which once flowed with pride was now very lonely.

But the sea swayed upon the shores with all its joy and love, and summer had changed nothing for it. It was as exultant as ever. And the fate of the little steam, you ask ? well, it was always open.

"Let man uplift himself, let him not degrade himself, he himself is his friend and foe."

The Problem of Street Children in India

Chandni Gupta, B.Ed.

Today, if we ask anyone, what is the actual problem in India, in the path of its progress one can get many answers starting from corruption, unemployment, pollution, pollution, illiteracy and a lot more, but no one talks about the problem of street children, the future of country, their critical condition which they face in their life.

Children who have adequate exposure to education and techniques are making India shine like star. So, I am pretty sure if the problems of street children vanish then no one can break the chain of success of our nation. We consider children as the future of country (India) and these children have high intellect and thinking then India will not walk it will definitely run on the path of success.

There is an example through which the problem of street children can be better understood, because without knowing a problem we can never attain a stage of perfect solution to it; Everyone must have remembered or heard or even seen the movie 'Slumdog Millionaire' awarded an Oscar and a debate was generated in India and many came forward in open in opposition to the theme of the movie. For them the movie was depicting an in accurate picture of India, particularly at a time when the world was looking at this country as one of the fastest growing economic of the world.

Without going into particular details, only one report by Govt. of India can reveal the truth. The Arjun Sen Gupta committee report of 2006 made it amply clear for the first time in India that the period regarded as the golden period in the economy is also the period of growing in equality.

Unfortunately, amongst the toiling and suffering masses, the women and children share the maximum burden. Thus, it is women and children who are at the subsistence level of the society and 'Slumdog Millionaire' is not depicting an in accurate picture in any respect and there is no disgrace in accepting the hard reality of the society. To substantiate, one has to understand that still in India some more than 80 Million Children in the age group 6-14 are out of school. No wonder yo can find these out of school children on streets-begging, polishing shoes, rag pickers, domestic help, working in roadside restaurant (dhabas) and in mechanic shop. These children face the worst form of exploitation such as very low wages, long working hours, sexual exploitation etc.

Again, the worst part is sometimes they are compelled to earn by their parents. These children have a lack of knowledge and support and ultimately fail to register format complaints with the competent authority, which add more woes to their existing problem.

There is no need to hide the problem, a sincere effort from government, civil society, and concerned people can bring about the desired changes.

India required a national policy guaranteeing certain rights for the children, which include right of education, food and shelter, must also be well implemented.

No body knows how many talents India is losing in those who never went to school, who are spending their lives on the road and have never seen what a house is all about.

For the country, which is doing well, any effort to develop the marginal section of society can change the fate of the nation. The reluctance to adopt an active and affirmative approach needs a serious rethinking and a break.

'Embracing the experience of a Challenging Journey'

Kashifa Itrat, President-Student Council, B.A. Part Three

'Don't try to fit in when you are born to stand out'

Nostalgia !

That day is repeatedly knocking in memory when I entered the college premises of S.S. Khanna Girl's Degree College. I am filled with sheer gladness as I recall my three years spent in this college. My journey as the Vice President last year and later as the President for the year 2015-16 was mesmerizing but challenging too.

My message to my juniors is to be honest at all times ! It takes courage to stand up for the right and speak the truth. But your task is then over. Forget about the repercussions. I have gone through this..... It is difficult but not impossible Ghandhiji said- 'Hate the sin and not the sinner.'

My experiences have taught me to be satisfied with whatever task you are assigned. Doing work with all your heart is the ultimate form of happiness.

You will face criticism at every step of your journey. This criticism must never hold you back Instead, it should give you all the more reason to prove to people that you have the potential to be Great ! Almost everyone you meet want to pull yo down. Forgive them anyway but put in your efferts to overpower their strength.

I am extremely thankful to the people who have supported me throughout my journey and critics as well for they have made me discover my inner potentials at large. With faith in the Almighty and confidence in the values which my experiences have taught me, I hope to face any difficult situation in my life.

As I bid farewell to my college, I am leaving my footprints on the sand of time and hearts of people which can never be erased by any storm or rain. As I finish penning down my experiences, there is a feeling of satisfaction in my heart that tells me that I have done my bit for the college. Its your turn tobe a SHINING STAR, my dear juniors !

I wind up with the quote-

'Be who you were created to be,
And you will set the world on fire !'

With best Wishes !

Change Your Thought Change Your World

Zainab Butool, B.Com. Part two

1. Two ways to be happy in life-
   Never take help of tears to show you emotions.
   And never take help of words to show you anger.
2. Don't look for someone who will solve all your problems - Look for someone who won't let yo face them alone.
3. Do not educate children to be rich, Educate them to be happy, so that when they grow up they will know the value of things and not just the price.
4. I murmured because I had no shoes, until I met a man who had no feet.
5. God has perfect timing;
   Never early, never late
   It takes a little patience
   And it takes a lot of faith
   But it's worth the wait.
6. For every minute
   you are angry,
   You lose sixty second of happiness.

e-commerce (a catalyst to every individual)

Srishti Khare, B.Com. Part three

The terms e-commerce is taken to mean a wide range of activities comprising, industry and trade.

e-commerce may be defined as the conduct of industry and trade using computer networks. The networks you are most familiar with as a consumer or a student is internet.

e-business versus e-commerece

Though many a times, the term e-business and e-commerce are used interchangeably, yet more precise definitions would distinguish between the two. Just as business is broader than 'Commerce.'

e-business is a more elaborate term and comprises various business transactions and functions conducted electronically, including the more popular gamut (a complete range) of transactions called 'e-commerce.'

e-commerce covers the firms interactions with its customers and suppliers over the internet. It consists of almost all the electronically conducted functions of business and trade. eg. Inventory management, product management, finance and human resource management.

ATM Speed up withdrawal of Money

e-commcrce greatly facilitates and speeds up the entire process of business. Withdrawal of one's own money from banks was, for example, a tedious process in the past.

One had to go through a series of procedural formalities before getting payment. After the introduction of ATMs, all that is becoming a history now. The first thing that occurs is that the customer is able to withdraw his money and the rest of the back-end process takes place later.

Benefits of e-Commerce

1. **Ease of information and lower investment :** Unlike a host of procedural requirement for setting of an industry, e-bussiness is relatively easy to start Networking individuals and firms are more efficient then net worthed individual.
2. **Convenience :** Internet offers the convenience of 24 hours x 7 days in a week x 365 days a year business eg.

Some of the applications can be seen as under :

(a) e-Procurement
(b) e-Bidding /e-Auction
(c) e-Communication/e-Promotion.
(d) e-Delivery
(f) e-Prading.

3. **Speed :** As already noted, much of the buying or selling involves exchange of information that internet allows at the click of a mouse. This benefit becomes all the more attractive in the case of information - intensive product such as software, music and movies, e-books and journals that can be even delivered online.
4. **Global reach /access :** Internet is truly without boundaries. On one hand it allows the seller an access to the global market; on the other hand it affords to the buyer a freedom to choose product from almost every part of the world.
5. **Movement towards a paperless society :** Use of Internet has considerably reduced the dependence on paper works. Do you know that Maruti Udyog Ltd. does bulk of its sourcing of supplies of materials and components in a paperless fashion. This trend of performing almost all the functions of Banks and financial institutions have made the business paperless.

So it can be said that e-commerce has helped a lot in the upliftment of trade and industry. Not only e-commerce but Commerce stream itself is a 'catalyst' in all the sectors of human life and is considered a fast growing stream of education.

INDIA

Niharika Singh, B.com. part two

God was in the process of creating the universe and he was explaining to the angles, "Look, everything should be in balance; for every 10 deers, there should be one lion."

"Look, there is the country of the United States. I have blessed them with property and money. But at the same time, I have given them insecurity and tension."

"And there is Africa I have given there beautiful nature. But at .he same time, I have given them climate extremes."

"And there is South Africa, I have given them lots of forests. But at the same time, I have given them lesser land so that they would have to cutt off the forests...."

One of the angels asked.....

"God ! What is the beautiful country there ?

God said, "Ah !.... that is the crown piece of all. India -my most precious creation. Indians have understanding and they are friendly people. There are sparking streams, serene mountains..... A culture which sparks of the great traditions that they live in, technologically brilliant and with heart of gold...."

The angel was quite surprised and said, "But God you said everything should be in balance." God replied, "Look at the neighbours that I gave them. The Indians give their life towards the maintenance of peace and sanctity among themselves."

So God in his supreme wisdom has blessed each one of us in different ways and given us intelligence to understand it. Be grateful to Him.

Teaching - The Noblest Profession

Naweer Anjum, B.com. part two

"Teachers long to accomplish a real and noble task. But it's their chief duty to accomplish small tasks as if they are great and noble."

HELEN KELLER

An ideal teacher is not heaven born. He is earthly, but he possesses heavenly qualities of head and heart. He is a friend, philosopher and guide to his student. He is discipline minded but his discipline is real and genuine. An ideal teacher is indispensable to the institution where he works. It is very important for a teacher to follow the qualities of an ideal teacher.

A teacher must preach values through his or her life, because students have special respect for teachers. I feel that if proper guidance is given and values imparted, the problem of terrorism, voilence and competition will extinct. If we practice the true values of life during the teaching process we an easily inculcate good habits among our students.

NATIONAL SERVICE SCHEME (N.S.S.)

The National Service Scheme is an Indian government sponsored public service programme conducted by the Department of Youth Affairs and Sports of the Government of India. It inculcates the spirit of voluntary work among the students and teachers through sustained community interaction. There are four units of N.S.S. in S.S. Khanna Girls' Degree College Allahabad. Each NSS unit has 100 N.S.S. volunteers and it is supervised by one Programme Officer. A number of activities are organized throughout the year by NSS Programme Officers.

In the session 2015-16 NSS volunteers participated in various activities of the college like Independence Day, Sadbhawana Pakhwara, Teacher's Day, World Literacy Day (8th September), Awareness Programme on Mahila Bacchat Yojana, Pulse polio Drive campaign, Awareness drive for the adults' regarding women bacchat yojana, aadhar card, voter card, Pan card and the use of mobiles and on 24th September N.S.S. day. Apart from this on 2nd of October a day camp was organized on the occasion of Damodarshree "National award for Academic Excellence". The Chief Guest of the function was Hon'ble Mr. Ram Naik-Governor of U.P. The volunteers worked under various committees of the college to make the programme a big success. Shramdaan was also made by them. The N.S.S. volunteers also planted saplings in the college premises to promote a green & healthy environment. Not only this to create awareness regarding cleanliness in and around the city "Swacchata Abhiyan" was carried out on 2th October 2015 and the volunteers made Posters and slogans on this theme. The birth anniversary of Sardar Vallabh Bhai patel (31st October) was observed as National Unity Day. Other projects that were taken up by NSS volunteers were Cleanliness week, Quami Ekta week, Polythene free campaign, World Aids Day and visit to Kushtha Ashram.

Special Camp (Day) was organized from 7th Jan 2016 to 13th Jan 2016. The first day of the camp commenced with the registration of the NSS volunteers for the 7 day camp. Each day began with prayer and exercise. Various activities were performed. Lectures on Motto, Logo and Area of Work of N.S.S., "Role of Women in Indian society", Personality Development & Self Decision, "Stress Management and self-realization" , "Moral Values and Students", Child Education etc. were delivered by eminent academicians. The NSS volunteers also took part with great enthusiasm in competitions like Elocution Competition, Essay Competition, Poster & Slogan Competition, Debate, Patriotic Group Song Competition and many more.

On the occasion of " National Voters Day" on 25th January, National Service Scheme (N.S.S.), Allahabad and Administration of Allahabad jointly held Voters Awareness Programme,' "LOKTANTRA KA YUVA UTSAV" in the senate hall of Allahabad University. Chaired by Hon'ble Vice Chancellor of A.U., Prof. Ratan Lal Hangloo, Chief guest Commissioner of Allahabad Mr. Rajan Shukla, D.M. of Allahabad Mr. Sanjay Kumar, CDO Mr. Atal Kumar Rai, ADM Mr. Ramnewas, SDM Mr. T. K. Shibu were present at the occasion. All the N.S.S. volunteers and programme officers of various colleges & institutions were present there. A felicitation ceremony was also held in which principals, teachers, media people, BLOs, employees of election office were felicitated by the District Magistrate for their extra ordinary contribution in voter awareness campaigns. Our principal Dr. Shipra Sanyal was also awarded on this occasion.

The N.S.S. volunteers participated in the function of "Republic Day", Made Poster & Slogan, on the theme "Swachh Ganga" and celebrated "International Women's Day".

Besides all these programmes, under the "Swachh Bharat Abhiyan" around the whole session Swacchata Abhiyan was done by the N.S.S. volunteers in' "the college campus & in their respective areas, for spreading awareness on cleanliness.

Co-Curricular Activities and Personality Development

Kalpana Singh, B.Ed.

Co-curricular activities play a very vital role in the personality development of child. It brings out the best out of the child and enhances his qualities, capabilities and talent. Various activities are involved in co-curricular activities which bring all round development in him and by which he gets a great confidence in himself.

Story-telling, Debates, Poem Recitation and Oral presentation develops the capability of thinking and speaking. It also modifies the voice modulation, pitch and pronunciation. The child develops a courage of expressing his own views and ideas which further helps him to stand for himself and speak what he feels.

Group song, Group Dance, Play are the activities which involve number of students and when a child participates in such activities he develops group feeling and learns to get connected and interacted with other students inspite of the fact of caste, religion, sex or race. This helps him to become a good citizen and he learns to be social and a feeling of sharing and caring and brotherhood is inculcated in him.

Activities like sports, games, NCC, Inter-College, Inter State or Regional matches not only modifies the inner talent but also develops the power, stamina and strength of the child. It makes him physically fit and healthy.

We all know that "a healthy mind stays in a healthy body." These activities fulfil the above saying.

So, we can say that co-curricular activities brings an all round development of a child which helps him to gain confidence, removes his shyness and along with it, guides him to choose his profession or career as he understands his talent. With this he leads a happy life.

"Save the girl Child"

I want to live

Urvashi Jaiswal, B. Com. Part one

All I want
is to bloom like a small flower
In this beautiful garden
All I want
is to shine like a dew drop
In this winter morning;
All I want
is to live under this beautiful sky.
All I want
is the right to breathe
like my luckier brother
All I want
Is my mother's warmth
In the cold world.
All I want
Is your arms to protect me
But when those protective arms
Become blood stained
My faint cries echo
All I want
Is the right to live ! live ! live !

Protection of Environment

Saima Siddiqui, B.Ed.

Our Earth is the only planet in this universe, known to support life. The presence of adequate environmental conditions are vital for the maintenance of the eco-system. But, today the environment is being polluted, mutilated and endangered by none other than the most evolved and powerful organism on the earth- Human Begins.

A very simple and common example is the indiscriminate use of polythene bags, which are actually a great threat to the environment. Nature always follows a pattern of evolution and destruction, but these bags violate this basic rule. They can be produced but can't be destroyed. i.e. they are not biodegradable. Therefore, we should try to avoid the use of plastic and use paper and jute bags, instead. As we know that paper is also made from wood, so we should also think twice before wasting paper and letting more trees be cut for the manufacture of paper. We can instead rely on recycled paper and use devices such as computers for writing and storing information. Excessive deforestation may lead to hazardous consequences, which may even lead to the end of eco-system.

Another very important problem that we are facing now a days is the air pollution in the major cities due to harmful gases released by motor vehicles and industries. Smoke and chemicals released by the industries are left free in the atmosphere, which is the main source of pollution. Motor vehicles which consume petrol or diesel as fuel and release harmful gases as their residues lead to many diseases and spoil the atmosphere. But, the most surprising fact about it is that the people who are using these vehicles and the victims of the diseases are both well-educated and belong to same society. But, what they lack is the awareness and incentive to fight this problem.

It is high time that we should depend on renewable resources rather than limited resources of energy for our needs. We should try to replace petrol and other fuels with solar energy and avoid using non-degradable products like plastic and polythene. It is the youth, which has the potential to change the scenario for the better, and only we can make a difference. As educated youth it is our duty to create general awareness among the masses about the disastrous consequences that may follow the present conditions.

Education means training and acquiring knowledge and that is why only education, along with sincerity and awareness can control environmental pollution and conserve the biological eco-system.

राष्ट्रीय सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना

पोलियो का कोई इलाज नहीं
दो बूंद हर बार है बचाव सही
सेवा योजना

राष्ट्रीय सेवा योजना

Celebration of Rashtriya Ekta Diwas
(National Unity Day)
31st October, 2015
UNITY, INTEGRITY, SAFETY AND SECURITY
S.S. KHANNA GIRLS' DEGREE COLLEGE, ALLAHABAD
राष्ट्रीय सेवा योजना
सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय
स्वस्थ भारत के लिए स्वस्थ युवा

स्पोर्ट्स

खेल जन्मजात, स्फूर्तिपरक, स्वतंत्र, स्वलम्बित, आनन्ददायक एवं रचनात्मक प्रवृत्ति है, जिससे परस्पर सहयोग, संगठन, अनुशासन और सहनशीलता का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त होता है। आधुनिक समय में कॅरिअर निर्माण की दृष्टि से भी छात्र जीवन में खेल के प्रति जागरूकता अपेक्षित है। इसी उद्देश्य से महाविद्यालय में खेल वातावरण निर्मित करने व खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने के लिए सत्र भर खेल सम्बन्धी विभिन्न गतिविधियां संचालित की गयी।

अभ्यास सत्र और प्रशिक्षण से लाभान्वित होकर छात्राओं ने विभिन्न खेल रपर्धाओं में प्रतिभागिता की। जिसका विवरण इस प्रकार है– बी.ए. तृतीय वर्ष की छात्रा दीपशिखा सिंह ने नैशनल वॉलीबॉल प्रतियोगिता, दिल्ली, में बी.ए. प्रथम वर्ष से प्रगति साहू, प्रीति शर्मा, जूही प्रजापति ने यूथ नेशनल बास्केट बॉल प्रतियोगिता, बोकारो में, बी.ए. तृतीय वर्ष से दीपशिखा सिहं और बी.ए. द्वितीय वर्ष की ज्योति पाण्डेय ने सीनियर स्टेट वॉलीबॉल प्रतियोगिता भदोही में तथा बी.ए. द्वितीय वर्ष से रचना कौशल और बी.ए. प्रथम वर्ष से ज्योति कुमारी ने मंडल वॉलीबॉल प्रतियोगिता बिजनौर में प्रतिभागिता की।

महाविद्यालय में आयोजित वार्षिक क्रीड़ा सत्र में छात्राओं ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं जैसे– बास्केट बॉल, बैडमिण्टन, खो–खो, भाला फेंक, गोला फेंक, 100 मी. दौड़, 200 मी. दौड़ आदि में प्रतिभागिता की। महाविद्यालय में सात दिवसीय इण्टर हाउस क्रीड़ा प्रतियोगिता सम्पन्न हुई, जिसके अन्तर्गतः– बैडमिंटन, बास्केट बॉल, खो–खो, कबड्डी और एथलेटिक प्रतियोगिता।

महाविद्यालय की इण्टर हाउस क्रीड़ा प्रतियोगिता में ब्लू हाउस ओवर आल चैम्पियन रहा तथा यलो हाउस रनर रहा। कीर्ति पाण्डेय को बेस्ट इन गेम, बेस्ट इन प्लेयर्स चुना गया।

गणतंत्र दिवस के अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. योगेश्वर तिवारी द्वारा विजित खिलाडियों को पुरस्कार प्रदान किया गया। विजेता ब्लू हाउस और उपविजेता यलो हाउस को शील्ड प्रदान की गयी।

महाविद्यालय में खेल वातावरण को प्रोत्साहित करने के लिये शिक्षक वर्ग के बीच मैत्री क्रिकेट मैच आयोजित किया गया।

खेल वातावरण निर्मित करने में सहयोग करते हुये गैर शिक्षक वर्ग के मध्य भी मैच आयोजित किया गया।

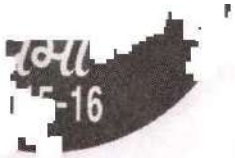

SOME FACTS

Aisha Ahsaan, B.Ed.

Some of the following facts may be known to you. These facts were recently published in a German Magazine which deal with WORLD HISTORY FACTS ABOUT INDIA.

1. India never invaded any country in her last 1000 years of history.
2. India invented the number system Zero was invented by Aryabhatta.
3. The world's first University was established in Takshila in 700 B.C. More than 10,500 students from all over the world studied more than 60 subjects. The university of Nalanda build in the 4th century BC was one of the greatest achievements of ancient India in the field of education.
4. According to the forbes magazine, Sanskrit is the most suitable language for computer software.
5. Ayurveda is the earliest school of medicine known to humans.
6. Although western media portray modern images of India as poverty-stricken and underdeveloped through political corruption. India was once the richest empire on earth.
7. The art of navigation was born in the river Sindh 5000 years ago. The very word "Navigation" is derived from the sanskrit word NAVGATIH.
8. The value of Pi was first calculated by Budhayana, and he explained the concept of what is now known as the pythagorean theorem. British scholars have (1999) officially published the Budhayan's works, dating back to the 6th century which is long before the European mathematics emerged.
9. Algebra, trigonometry and calculus came from India. Quadratic equation were evolved by Sridharacharya in the 11th century; the largest numbers the Greeks and the Romans used were 106, whereas Indians used numbers as big as 1053.
10. According to the Gemmological Institute of America, up untill 1896 India was the only source of diamonds to the world.
11. USA-based IEEE has proved what has been a century-old suspicion amongst academics that the pioneer of wireless communication was professor Jagdish Bose and not Marconi.
12. The earliest reservoirs and dam for irrigation was build in Saurashtra.
13. Chess was invented in India.
14. Shushrnta is the father of surgery; 2600 years ago he and health scientists of his time conducted surgeries like ceserean, as well as cataract, fracture and urinary stone surgeries. Usage of anesthesia was well known in ancient India.
15. When many cultures in the world were only nomadic forest dwellers over 5000 years ago, Indians established Harappan culture in SindhuValley (Indus Vally Civilisation).
16. The place value system, the decimal system was developed in India in 100 BC.

In Education There Should Be No Class Distinction

Sushmita Jain, B. Com Part Two

Today, education has become an integral part of the society. It is basic need required to cope up and survive in this world. An illiterat society is considered inferior and backward by the intellectual class. To the past, a major part of the world was not educated. In India particularly there were many reasons for the illiteracy. There were people who could'nt afford it owing to their financial condition; the partial practice of only educating the male members of the society as girls were considered not fit for education; and there was one more important reason for illiterate society and that was the class distinction. If was type of distinction in the society between the rich and the poor; between the lower caste and the upper caste.

Those conditions were at the extreme level before independence of India but unfortunately even after about 60 years of independence all of the above conditions are still prevailing in our society. Though now in quite a different way. There is an obvious relief in the condition of women today but still in many parts only men are considered for education.

Previously only the upper caste people were given education. Because of this, the government started giving a certain percentage of reserved seats to the backward classes of the society. It was a great step on the part of the government for the upliftment of those sections of the society as education is meant for one and all. But today this reservation facility is degrading the education faculty. The time when these reservation were introduced in the society, they were actually needed but mow there is absolutely no need for this on the basis of distinction of different caste of society.

Nearly everyday, the percentage of the reserved seats are increasing. Unknown classes are coming into prominence and demanding reservation through protest. At least the field of education should be kept out of all this. The main aim of giving reservations earlier was that the backward section needed it badly.

Today also it should only be for those who need it, not for those who are only taking advantage of the facility provided to them. In the educational field, or more specifically in the various competitive examinations students should be given preference on the basis of their merits. But a student who is lower in merit than another student but is in a reserved category gets a better preference in the educational field. For example, if a student gets a rank in any of the competitive exam and he is under a reserved category, there is another student who gets a better rank and is not under reservation, then the former one will get a better college than the latter.

Today there is also, a trend of donation in certain colleges where if a person can give a huge amount of money to the authorities then he or she will be admitted. Those who don't have such a good financial backup will not be considered on educational field. A single phone call from a minister or a high positioned person can get a student admitted in a very good institution.

India is poor country where there are still millions of people who only dream of school. There is no point talking of higher studies for these who have never seen the face of primary school in their life. It is always seen that the merit list of any kind is always lower for people described in the above paragraph and it is always higher in case of the unreserved candidates or the poor classes. So, if any kind of reservation is needed today, then it is for these poor section who are good is studies but can not afford education cost.

Giving preference to the students on the basis of the above factors and not on their intellect is absolutely biased. The society needs an immediate change in this matter. There is no point in producing bad doctors, engineers, etc. and degrading our society. Rather we should give chance to those who deserve it, not curbing their merits on the ground of finance, reservation or lack of resources.

"सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी"

द्वारा वार्षिक देय स्थाई छात्रवृत्तियाँ एवं पदक 2015–16

एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
1.	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा श्री राकेश अरोरा 72, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 काम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा स्मृति छात्रवृत्ति	दुकान के किराये का एक भाग	1975	1000/-
2.	श्री भोला नाथ कपूर श्री राजीव खन्ना 645/560 ए, मालवीय नगर, इला0	बी0 काम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती रमा कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-	1977	100/-
3.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/74, रानी मंडी, इला0	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री सदनलाल एवं श्रीमती भगवान देई खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1979	400/-
4.	श्री कृष्ण कपूर 13, म्योर रोड, इलाहाबाद	बी0 काम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री एन0 सी0 कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1979	500/-
5.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/74,रानी मंडी, इला0	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री मट्टूमल एवं श्रीमती ज्वाला देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1980	400/-
6.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/74, रानी मंडी, इला0	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री शिवचरण दास एवं श्रीमती अचम्भी देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1981	400/-
7.	श्री राम किशोर खन्ना श्री अरूण किशोर खन्ना 71, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 काम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री श्याम किशोर खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-	1983	100/-
8.	श्री चन्दू लाल खन्ना श्री ओंकार नाथ खन्ना 63/73, रानी मंडी, इला0	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती छगन देवी एवं कु0 मंजू खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1985	400/-
9.	श्री राजा राम मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड, इला0	बी0 काम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती राधा रानी माधोराम मेहरा एवं श्रीमती बिब्बो बीबी स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1987	500/-
10.	श्री संजय कपूर 619, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 काम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती सावित्री कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	4000/-	1988	400/-
11.	श्री दामोदर दास खन्ना श्री नीरज खन्ना ब्लाक आर. ई., 7 फ्लोर, पूर्वा रिवीरिया, मुन्ने कोलाला विलेज, व्हाइट फील्ड, मराठा हल्ली रोड, बैंगलोर–37	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती चुन्नी देवी खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	2000/-	1988	200/-
12.	श्री वृज किशोर टण्डन श्रीमती राज टण्डन मे0 काशी आर्नामेन्ट हाउस 393, रानी मण्डी, इलाहाबाद	बी0 काम0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री कामता प्रसाद टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	15000/-	1991	1500/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
13	श्री अनिल टण्डन गैप्स इन्ड्रस्ट्रीज (प्रा0) लिमिटेड गाँव मोहम्मद पुर पो0 खारकी दौला, खंडासा रोड, गुड़गाँव – 122 001	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1991	500/-
14.	श्री पन्ना लाल कपूर श्री अंकित कपूर सैमसन ड्रेस डीपो 27/12 महात्मा गाँधी मार्ग इलाहाबाद	बी0 काम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	कु0 मन्जू कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1992	500/-
15.	श्री संजय मेहरोत्रा डी–301 विशप्रेंज पाम्स एक्सक्यूजिव लोखण्डवाल अकरौली रोड काम्पलेक्स काँदीवली, ईस्ट, मुम्बई 400101 मो0 09324805186	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री बलराम किशोर मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1994	500/-
16.	श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड, इलाहाबाद	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1994	500/-
17.	श्री ए. सी. सहगल श्री मुकुल सहगल EG-3/2 गर्डन इस्टेट महरौली गुड़गाँव रोड, गुड़गाँव (हरियाणा)	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती शिव प्यारी सहगल स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	1995	1000/-
18.	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा श्री राकेश अरोरा 72, अतरसुइया, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राम चन्द्र लाल अरोरा स्मृति छात्रवृत्ति	दुकान के किराये का एक भाग	1998	500/-
19.	डॉ0 सुशीला टण्डन डॉ0 राम कृष्ण टण्डन बाघम्बरी हाउसिंग स्क्रीम अल्लापुर, इलाहाबाद	बी0 एस0 सी0 55% अंक से अधिक अंक प्राप्त करने वाली खत्री छात्रा को	श्री हर नारायण जी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	3000/-	1996	300/-
20.	श्री अशोक कुमार मेहरोत्रा C/O, हरीशचन्द्र खन्ना 536 मालवीय नगर, इलाहाबाद।	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री हीरा लाल एवं श्रीमती विजय कुमारी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	3000/-	1996	300/-
21.	डॉ0 प्रकाश नारायण मेहरोत्रा 8, नवाब युसुफ रोड, इलाहाबाद	बी0 एस0 सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ति कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
22.	डॉ0 इन्द्रा मेहरोत्रा 8, नवाब युसुफ रोड, इलाहाबाद	बी0 एस0 सी0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राज कुमार कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
23.	श्रीमती निर्मला टण्डन ब्लाक नं0 9, फलैट नं. 407 हेरिटेज सिटी अपार्टमेन्ट गुड़गाँव (हरियाणा)	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
24.	डॉ0 एस0 एस0 खन्ना 1616 / 899–ए, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी एवं जरूरतमन्द बी0 एस–सी0 तृतीय वर्ष की छात्रा को	श्री सत्य नारायण कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1997	500/-
25.	डॉ0 भारती मेहरोत्रा 1437, ट्रेसवुड ड्राईव, जैकसन, एम0 एसम0 39211, यू0 एस0 ए0	बी0 एस–सी0, प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1998	600/-
26.	डॉ0 भारती मेहरोत्रा 1437, ट्रेसवुड ड्राईव, जैकसन एम0 एस0 39211 यू0 एस0 ए0	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	8000/-	1998	800/-
27.	श्री वी0 आर0 मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद	बी0 एस–सी0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	1998	600/-
28.	श्री वी0 आर0 मेहरा श्रीमती शीला मेहरा 22, जवाहर लाल नेहरू रोड इलाहाबाद	बी0 एस0 सी0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती राधा रानी एवं श्री राजा राम मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	10000/-	1998	1000/-
29.	डॉ0 प्रकाश नारायण मेहरोत्रा 8, नवाव युसुफ रोड इलाहाबाद	बी0 काम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती विट्टन देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	1999	500/-
30.	श्री आन्नद प्रकाश वर्मा श्रीमती मधु वर्मा 1140, कल्याणी देवी इलाहाबाद	बी0 काम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री बलदेव कृष्ण वर्मा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2000	600/-
31.	श्री अखिल मेहरोत्रा मेसर्स के.के. खन्ना एण्ड सन्स स्टेशन रोड, बिजनौर 246701	बी0 काम0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री गोपाल चन्द्र मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2002	500/-
32.	श्रीमती सरला कुमार द्वारा डॉ0 आशा सेठ A-10 अग्नि पथ, 7 सपरू रोड़ इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष मे संगीत विषय में न्यूनतम 60% अंक पाने वाली छात्रा को। बी.ए. द्वितीय वर्ष मे संगीत	श्रीमती मोहिनी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	2002	400/-
33.	डॉ0 रागनी मदान द्वारा डॉ0 आशा सेठ A-10 अग्नि पथ, 7 सपरू रोड़ इलाहाबाद	विषय में न्यूनतम 60% अंक पाने वाली छात्रा को।	श्रीमती मोहिनी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	5000/-	2002	400/-
34.	श्री अनिल टण्डन गैप्स इन्ड्स्ट्रीज प्रा0 लिमिटेड गॉव मोहम्मद पुर पो0 खारकी दौला खंडासा रोड, गुड़गॉव –122001	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती कान्ती देवी स्मृति छात्रवृत्ति	15000/-	2002	1000/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
35.	श्री कमलेश कुमार मेहरोत्रा फ्लैट नं. 403 टावर 3 ला–गार्डेनिया द पाल्मस, साउथ सिटी 1 युनीटेक कन्ट्री क्लब के सामने गुड़गांव	बी0 काम0 द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री कमलेश कुमार मेहरोत्रा छात्रवृत्ति	5000/-	2002	500/-
36.	श्री रईस मोहम्मद 10/10ए ताश्कन्द मार्ग इलाहाबाद –211001	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती महमूदा बेगम स्मृति छात्रवृत्ति	6000/-	2002	500/-
37.	श्री श्याम नरायण कपूर श्री विवेक कपूर 16/11 A महात्मा गॉधी मार्ग इलाहाबाद	प्रतिभाशाली छात्राओं को जिनकी न्यूनतम 50% अंक, पढ़ाई शुल्क का 50%।	अमर शहीद त्रिलोकी नाथ कपूर स्मृति छात्रवृति	60000/-	2003	6000/-
38.	श्रीमती सरला कुमार द्वारा डा. आशा सेठ A10 अग्निपथ, 7 सप्रू रोड, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती भाग्यवती मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृति	6000/-	2003	600/-
39.	श्री अमर नाथ कक्कड़ 61/4A/5 जवाहर लाल नेहरू रोड टैगोर टाउन, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री श्याम नाथ कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	14000/-	2004	700/-
40.	श्रीमती उमा मोहिले 3/7 अलकापुरी कालोनी, न्याय मार्ग इलाहाबाद	बी.एड. में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री अशोक मोहिले स्मृति छात्रवृति	20000/-	2006	1400/-
41.	श्रीमती उमा मोहिले 3/7 अलकापुरी कालोनी, न्याय मार्ग इलाहाबाद	बी0 काम0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री अशोक मोहिले स्मृति छात्रवृति	48000/-	2006	3600/-
42.	श्रीमती सरल टण्डन डी–2ए/5 वसंत विहार नई दिल्ली – 110057	विज्ञान संकाय की छात्राओं को।	श्री श्रवण टण्डन स्मृति छात्रवृति	500000/-	2008	45000/-
43.	श्रीमती सरोजनी मेहरोत्रा 3, पत्रिका मार्ग, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री राम भूषण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	2008	1000/-
44.	डॉ. शालिनी रस्तोगी 8–डी/1 तपोवन बिहार पोन्नपा रोड, इलाहाबाद	बी.एड. संकाय की जरूरतमन्द छात्रा को।	प्रो. दामोदर दास खन्ना स्मृति छात्रवृति	10000/-	2011	800/-
45.	श्रीमती सरल टण्डन डी–2ए/5 वसंत विहार नई दिल्ली – 110057	बी.एकृ संकाय की सर्वगुणोन्मुखी/उच्चतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री श्रवण टंडन स्मृति पुरस्कार	135000/-	2012	11000/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	धनराशि	वर्ष	छात्रवृत्ति
46.	श्रीमती शोभा भल्ला सी 159 सन सिटी, सेक्टर–54 गुडगॉव हरियाणा	आफिस मैनेजमेन्ट में प्रथम,द्वितीय एवं तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्राओं को।	श्री वी. के. भल्ला स्मृति छात्रवृत्ति	125000/- 31000/-	2013 2013	4000/- 4000/- 4000/-
47.	डॉ. मंजरी शुक्ला एस. एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज इलाहाबाद –211001	दर्शनशास्त्र विषय में द्वितीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री उदय पाल मिश्र स्मृति छात्रवृत्ति	25000/-	2014	2500/-
48.	डॉ. मंजरी शुक्ला एस. एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज इलाहाबाद –211001	दर्शनशास्त्र विषय में तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती भगवती शुक्ला स्मृति छात्रवृत्ति	25000/-	2014	2500/-
49.	श्री गोपाल चोपड़ा श्रीमती अंजली चोपड़ा 3 पत्रिका मार्ग इलाहाबाद	2 विकलांग छात्राओं को।	श्रीमती शकुन्तला चोपड़ा स्मृति छात्रवृत्ति	50000/- 50000/-	2014 2014	5000/- 5000/-
50.	श्रीमती इन्द्रा चोपड़ा 3 पत्रिका मार्ग इलाहाबाद	प्रतिभाशाली छात्राओं कों।	श्री राम लाल चोपड़ा स्मृति छात्रवृत्ति	100000/-	2014	10000/-
51.	श्रीमती उर्मिला संड 1116 कल्याणी देवी इलाहाबाद।	बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष में प्रतिभाशाली खत्री या सारस्वत छात्रा को।	श्री अतुल कुमार संड स्मृति छात्रवृत्ति	16000/-	2014	1200/-
52.	श्रीमती मीना टण्डन बाघम्बरी हाउसिंग स्क्रीम अल्लापुर, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष की खत्री छात्रा जिसने XII कक्षा में अच्छे अंक प्राप्त किये हो।	श्री गोपाल चन्द्र मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	11000/-	2015	800/-

	"सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी" द्वारा वार्षिक देय अन्य छात्रवृत्तियाँ एवं पदक 2015.16 एस. एस. खन्ना महिला महाविद्यालय विभाग			
क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
1.	प्रो0 प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती कश्मीरो देवी स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
2.	प्रो0 प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती जयन्ती देवी स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
3.	प्रो0 प्रहलाद कुमार 1625/907, कल्याणी देवी इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा	श्रीमती चुन्नी देवी कपूर स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
4.	श्रीमती मीरा खन्ना "मनोहर" 645/560– ए मालवीय नगर, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्रीमती चन्दो खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	1100/-
5.	श्रीमती मोनी खन्ना "मनोहर" 645/560, मालवीय नगर, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्राओं को	श्री संजीव खन्ना स्मृति छात्रवृत्ति	600/-
6.	श्री अशोक कुमार सण्ड 1116ए/1337 ए, कल्याणी देवी, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा को	श्रीमती माधुरी सण्ड स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
7.	श्री अशोक कुमार सण्ड 62/10 प्राईमरोज वाटिका सिटी सेक्टर 49, सोहाना रोड गुड़गॉव 122018	मेधावी जरूरतमन्द छात्रा को	पं0 विश्व नाथ सण्ड स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
8.	न्यायमूर्ति अरूण टण्डन 3, पत्रिका मार्ग, इलाहाबाद	मेधावी जरूरतमन्द छात्राओं को	श्रीमती हीरो देवी टण्डन स्मृति छात्रवृत्ति	500/- 500/-
9.	डा0 प्रभा कक्कड़ 61/4A/5 जवाहर लाल नेहरू रोड टैगोर टाउन, इलाहाबाद	बी0ए0 प्रथम वर्ष एवं बी0ए0 द्वितीय वर्ष के शिक्षा शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्राओ को	श्रीमती शंति देवी कक्कड़ स्मृति छात्रवृत्ति	500/- 500/-
10.	श्री वाई. एन. मेहरा 5 ताशकन्द मार्ग, इलाहाबाद	बी0 एस0 सी0 तृतीय वर्ष में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री इन्द्र नरायण मेहरा स्मृति छात्रवृत्ति	5100/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
11.	डॉ0 लालिमा सिंह एस0 एस0 खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0ए0 तृतीय वर्ष में अर्थ शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	प्रो0 डी0 एस0 कुशवाहा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
12.	दी सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी 179 अतरसुइया इलाहाबाद	महाविद्यालय की प्रतिभाशाली छात्राओं को	दी सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी, छात्रवृत्ति	10000/-
13.	डॉ0 आशा उपाध्याय A1,पत्रकार कालोनी, अशोक नगर इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष में हिन्दी साहित्य में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	देव गंगोत्री स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
14.	डॉ0 आशा उपाध्याय A1,पत्रकार कालोनी, अशोक नगर इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में हिन्दी साहित्य में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	मेजर वी0 पी0 स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
15.	डॉ0 शिप्रा सान्याल 468, शाह गंज, इलाहाबाद	बी0 एस0 सी0 प्रथम/ द्वितीय वर्ष में गणित विषय में अधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री एम0 पी0 गांगुली स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
16.	डॉ0 शिप्रा सान्याल 468, शाह गंज, इलाहाबाद	बी0 ए0 तृतीय वर्ष की संगीत गायन में 60% से अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री जी0 सी0 सान्याल स्मृति छात्रवृत्रि	500/-
17.	श्रीमती ममता सिन्हा श्री ओ. पी. सिन्हा 117/52 बी / 1 दरियाबाद, इलाहाबाद	समाज शास्त्र विषय में न्यूनतम 60% अंक प्राप्त करने वाली मेधावी छात्रा को।	श्री अम्बिका प्रसाद श्रीवास्तव स्मृति छात्रवृत्ति	501/-
18.	डा. अल्पना अग्रवाल एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में दर्शन शास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री प्रताप चन्द्र जैन स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
19.	श्रीमती रचना आनन्द गौड़ 263 बादशाही मण्डी, इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में हिन्दी विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	प्रो. राजेन्द्र कुमार वर्मा स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-
20.	श्रीमती रचना आनन्द गौड़ 263 बादशाही मण्डी, इलाहाबाद	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में हिन्दी विषय मे अधिकतम अंक प्राप्त करने	पो. रामस्वरूप चतुर्वेदी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/-

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
21.	डा. मीनू अग्रवाल एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0 ए0 प्रथम वर्ष में प्राचीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल स्मृति छात्रबृत्ति	500/–
22.	डा. मीनू अग्रवाल एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी0 ए0 द्वितीय वर्ष में प्राचीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को।	श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
23.	डॉ. अर्चना त्रिपाठी एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष में अर्थशास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्रीमती शिव दुलारी त्रिपाठी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/–
24.	डॉ. अर्चना त्रिपाठी एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय इलाहाबाद	बी.ए. द्वितीय वर्ष में अर्थशास्त्र विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री राम कृष्ण त्रिपाठी स्मृति छात्रवृत्ति	1000/–
25.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून–248001	बी.काम. प्रथम वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
26.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.काम. द्वितीय वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
27.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.ए. प्रथम वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
28.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.ए., द्वितीय वर्ष की जरूरत मंद मेधावी खत्री छात्रा को	श्रीमती शान्ती देवी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/–
29.	डा. शिव शंकर श्रीवास्तव एस.एस. खन्ना गर्ल्स डिग्री कालेज इलाहाबाद	बी.ए. प्रथम वर्ष में मध्य कालीन इतिहास विषय में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	मास्टर गौरव श्रीवास्तव छात्रवृत्ति	500/–
30.	श्री जी. सी. मेहरोत्रा बेली रोड इलाहाबाद–2	विज्ञान वर्ग की जरूरतमन्द एवं विकलांग छात्रा को	श्रीमती शशी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृति	5000/–

क्रम संख्या	देने वाले का नाम व पता	छात्रवृत्ति की शर्त	छात्रवृत्ति का नाम	छात्रवृत्ति
31.	श्री जी. सी. मेहरोत्रा बेली रोड इलाहाबाद–2	विज्ञान वर्ग की जरूरतमन्द छात्राओं को	श्रीमती शशी मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	10000/-
32.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फलोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एस.सी प्रथम वर्ष में एक मेधावी खत्री छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
33.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एस–सी द्वितीय वर्ष में एक मेधावी खत्री छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
34.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्त्रधारा रोड देहरादून –248001	बी.एस–सी प्रथम वर्ष में गणित विषय में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-
35.	कर्नल रवीन्द्र कुमार मेहरोत्रा बी– 101 फस्ट फ्लोर, हिलवियू अपार्टमेंट सहस्तधारा रोड देहरादून –248001	बी.एड़ प्रथम वर्ष में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा को	श्री कैलाश नारायण मेहरोत्रा स्मृति छात्रवृत्ति	500/-

ANNUAL MEDALS 2015-16			
S. No.	Donor	Name of Gold Medal	Name of the Institution
1.	Justice Arun Tandon 3, Patrika Marg Allahabad	Dr. Madhu Tandon Gold Medal Science - Faculty	S.S. Khanna Girls Degree College
2.	Shri Ajit Dhwan 16/34, Stanley Road Allahabad	Gayatri Raj Narain Dhawan Gold Medal Commerce Faculty	S.S. Khanna Girls Degree College
3.	Shri Rajeev Khanna 'Manohar' 645/560-A, Malviya Nargar Allahabad	Manohar Das Khanna Gold Medal Art Faculty	S.S. Khanna Girls Degree College
4.	Smt. Uma Mohiley 3/7, Alkapuri Colony Nyay Marg Allahabad	Ashok Mohiley Gold Medal B.Ed. Faculty	S.S. Khanna Girls Degree College
5.	Prof. D. D. Khanna Mr. Neeraj Khanna Flat RE - 710 7th Floor, Block RE, Purva Riviera, Munnekolala Village, White Field, Maratha Halli Road, Banglore - 560037	Prof. D. D. Khanna Presidents Gold Medal Overall Performance	S.S. Khanna Girls Degree College
6.	Smt. Sarjoni Mehrotra 3, Patrika Marg Allahabad	Ram Bhushan Mehtrotra Gold Medal Bio-Technology	S.S. Khanna Girls Degree College
7.	Dr. R. K. Tandon 215, Baghambari Housing Scheme, Allahpur, Allahabad	Har Narain Tandon Gold Medal 1st Position Class XII	S. K. Inter College
8.	Shri Onkarnath Khanna 63/74 Rani Mandi Allahabad	Chandulal Khanna Gold Medal 1st Position Class XII (Science)	Tagore Public School
9.	Shri Rajeev Khanna 'Manohar' 645/560-A, Malviya Nagar Allahabad	Sanjeev Khanna Gold Medal 1st Position Class XII (Commerce)	Tagore Public School

College-Governing Body

Mr. Rajeev Khanna	Chairperson
Mr. Dilip Mehrotra	Manager/Treasurer
Hon'ble Justice Arun Tandon	Member
Dr. Asha Seth	Member
Dr. Indira Mehrotra	Member
Dr. Ram Krishna Tandon	Member
Prof. Prahlad Kumar	Member
Mrs. Anshika Bduhwar	Member
Dr. Suman Seth	Member
Dr. Shipra Sanyal	Principal/Scey.Ex-Officio
Mrs. Gunjan Sharma	Bursor

Members Nominated by Vice Chancellor University of Allahabad

Prof. Ramendu Roy	Commerce Department University of Allahabad
Prof. P.K.Sahu	Education Department University of Allahabad
Prof. B.N. Mishra	Geography Department University of Allahabad
Dr. Kaushal Kishore	18-A, Auckland Road Allahabad

Teacher Representative

Mrs. Sandhya Arora	Teacher Representative
Dr. Ritu Jaiswal	Proctor
	Teacher Representative
Dr. Archana Jyoti	Teacher Representative

Permanent Invitees

Mr. Amit Khanna	Secretary SKP Society / Manager, S.K. Inter College, Allahabad
Mrs. Meena Tandon	Manager, Navin Shishu Vatika, Allahabad

Special Invitees

Mr. Rajat Kapoor	C.A.
Mrs. Krishna Banerjee	Dean - Student Welfare
Dr. Lalima Singh	Coordinator - B.Ed. Faculty
Dr. Jyoti Kapoor	Coordinator-Commerce Faculty
Dr. Soni Srivastava	Coordinator - Science Faculty
Dr. Archana Tripathi	Coordinator - Commerce Faculty

Joint Managing Committee
Saroj Lalji Mehrotra Science Faculty

Mr. S.K.Seth	Chairman
Hon'ble Justice Arun Tandon	
Mr. Chetan Mehrotra	
Dr. (Smt.) Asha Seth	
Mr. G.C.Mehrotra	
Mr. Y.N.Mehra	
Mr. Rajeev Khanna	
Mr. Dilip Mehrotra	
Dr. Shipra Sanyal	

Permanent Invitees

Mr. Vinayak Tandon
Mr. Rajat Kapoor
Mrs. Gunjan Sharma
Dr. Soni Srivastava

Board of Directors - B.Ed

Dr. Asha Seth	Chairperson
Mr. Rajeev Khanna	Chairman of College Governing Body
Hon'ble Justice Arun Tandon	Member
Mr. Dilip Mehrotra	Manager/Treasurer
Dr. R.K.Tandon	Member
Mrs. Anshika Budhwar	Member
Dr. Shipra Sanyal	Principal
Dr. Sudha Melhotra	Director
Mrs. Krishna Banerjee	Co-ordinator
Dr. Lalima Singh	Chairman - Admission Committee
Dr. Alpana Agarwal	Member
Dr. Jyoti Kapoor	Member
Dr. Harish Kumar Singh	Teacher Representative
Dr. Meenaskhi Srivastava	Teacher Representative

Our Mission

To raise the level of education of the girls belonging to the lower and middle section of society as well as minority class. Achievement and realization of their goals. To make the girl student independent and self reliant. To undertake future courses and training programme in order to make them economically independent.

Our Vision

To help the girl student discover their innate potentials and promote them towards their personal and social benefits.

दीप प्रज्वलन – ज्ञान का विस्तार

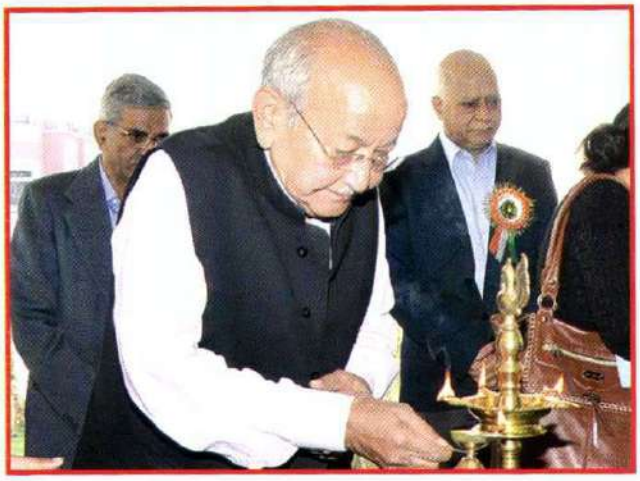

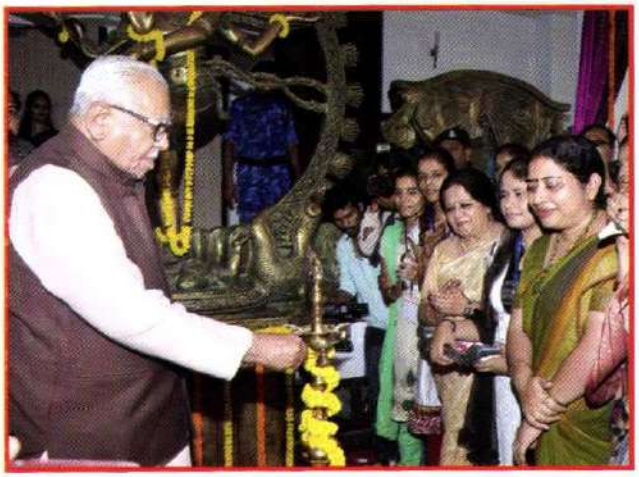

डॉ. (श्रीमती) शिप्रा सान्याल
कार्यवाहक-प्राचार्या
एसोसिएट प्रोफेसर - संगीत गायन

स्थायी शिक्षक वर्ग

कला संकाय

डॉ. अल्पना अग्रवाल	एसोसिएट प्रोफेसर - दर्शनशास्त्र
डॉ. रीता चौहान	एसोसिएट प्रोफेसर - शिक्षाशास्त्र
श्रीमती गुंजन शर्मा	एसोसिएट प्रोफेसर - अर्थशास्त्र
श्रीमती कृष्णा बनर्जी	एसोसिएट प्रोफेसर - समाजशास्त्र
डॉ. नीरजा सचदेव	एसोसिएट प्रोफेसर - अंग्रेजी
डॉ. आशा उपाध्याय	एसोसिएट प्रोफेसर - हिन्दी
डॉ. मीनू अग्रवाल	एसोसिएट प्रोफेसर - प्राचीन इतिहास
डॉ. अर्चना त्रिपाठी	एसोसिएट प्रोफेसर - अर्थशास्त्र
डॉ. ज्योति कूपर	एसोसिएट प्रोफेसर - संस्कृत
डॉ. लालिमा सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर - समाजशास्त्र
डॉ. रचना आनन्द गौड़	एसोसिएट प्रोफेसर - हिन्दी
डॉ. मंजरी शुक्ला	एसोसिएट प्रोफेसर - दर्शनशास्त्र
डॉ. संध्या अरोरा	एसोसिएट प्रोफेसर - संगीत वादन
डॉ. रीतू जायसवाल	एसोसिएट प्रोफेसर - प्राचीन इतिहास
लेफ्टिनेन्ट डॉ. रेखा रानी	एसिस्टेंट प्रोफेसर - संगीत गायन
श्रीमती संगीता गौतम	एसिस्टेंट प्रोफेसर - चित्रकला

विज्ञान संकाय

डॉ. सोनी श्रीवास्तव	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - जन्तु विज्ञान
डॉ. अर्चना ज्योति	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - रसायन विज्ञान
डॉ. प्रीति सिंह	एसिस्टेंट प्रोफेसर- वनस्पति विज्ञान

डॉ. सुमन सेठ	अतिथि प्रवक्ता - संस्कृत
डॉ. निधि श्रीवास्तव	अतिथि प्रवक्ता - संगीत वादन
डॉ. ज़ेबा नकवी	अतिथि प्रवक्ता - मध्यकालीन इतिहास
डॉ. शिवशंकर श्रीवास्तव	अतिथि प्रवक्ता - मध्यकालीन इतिहास
डॉ. सुम्बुला फिरदौस	अतिथि प्रवक्ता - प्राचीन इतिहास
डॉ. निशी सेठ	अतिथि प्रवक्ता - प्राचीन इतिहास
डॉ. ज्योति बैजल	अतिथि प्रवक्ता - शिक्षाशास्त्र
पूनम कशवाहा	अतिथि प्रवक्ता - हिन्दी
डॉ. आरिफा बेगम	अतिथि प्रवक्ता - उर्दू
डॉ. यासमीन फातिमा	अतिथि प्रवक्ता - उर्दू
डॉ. सीमा पाण्डेय	अतिथि प्रवक्ता -समाज शास्त्र
अनुजा पाठक	अतिथि प्रवक्ता - समाज शास्त्र
डॉ. शबनम परवीन	अतिथि प्रवक्ता - वनस्पति विज्ञान
डॉ. शुभ्रा मालवीय	अतिथि प्रवक्ता - जन्तु विज्ञान

स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत

कला संकाय

श्रीमती शिल्पी श्रीवास्तव	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - कार्यालय प्रबन्धन एवं व्यावसायिक शिक्षा
श्रीमती सविता मेहरोत्रा	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर-चित्रकला
श्रीमती शालिनी तिवारी	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर-कार्यालय प्रबन्धन एवं व्यावसायिक शिक्षा
डॉ. रुचि मालवीय	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - अंग्रेजी

विज्ञान संकाय

डॉ. आलोक मालवीय	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - वनस्पति विज्ञान
डॉ. प्रमिला गुप्ता	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - भौतिक विज्ञान
डॉ. शर्मिला वैश्य	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - गणित
डॉ. अचला श्रीवास्तव	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - वनस्पति विज्ञान
डॉ. दीपा श्रीवास्तव	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर- रसायन विज्ञान
डॉ. मनोज अग्निहोत्री	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - गणित
डॉ. सुमिता सहगल	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - रसायन विज्ञान
डॉ. अर्चना यादव	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - जन्तु विज्ञान
पृथ्वी राज सिंह	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - भौतिक विज्ञान
डॉ. प्रियंका द्विवेदी	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - जन्तु विज्ञान/ बायोटेक्नोलॉजी
डॉ. आशुतोष त्रिपाठी	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - बायोटेक्नोलॉजी
डॉ. शादमा अंजुम	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर - बायोटेक्नोलॉजी

वाणिज्य संकाय

डॉ. रुचि गुप्ता	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. मीना चतुर्वेदी	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. शिखा अग्रवाल	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. तनुश्री रॉय	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. विकास सिंह	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. शिव शंकर शुक्ल	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर

बी.एड. संकाय

डॉ. सुधा मल्होत्रा	डायरेक्टर
डॉ. विनोद कुमार सिंह	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. अरुणा मिश्रा	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. मंजू मिश्रा	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. हरीश कुमार सिंह	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. सुरेन्द्र कुमार	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. रंजना त्रिपाठी	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. शालिनी रस्तोगी	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. ममता भटनागर	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
डॉ. श्रुति आनन्द	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर
मीनाक्षी श्रीवास्तव	एसिस्टेन्ट प्रोफेसर

शिक्षणेतर कर्मचारी वर्ग

स्थायी

श्री उमेश चन्द्र शर्मा	*कार्यालय अधीक्षक*
श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता	*सहायक लेखाकार*
श्री विनय कुमार यादव	*स्टेनो*
श्री राम कृपाल	*सहायक लिपिक (सेवा निवृत्त 31.03.2016)*
श्री सन्त लाल	पुस्तकालय लिपिक
श्री शिवशंकर लाल	नैत्यिक लिपिक
श्री रमेश चन्द्र	प्रयोगशाला सहायक
श्री चन्द्रशेखर जोशी	प्रयोगशाला सहायक
श्री चन्द्रकान्त पाण्डेय	कार्यालय सहायक (मृतक आश्रित कोटा)
श्रीमती प्रियंका सिंह	कार्यालय सहायक (मृतक आश्रित कोटा)
श्री घनश्याम सिंह	बुक लिफ्टर
श्री राधा कृष्ण	परिचर
श्री कल्लू	परिचर
श्री राम मिलन सेन	परिचर
श्री दया राम	परिचर
श्री राम लाल यादव	परिचर
श्री सुशील कुमार शुक्ला	परिचर
श्री मुरारी लाल	प्रयोगशाला परिचर
श्री नीम बहादुर थापा	प्रयोगशाला परिचर
श्री बच्ची सिंह बिष्ट	प्रयोगशाला परिचर
श्री राजेश कुमार	बुक लिफ्टर
श्री मोती लाल	परिचर (Regularised)
श्री मुकेश कुमार	परिचर (Regularised)
श्री अनोखे लाल	चौकीदार (Regularised)

स्ववित्त पोषित योजना के अन्तर्गत

विज्ञान संकाय

श्री गुरुदास भट्टाचार्या	लिपिक
श्री जितेन्द्र कुमार	प्रयोगशाला सहायक
श्री मृदुल कुमार यादव	प्रयोगशाला सहायक
श्री आलोक कुमार साहू	कार्यालय सहायक
श्री राहुल चटर्जी	प्रयोगशाला सहायक
श्री विजय कुमार	प्रयोगशाला परिचर
श्री सूर्यमणि यादव	प्रयोगशाला परिचर
श्री दिनेश कुमार गुप्ता	प्रयोगशाला परिचर
श्री विनोद कुमार	प्रयोगशाला परिचर
श्री सन्तोष कुमार यादव	प्रयोगशाला परिचर
श्री चन्द्रिका प्रसाद त्रिपाठी	प्रयोगशाला परिचर
श्री मोहित कनौजिया	प्रयोगशाला परिचर

कला संकाय

श्रीमती मिथिलेश कुमारी	पुस्तकालय सहायक
श्रीमती सोनू मेहरोत्रा	पुस्तकालय सहायक
श्री फूल चन्द्र यादव	परिचर
श्री विक्रम कुमार	सफाई कर्मचारी
श्री गोविन्द त्रिपाठी	पुस्तकालय परिचर
श्री कृष्ण चन्द्र तिवारी	परिचर
श्रीमती संतोष	सफाई कर्मचारी
श्री रामकेश पाल	माली

वाणिज्य संकाय

रूपाली सक्सेना	पुस्तकालय सहायक
श्री अंकुर कपूर	लिपिक
श्री बृजेश कुमार	परिचर
श्री वीरेन्द्र कुमार	परिचर

बी.एड. संकाय

श्री सतीश कुमार धूरिया	टेक्निकल सहायक
सुश्री प्रविता सिन्हा	पुस्तकालय सहायक
श्री उमेश चन्द्र कुशवाहा	अंशकालिक लेखाकार
श्री संजय मेहरोत्रा	कार्यालय सहायक/स्टोर
श्री यशपाल	सफाई कर्मचारी
श्री कुलदीप कुमार	परिचर
श्री अनूप कुमार	चौकीदार
श्रीमती नीतू सिंह	परिचर

मेधावी जरूरतमंद छात्राएं

(एस.के.पी. सोसायटी द्वारा सायकिल वितरण)

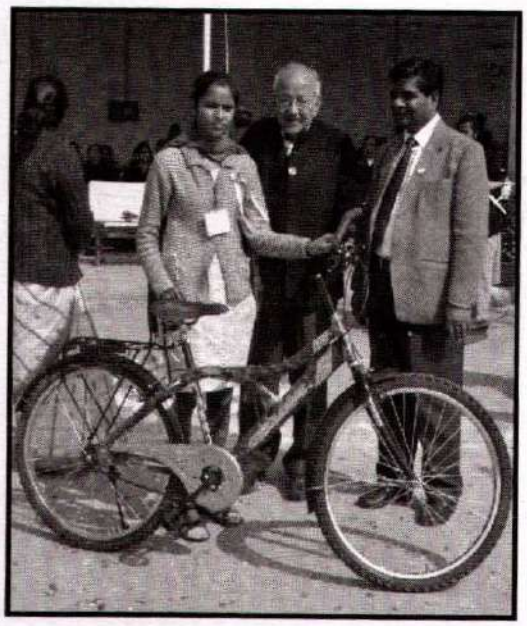

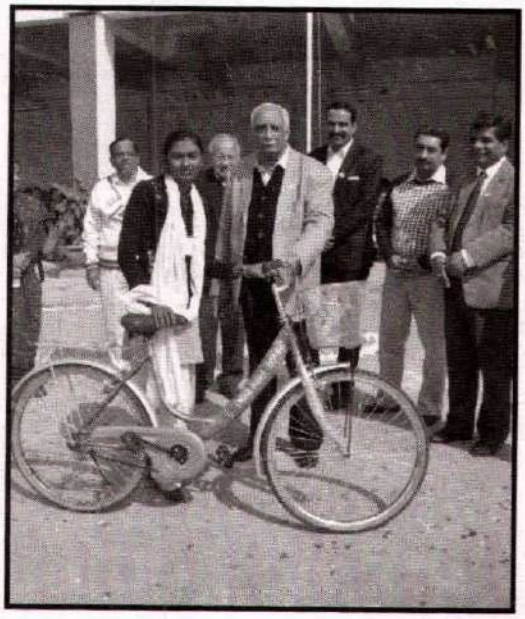

ہما انصاری
بی۔اے سال دوم

مگر توجہ ہم کرتے نہیں

قرآن گھر میں ہے مگر ہم پڑھتے نہیں
ذرا بھی اللہ کا خوف ہم کرتے نہیں
زلزلوں کے جھٹکوں سے اٹھ جاتے ہیں فوراً
سن کر اذان کبھی ہم اٹھتے نہیں
ہم پہ آتی ہے مصیبت تو اللہ یاد آتا ہے
ورنہ تو کبھی سر سجدے میں ہم رکھتے نہیں
کانوں میں اذان کی بھلا کیسے آئے آواز
بند تو کبھی ٹی۔وی۔ ہم کرتے نہیں
صورت سے تو انسان نظر آتے ہیں
مگر سیرت سے تو مسلمان ہم لگتے نہیں

□□□

شفا نقوی
بی۔اے سال اول

غزل

تنہایوں کی رات کا سایا نہ جائے گا
یادوں کا نقش دل سے مٹایا نہ جائے گا

تیرے بغیر فصل بہاراں کو کیا کروں
تنہا یہ جشن مجھ سے منایا نہ جائے گا

رسوائیوں کا خوف ہے مجبوریاں ہیں ساتھ
مجھ سے تمہاری بزم میں آیا نہ جائے گا

کس دل سے میرے یار تجھے الوادع کہوں
مجھ سے زباں پہ لفظ یہ لائے نہ جائے گا

شفا ہزار فتنو جور و ستم اٹھیں
لیکن وفا سے ہاتھ اٹھایا نہ جائے گا

□□□

بے بی ناز
بی۔اے سال اول

نیت کا پھل

حضرت سلطان محمود غزنوی علیہ الرحمتہ بہت مشہور بادشاہ گزرے ہیں۔ایک مرتبہ آپ سیر کرتے ہوئے ایک ایسے دیہات میں جا پہنچے جہاں گنے بہت زیادہ بوئے گئے تھے۔آپ نے اب تک گنا نہیں دیکھا تھا۔جب آپ نے گنا چوسا تو بہت پسند آیا۔

آپ نے اپنے دل میں سوچا کہ گنے کی پیداوار پر بھی لگان مقرر کروں گا تا کہ ہر سال ہماری شاہی خزانے کو نئی آمدنی حاصل ہوتی رہے۔

اتنا سوچنا تھا کہ اب جو گنا آپ چوستے ہیں اس میں رس ہی نہیں۔

آپ نے کسانوں سے کہا ہ لوگو! کیا بات ہے کہ اچانک گنے کا رس ہی ختم ہو گیا۔

آپ کی بات سن کر ایک بوڑھا کسان سامنے آیا اور کہنے لگا کہ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ اس ملک کے بادشاہ کی نیت بگڑ گئی ہے اس نے اپنی سلطنت میں کوئی ایسا قانون جاری کرنا چاہا ہے جس سے رعایا کو تکلیف ہو۔بس یہی وجہ ہے کہ گنے کا رس خشک ہو گیا۔

بادشاہ تو وہ خود آپ ہی تھے۔اور آپ نے فوراً دل میں توبہ کی اور ٹھان لیا کہ میں ہرگز لگان مقرر نہیں کرونگا۔توبہ کرنا تھا کہ جو گنا چوستے وہ رس سے بھرا ہوا ملتا۔

❑❑❑

بے بی ناز
بی۔اے سال اول

اچھی باتیں

۱۔ اپنی خوشی سے اچھی دوسروں کو خوش کرنا ہے۔
۲۔ صورت سے اچھی سیرت ہونی چاہئے۔
۳۔ علم کی دولت بانٹنے سے بڑھتی ہے۔
۴۔ اچھی سنگت اچھا مقام دلاتا ہے۔
۵۔ کسی کی برے عمال کو بتانے سے اچھا ہم اپنے کو دیکھیں۔
۶۔ انسان کو دوسروں کی غلطی اور اپنی نیکی دونوں کو بھول جانا چاہئے۔
۷۔ پھول ڈال پر ہی اچھے ہیں۔انہیں توڑ کر گناہ نہ کریں۔
۸۔ بھول کر بھی کسی کو نہ دے:

دھوکا، بے عزتی، دکھ، گالی

❑❑❑

شازیہ
بی۔اے سال اول

علم سے متعلق اقوال زریں

۱۔ علم حاصل کرنا ہر مسلمان مرد اور عورت پر فرض ہے۔
۲۔ علم سے بڑھ کر کوئی دولت نہیں۔
۳۔ اگر کچھ حاصل کرنا ہے تو علم حاصل کرتو۔
۴۔ علم ایک ایسا راستہ ہے جس پر چل کر انسان اپنی منزل کو پاتا ہے۔
۵۔ علم ایک ایسا لباس ہے جو کبھی پرانا نہیں ہوتا۔
۶۔ علم ایک ایسی دولت ہے جس کو جتنا خرچ کرو اتنا ہی بڑھتا ہے۔
۷۔ علم ایک روشن چراغ ہے جس سے بہت سے چراغ روشن ہوتے ہیں۔
۸۔ علم ایک ایسا سکہ ہے جس سے دنیا کی ہر چیز خریدی جاسکتی ہے۔
۹۔ دل مردہ ہے جب تک اسے علم کی زندگی نہ ملے۔
۱۰۔ علم انسان کی تیسری آنکھ ہے۔
۱۱۔ علم ایک ایسے سمندر کا نام ہے جس کی گہرائی کی کوئی حد نہیں۔
۱۲۔ علم کے بغیر دین و دنیا میں کامیابی پانا ممکن نہیں ہے۔
۱۳۔ علم ایک ایسی روشنی ہے جو اندھیرے میں بھٹکنے والوں کو راستہ دکھاتی ہے۔
۱۴۔ علم حاصل کرو چاہے تمہیں ملک چین ہی کیوں نہ جانا پڑے۔
۱۵۔ علم حاصل کرو ماں کی گود سے قبر کی منزل تک۔

□□□

سونی
بی۔اے سال دوم

عورت کیا اور کیسے

ایک مرتبہ ایک بزرگ نے ایک محفل میں اپنی بند ہتھیلی کو سب کی طرف کر کے دریافت فرمایا۔ میرے ہاتھ میں کیا ہے؟ کچھ نے جواب دیا شاید آپ کے ہاتھ میں ہیرے جواہرات ہیں۔ پھر ایک صاحب سے پوچھا انہوں نے بھی سوچنے کے بعد جواب دیا: شاید سونا ہے۔ پھر پوچھنے پر ایک نے جواب دیا اگر آپ کے ہاتھ میں ہیرے جواہرات نہیں، سونا نہیں تو یقیناً چاندی یا قیمتی چیز ہوگی۔

تب ان بزرگ نے ہتھیلی کھولی تو لوگوں نے دیکھا کہ ان کے ہاتھ پر چند کنکریاں تھیں سب حیران رہ گئے۔

ارشاد کیا: عورت کی مثال اسی بند مٹھی کی طرح ہے ہے کہ اگر وہ بند ہے (پردہ ہے) تو ہیرے جواہرات ہے، سونا چاندی اور اس کی بیش بہا قیمت ہے لیکن اگر وہ مٹھی کی طرح کھل جائے (بے پردہ) تو بے وقعت پتھر اور کنکریوں کی مانند ہے جس کی کوئی عزت اور قیمت نہیں۔

□□□

نور صبا
بی۔اے سال اول

اچھی باتیں

۱۔ اگر کوئی تجھے برا کہے اور تمہیں غصہ آجائے تو سمجھ لو کہ واقعی تم برے ہو۔

۲۔ آپ ایک معمولی سے فائدے کی خاطر غلط کام کرتے ہوئے یہ بھول جاتے ہیں کہ آپ نے دوسروں کی بجائے اپنے آپ کو زیادہ زخمی کیا ہے۔

۳۔ سب سے اچھا ساتھی تیرا نیک عمل ہے۔

۴۔ یتیم وہ نہیں جس کے ماں باپ نہ ہوں بیشک یتیم وہ ہے جو علم وادب سے محروم ہو۔

۵۔ جس نے تمہیں تمھارے عیب بتائے اگر تمہیں عقل ہو تو بے شک اس نے تم پر احسان کی انتہا کر دی۔

۶۔ کامیاب نہیں قابل ہونے کے لئے پڑھائی کرو کامیابی تو جھک مار کے پیچھے آئے گی۔

۷۔ کسی پر احسان کرو تو اس کو چھپاؤ اور اگر تم پر کوئی احسان کرے تو ظاہر کرو۔

۸۔ اچھے انسان کی پہچان اس کی زبان سے ہوتی ہے۔

۹۔ جھوٹ بول کر جیت جانے سے بہتر ہے سچ بول کر ہار جاؤ۔

۱۰۔ زبان دل کا دروازہ ہے جس میں سے آدمی اپنی اصلی حالت میں باہر آتا ہے۔

□□□

نور صبا
بی۔اے سال اول

تین دوست

علم، دولت اور عزت تینوں دوست ایک جگہ اکٹھا ہوئے جب جدا ہونے کا وقت آیا تو ان تینوں دوستوں کے بیچ باتیں اس طرح ہوئی۔

علم: میں جا رہا ہوں اگر مجھ سے ملنا ہو تو عالموں کی محفل اور کتابوں میں ملنا۔

دولت: میں بھی جا رہی ہوں۔ اگر مجھ سے ملنا ہو تو امیروں کی محفل میں ملنا۔

عزت: کچھ نہ بولی۔ علم اور دولت نے پوچھا تم خاموش کیوں ہو اب تم دوبارہ کہاں ملو گی؟

عزت: افسوس! میں ایک بار چلی جاتی ہوں تو دوبارہ واپس نہیں آتی۔

شخصیات اور خطاب

مولانا ظفر علی خان	بابائے صحافت
میر تقی میر	خدائے سخن
اکبر الہ آبادی	لسان العصر
جوش ملیح آبادی	شاعر انقلاب
جلال الدین اکبر	مغل اعظم
اقبال	شاعر مشرق
امیر خسرو	طوطی ہند
مولوی عبدالحق	بابائے اردو
ابوالقاسم فضل حق	شیر بنگال

دستگیر خانم
بی۔اے سال دوم

(نظم)
اتحاد (کون ہندو کون مسلم)

کون ہندو کون مسلم؟
ہیں سب ایک ہی رب کے بندے
پھر کون ہندو کون مسلم؟

یہیں پر ہے خواجہ اجمیری کا قیام
یہیں پر ہے کرشن جنم بھومی
پھر کون ہندو کون مسلم؟

یہیں پر ہے محبوب الٰہی کا در
یہیں پر ہے رام کا راجیہ
پھر کون ہندو کون مسلم؟

یہیں پر اردو ایجاد ہوئی
یہیں پر ہندی نے پرورش پائی
پھر کون ہندو کون مسلم؟

یہیں پر میر کی غزل گوئی
یہیں پر کبیر کے دوہے
پھر کون ہندو کون مسلم؟

یہیں پر گنگا بہتی
یہی پر جمنا بہتی
پھر کون ہندو کون مسلم؟

یہیں پر چندر شیکھر آزاد شہید ہوئے
یہیں پر اشفاق اللہ خان شہید ہوئے
پھر کون ہندو کون مسلم؟

یہیں پر گاندھی جی نے اہنسا کی لڑائی لڑی
یہیں پر سرسید نے علی گڑھ تحریک چلائی
پھر کون ہندو کون مسلم؟

مسلم جاتے ہیں خواجہ اجمیری کی درگاہ پر
ہندو جاتے ہیں خواجہ اجمیری کی درگاہ پر
پھر کون ہندو کون مسلم؟

ہندی وار دو پر لڑنے والو
ذرا یاد کرو گاندھی کو
ذرا یاد کرو سرسید کو
پھر کون ہندو کون مسلم؟

دستگیر خانم کی ہے یہ التجا
نہ کوئی ہندو نہ کوئی مسلم
سب ہیں ایک ہی مٹی کے بنے ہوئے
سب کے نام ہیں بس الگ الگ کوئی رام تو کوئی رحیم
پھر کون ہندو کون مسلم؟

□□□

ھما انصاری
بی۔اے سال دوم

حقیقت

۱۔ موت سب سے بڑی حقیقت ہے جس کو ہر شخص بھلا بیٹھا ہے اور زندگی سب سے بڑا دھوکا ہے جس کے پیچھے ہر شخص بھاگ رہا ہے۔

۲۔ جب آپ کسی دوسرے کے درد کو مٹائیں گے تو تمہارا درد اللہ خود مٹا دے گا۔

۳۔ زندگی میں اگر برا وقت نہ آتا تو اپنوں میں چھپے غیر اور غیروں میں چھپے اپنے کبھی ظاہر نہ ہوتے۔

۴۔ جس کام میں جتنی جلدی کرو گے اتنی ہی دیر ہوگی، اچھے کام کے لئے صبر و تحمل سے کام لینا چاہئے۔

۵۔ بہت عظیم ہوتے ہیں وہ لوگ جو دوسروں کا درد اپنے دل میں سمو لیتے ہیں لیکن اپنے غم صرف اپنے اللہ کو ہی بتاتے ہیں۔

۶۔ بہترین انسان عمل سے پہچانا جاتا ہے، اچھی باتیں تو برے لوگ بھی کرتے ہیں۔

۷۔ کمزور لوگ موقع کی تلاش میں رہتے ہیں جبکہ باہمت انسان خود مواقع پیدا کرتے ہیں۔

۸۔ زندگی اپنے سہارے بسر کرنا سیکھو ورنہ غیروں کے کاندھوں پر جنازے ہی اٹھا کرتے ہیں۔

۹۔ جہاں اپنی بات کی قدر نہ ہو وہاں چپ رہنا بہتر ہے۔

۱۰۔ ظلم اور غرور کی سزا دنیا میں ضرور ملتی ہے۔

۱۱۔ معاف کرنا مضبوط لوگوں کی صفت ہوتی ہے۔

۱۲۔ غلط بات پر غصہ آجانا شرافت کی نشانی ہے، لیکن اسی غصے کو پی جانا مومن کی نشانی ہے۔

۱۳۔ آپ سیکھنا چاہیں تو آپ کی ہر غلطی آپ کو سبق دیتی ہے۔

۱۴۔ حسد اور گھمنڈ جب آدمی کے اندر داخل ہوتے ہیں تو وہ عقل کو باہر کر دیتے ہیں۔

۱۵۔ ماں باپ کی نافرمانی موت سے پہلے موت کا اعلان ہے۔

۱۶۔ وقت، دوست اور رشتے یہ مفت کی چیزیں ہیں مگر ان کی قیمت کا پتہ تب چلتا ہے جب یہ کہیں کھو جاتے ہیں۔

۱۷۔ شکست کھانا بری بات نہیں، شکست کھا کر ہمت ہار جانا بری بات ہے۔

۱۸۔ غرور ایک بیماری ہے جو کسی بھی، کم ظرف کو لگ سکتی ہے۔

۱۹۔ مشکلات سے نہ گھبراؤ کیوں کہ مشکلات ہی دراصل انسان کو انسان بناتی ہے۔

۲۰۔ لفظ کہنے والوں کا کچھ نہیں جاتا، لفظ سہنے والے کمال کرتے ہیں۔

□□□

ایمن افتخار
بی۔اے۔سال سوم

زبان کا اثر

یوں تو زبان انسانی جسم کا چھوٹا سا حصہ ہے مگر اس کے نقصانات بڑے بھیانک ہوتے ہیں جن سے بچ پانا بہت مشکل ہوتا ہے۔زبان سے انسان نہ صرف دوسروں کو تکلیف اور پریشانی میں ڈالتا ہے بلکہ خود بھی بہت سی مصیبتوں سے دوچار ہوتا ہے۔انسانی زندگی پر اس کا گہرا اثر ہوتا ہے۔اگر اس کا صحیح استعمال ہو تو انسان بلند کردار معلوم ہوتا ہے اگر اس کے استعمال میں بے احتیاطی ہو تو انسان کو اس کی بڑی قیمت چکانی پڑتی ہے اور اس کو لوگوں کے سامنے ذلیل ہونا پڑتا ہے ہے۔

جو شخص زبان کی مصیبت سے بچنا چاہتا ہے تو اسے سوچنا چاہئے کہ کسی سے گفتگو کرنے سے کیا اثر ہوگا ہمیشہ کچھ بولنے سے پہلے ایک بار سوچنا چاہئے ۔انسان اپنی زبان کی بے احتیاطی کی وجہ سے کئی بار بہت سے رازوں کو فاش کر دیتا ہے۔اس کا نتیجہ اکثر یہ ہوتا ہے کہ ہمیشہ اسے شرمندگی اٹھانی پڑتی ہے۔پھر اسے غیبت، چغلی اور کسی کی ٹوہ میں لگ کر ادھر کی بات ادھر کرنے کی عادت پڑ جاتی ہے۔جب اس کی یہ کیفیت لوگوں کے سامنے آجاتی ہے تو وہ کسی کو منھ دکھانے لائق نہیں رہ جاتا ہے اس طرح وہ لوگوں کی نظر سے گر جاتا ہے۔کہا جاتا ہے کہ اگر پریشانیوں سے بچنا ہے اور مقصد میں کامیابی حاصل کرنا ہے تو بہتر یہی ہے کہ زبان کا صحیح استعمال کیا جائے۔

زبان اللہ تعالیٰ کی عطا کی گئی ایک عظیم نعمت ہے جس نے اس کا صحیح اور ضرورت کے مطابق استعمال کیا وہ کامیاب ہو گیا اور جس نے اس کے استعمال میں بے احتیاطی کی تو شیطان اس پر حاوی ہو کر اسے اپنی مرضی کا غلام بنا لیتا ہے اور وہ اپنی زبان کے غلط استعمال کی وجہ سے جہنم کا حقدار ہو جاتا ہے۔اس لئے بہتر یہی ہے کہ انسان اپنی زبان کو ذکر الٰہی سے معطر رکھے اور زبان سے اچھی باتیں ہی نکالے تا کہ وہ اپنی شخصیت کے اچھے اثرات دوسروں پر چھوڑ سکے۔

□□□

سونی
بی۔اے۔سال دوم

حضور پاک حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے معجزات

۱۔ آپؐ کا سایہ زمین پر نہیں پڑتا تھا۔
۲۔ آپؐ پر کبھی مکھی نہیں بیٹھتی تھی۔
۳۔ آپؐ کو کبھی جمائی نہیں آتی تھی۔
۴۔ آپؐ جیسے آگے دیکھتے تھے ویسے ہی پیچھے دیکھتے تھے۔
۵۔ آپؐ جس جانور پر سوار ہوتے وہ کبھی بھی بدک کر نہ بھاگا۔
۶۔ آپؐ کے پسینے سے خوشبو آتی تھی۔
۷۔ آپؐ جس پانی میں لعاب دہن ڈال دیتے تھے وہ میٹھا ہو جاتا تھا۔

ڈاکٹر عارفہ بیگم
شعبۂ اردو

سچائی کی اہمیت

ہر مذہب میں سچ بولنے کی ہدایت اور تاکید کی گئی ہے۔اس لئے جو شخص جھوٹ بولتا ہے وہ اپنے مذہب کے خلاف کرتا ہے۔انسان جھوٹ بول کر تو کوئی بات انسان سے چھپا سکتا ہے مگر خدائے عالم الغیب سے کوئی بات پوشیدہ نہیں رہ سکتی۔

آج طالب علموں میں سچ کی بڑی کمی ہے۔عام طور پر دیکھا جاتا ہے کہ جب کوئی طالب علم کوئی غلطی کرتا ہے اور استاد اس سے باز پرس کرتا ہے تو وہ سزا کے ڈر سے انکار کر دیتا ہے۔

عزیزو! ہر حال میں سچ بولو ،خواہ بظاہر اس میں تکلیف یا نقصان اٹھانا پڑے۔سچائی کے ضمن میں حضرت شیخ عبدالقادر جیلانیؒ کا یہ واقعہ بہت مشہور رہا ہے کہ جب آپ چھوٹے تھے اور لڑکپن کی عمر میں جب حصول علم کے لئے بغداد جانے لگے تو ان کی ماں نے ایک کپڑے میں چالیس اشرفیاں سی دیں اور چلتے وقت ان کو یہ ہدایت کی کہ بیٹا ہمیشہ سچ بولنا۔ یہ ایک قافلہ کے ساتھ روانہ ہوئے جو بغداد جا رہا تھا۔ راستہ میں قافلہ کو ڈاکوؤں نے گھیر لیا اور قافلہ والوں کا سب مال واسباب لوٹ لیا۔ایک ڈاکو آپ کے پاس آیا اور پوچھا اے لڑکے بتا ترے پاس کیا ہے؟ آپ نے جواب دیا کہ میرے پاس چالیس اشرفیاں ہیں۔ڈاکو نے جب ڈھونڈا اور اشرفیاں اسے نہ ملی تو وہ سمجھا کہ لڑکا اس کے ساتھ مذاق کر رہا ہے چنانچہ وہ اس کو پکڑ کر اپنے سردار کے پاس لے گیا اور تمام واقعہ سنایا۔ پوری بات سن کر سردار لڑکے کے پاس گیا اور پوچھا کہ تیرے پاس کیا ہے؟ شیخ عبدالقادر جیلانیؒ نے سردار کو بھی وہی جواب دیا کہ میرے پاس چالیس اشرفیاں ہیں جو میرے کپڑے کے استر میں سلی ہوئی ہیں ڈاکو نے کپڑے کو ادھیڑا تو اشرفیاں نکل آئیں۔سردار نے آپ سے کہا کہ تو بڑا بیوقوف ہے اگر تو ہمیں نہ بتاتا تو اشرفیوں کا پتا ہمیں نہ چلتا۔ آپ نے جواب دیا کہ چلتے وقت میری ماں نے سچ بولنے کی تاکید کی تھی۔پھر بھلا میں اپنی ماں کا حکم کس طرح نہ مانتا۔ سردار لڑکے کی بات سن کر بہت متاثر ہوا اور کہا کہ یہ لڑکا اپنی ماں کا حکم مانتا ہے اور افسوس ہم اپنے پیدا کرنے والے کا حکم نہیں مانتے اور رات دن گناہ میں مبتلا رہتے ہیں۔اس سچ کا سردار پر یہ اثر ہوا کہ اس نے اپنے گناہ سے فوراً توبہ کر لیا اور لوٹ کا سارا مال قافلہ کو واپس کر دیا۔اور اس بات کا وعدہ کیا کہ وہ زندگی میں اب کوئی برا کام نہیں کرے گا ایک چھوٹے بچے کے سچ نے ایک انسان کی پوری زندگی کو بدل دیا۔

ہماری زندگی میں بہت سے واقعات رونما ہوتے رہتے ہیں اور ہم سچ کی اہمیت وافادیت کو جانتے ہوئے بھی غلط طریقے سے ان کی پردہ داری میں لگے رہتے ہیں۔ہمیں جھوٹ کے بھنور سے نکل کر سچائی کو اپنانا ہوگا۔کیونکہ سچائی نیکیوں کی جڑ ہے۔سچ نجات دیتا ہے اور جھوٹ انسان کو ہلاک کر دیتا ہے۔اس لئے ہمیں ہمیشہ سچائی کے راستوں کا انتخاب کرنا چاہئے۔تاکہ ہماری دین ودنیا دونوں سنور جائے۔

❑❑❑

URDU SECTION

सरोज लालजी मेहरोत्रा विज्ञान संकाय की मीटिंग करते हुए चेयरमैन डॉ. एस.के. सेठ एवं अन्य सम्मानित सदस्य

सारस्वत खत्री पाठशाला सोसायटी

253/179ए अतरसुइया रोड, इलाहाबाद - 211 003

फोन : 0532-2451367

E-mail : katripathshala@gmail.com

www.skpallahabad.com

Printed at : Rajiva Offset & Printers Pvt. Ltd. #9415340241